माघ माह, कृष्ण पक्ष 21 वर्ष, अंक 04 पृष्ठ 12 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 26 जनवरी 2022 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग
हं क्षं
परमात्म अनुभूति का सर्वोच्च मार्ग

गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

समाधि की अवस्था की अनुभूति ही गंणतत्र दिवस का वास्तविक समारोह है।

गणतंत्र दिवस की सच्ची व्याख्या क्रियायोग ध्यान की गहराई में स्पष्ट होती है।

क्रियायोग ध्यान में इनट्यूशन जागृत होने पर गणतंत्र दिवस में छुपा सही भाव अनुभव होने लगता है। गण का अभिप्राय समूह, तंत्र का अभिप्राय समूह से जुड़ी हुई शाश्वत् नियमावली तथा दिवस का अभिप्राय ज्ञान से है। जनसमूह को गण कहा गया है। वर्तमान में हम जिस जनसमूह के साथ हैं, ये जनसमूह किसी और रूप में अतीत में भी था और किसी अन्य रूप में भविष्य में भी रहेगा। जनसमूह से संबंधित इस शाश्वत नियमावली को तंत्र कहते हैं और इसका ज्ञान होना ही दिवस कहा जाता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इसी ज्ञान की अनुभूति कराया था। अर्जुन को समझाते हुए योगेश्वर श्रीकृष्ण ने स्पष्ट किया था कि हे अर्जुन, हम तुम और सभी कौरव पाण्डवगण पहले भी थे और आगे भी रहेंगे। इस तरह से हम सब सनातन हैं।

यह अनुभूति ही सच्चा ज्ञान है जिसे दिवस कहते हैं। स्पष्ट है कि गणतंत्र दिवस का अभिप्राय इस ज्ञान से जुड़ना कि हम सब सनातन हैं, पहले भी थे आज भी हैं और आगे भी रहेंगे।

सनातन ज्ञान की व्यापक अनुभूति से यह भी पता चलता है कि ज्ञान के पूर्ण रूप को तीन तरह से अनुभव करते हैं जिसे सृजन ब्रह्मा का ज्ञान, सुरक्षा विष्णु का ज्ञान, परिवर्तन का ज्ञान शिव का ज्ञान कहते हैं। इस ज्ञान की अनुभूति होते ही मनुष्य अनुभव करता है कि वह सनातन है और उसका स्वभाव सर्वज्ञ, सर्वव्यापी और परमानंद है।

गणतंत्र दिवस को सच्चे रूप में मनाने पर मनुष्य को अनुभव होता है सभी अवतारों, अज्ञानता से मुक्त ऋषियों व मुनियों ने एक ही शिक्षा दिया है कि केवल सत्य व अहिंसा का अस्तित्व है तथा असत्य, हिंसा, मृत्यु, मृत्युलोक की अनुभूति यह सब अज्ञानता के कारण है। अणु–परमाणु की उपस्थिति ही अविद्या है। सत्य व अहिंसा की अनुभूति में अणु परमाणु का अस्तित्व ज्ञानरूप होता है। सत्य व अहिंसा के हटते ही अणु–परमाणु मात्रा व द्रव्यमान के रूप में प्रकट हो जाते है।

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 322वां वर्ष है। कलयुग 1600 ई0 में बीत गया है ।

- स्वामी श्री योगी सत्यम्

खबर संक्षेप

अधिवक्ता के साथ तहसीलदार द्वारा केस दर्ज कराने को ले कर वकील और प्रधान संग लामबंद, आर पार लड़ाई की तैयारी

नृपेंद्र मिश्र एडवोकेट राजस्व अफ्सरो के सताए हुए

तहसील कोरांव में मोस्टपा का हुआ प्रदर्शन

कोरांव। इन दिनों तहसील कोरांव में अधिकारियों की मनमानी को ले कर किसान,अधिवक्ता,पत्रकार,ग्राम प्रधान संगठन विरोध में उतरने लगे हैं, और वकील के साथ मनमानी का विरोध करने पर न्यायालय जाने की तैयारी कर ली गई है। मोस्टपा ने तो तहसील परिसर में प्रदर्शन कर अधिकारियों की जम कर खिंचाई की, और ज्ञापन दिया। उल्लेखनीय है कि बार एसोशियेसन कोरांव के एक अधिवक्ता नृपेंद्र मिश्र एडवोकेट के साथ उनकी भूमि को लेकर अन्यायोचित कार्यवाही को ले कर विरोध करने पर दुर्व्यवहार किए तथा शांतिभंग में एक तरफा केस खीरी थाने में दर्ज कराए जाने का आरोप लगाया है। जिसे ले कर वकीलों ने एसडीएम तहसीलदार का जम कर विरोध किया, 24 जनवरी को और नारे बाजी भी की गई। इधर मोस्टपा ने तहसील के अफसरों कर्मियों द्वारा की जा रही मनमानी आदि को ले कर प्रदर्शन किया। उधर कई अधिवक्ताओं ने नृपेंद्र मिश्र एडवोकेट के मामले को लेकर तहसीलदार एसडीएम के खिलाफ लामबंदी शुरू की। भुक्त भोगी वकील मिश्र ने आरोप लगाया कि चार साल पूर्व तत्कालीन एसडीएम श्रीमती शिवानी सिंह के भी फैंसले का उल्लंघन किया गया। मंडी समिति की भूमि के लिए दिए गए रास्ते को सिविल कोर्ट के भी दिशा निर्देश का भी उल्लंघन बताया। और वकील के खिलाफ एक तरफा कार्यवाही एवं अपमानित किए जाने को ले कर सक्षम न्यायालय में वाद प्रस्तुत किए जाने की बात कही। चर्चा है कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली में मनमानी पर अंकुश न लगा कर आरोपियों को बचाए जाने, भू माफियाओं के खिलाफ जनता से लेकर भूमि प्रबंधक समितियों आदि द्वारा तक शिकायतोपरांत समुचित कार्यवाहियां न किए जाने, खुले आम जांच आदेश के नाम पर कथित रूप से धन उगाही किए जाने, प्रेस स्थाई समिति की कोई बैठक न किए जाने, पत्रकारों को तरजीह न दिए जाने आदि के कारण हर तबका किसान मजदूर असंतुष्ट दिख रहा है।

बीए की छात्रा की हत्या कर कुएं में फेंका शव

अखंड भारत संदेश

सामूहिक दुष्कर्म की आशंका, प्रेमी सहित 11 हिरासत में

हादसे के बाद मृतक के रोते बिलखते परिजन।

प्रयागराज। कर्नलगंज के बघाड़ा में खौफनाक वारदात में 18 वर्षीय बीए की छात्रा की हत्या कर शव कुएं में फेंक दिया गया। तीन दिन पहले वह संदिग्ध हाल में गायब हो गई थी। जिसके बाद परिजनों की तहरीर पर पुलिस अपहरण का केस दर्ज कर तलाश में जुटी थी।प्रेमी से पूछताछ में मिली जानकारी के आधार पर पुलिस ने आसपास के रहने वाले करीब 10 संदिग्धों को हिरासत में ले लिया। फिर उनसे मिली जानकारी के आधार पर सादियाबाद स्थित जंगल में सोमवार की रात पांच घंटे तक चले सर्च ऑपरेशन के बाद शव बरामद कर लिया।हत्या की वजह साफ नहीं है लेकिन प्रारंभिक जांच पड़ताल में यह बात सामने आई है कि छात्रा अपने प्रेमी से मिलने गई थी और इसी दौरान वहां पहुंचे चार युवकों ने उसे निशाना बना लिया। आशंका सामूहिक दुष्कर्म की भी है, लेकिन पुलिस अफसरों का कहना है कि पोस्टमार्टम के बाद ही कुछ स्पष्ट कहा जा सकेगा।

22 जनवरी की रात से थी गायब

मूल रूप से सरायममरेज की रहने वाली 18 वर्षीय छात्रा ईश्वर शरण कॉलेज में बीए द्वितीय वर्ष की पढ़ाई कर रही थी। वह बघाड़ा में स्थित गर्ल्स हॉस्टल में रहती थी। 22 जनवरी की रात 8.30 बजे वह दवा लेने जाने की बात कहकर हॉस्टल से निकली और फिर नहीं लौटी।उसका फोन भी बंद था। उसकी रूम पार्टनर ने 23 जनवरी की सुबह 12 बजे के करीब उसके परिजनों को इस बात की जानकारी फोन से दी। दिन भर तलाश के बाद भी कुछ पता नहीं चलने पर शाम को परिजनों ने कर्नलगंज थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई।

कुएं से बरामद हुआ बैग...

पुलिस ने बताया कि जिस कुएं से छात्रा का शव बरामद किया गया, उसी में उसका बैग भी पड़ा मिला। माना जा रहा है कि हत्यारों ने शव के साथ ही छात्रा का बैग भी कुएं में फेंक दिया था। बैग में मिली कॉपियों में लिखे नाम और कपड़ों से परिजनों ने छात्रा के शव की पहचान की। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि हत्या कैसे की गई। छात्रा के सिर में गंभीर चोट के निशान मिले हैं। पुलिस का कहना है कि अभी यह नहीं कहा जा सकता कि सिर में चोट की वजह हथियार से वार है या फिर ऊंचाई से गिरने की वजह से उसकी मौत हुई। पोस्टमार्टम के बाद ही मौत का कारण स्पष्ट हो सकेगा।

सामूहिक दुष्कर्म की भी जताई जा रही आशंका

प्रयागराज। परिस्थिति जन्य साक्ष्यों को देखते हुए आशंका जताई जा रही है कि छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म भी किया गया। दरअसल सूत्रों का कहना है कि प्रेमी ने पूछताछ में पुलिस को यह बात बताई है कि उन पर हमला करने वाले नशे में धुत लग रहे थे। उनसे जान बचाकर वह तो भाग निकला था लेकिन उसकी दोस्त नहीं भाग पाई। प्रेमी ने जिस स्थान पर झगड़े की बात बताई है, उससे करीब 200 मीटर दूर जंगल के भीतर स्थित कुएं में छात्रा की लाश मिली है। ऐसे में आशंका है कि हमलावर उसे खींचकर जंगल में ले गए और फिर सामूहिक दुष्कर्म के बाद उसकी हत्या कर दी।दुष्कर्म हुआ है या नहीं, इस बारे में पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही कुछ कहा जा सकता है। प्रेमी पुलिस की हिरासत में है और कुछ अन्य संदिग्धों को भी उठाया गया है। जांच पड़ताल की जा रही है।

-अजय कुमार, एसएसपी

प्रयागराज में शहरी सीमा में आए 1500 लोगों को मिलेगा शहरी पीएम आवास का लाभ

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शहरी सीमा में शामिल हुए 1500 गरीब परिवार को डूडा के तहत चुनाव बाद पीएम आवास शहरी की पहली किस्त ट्रांसफर की जाएगी। डूडा की ओर से इन गरीब परिवार को आवास देने के लिए सर्वे प्रकिया पूरी कर ली गई है।3500 से अधिक ऐसे गरीब परिवार है जिनका पीएम आवास के लिए ग्रामसभा में चयन हुआ था, लेकिन शहरी सीमा में आने से इनका नाम पीएम आवास ग्रामीण से काटा दिया गया था। अब इन सभी को डूडा के तहत पीएम आवास दिय जाएगा। पीएम आवास शहरी के तहत आवास बनाने के लिए 2.50 लाख रुपये मिलेगा। ग्रामीण क्षेत्र में पीएम आवास के लिए 1.20 लाख रुपये मिलता है। परियोजना अधिकारी वर्तिका सिंह ने बताया कि सीम विस्तार होने से 12 हजार से अधिक लोगों का पीएम आवास के लिए सर्वे किया गया है। इसमें से 1500 क चयन किया जा चुका है। अन्य लोगे का चयन चुनाव बाद होगा।

सूचना

मेरा हाई स्कूल वर्ष 2004 अनुक्रमांक 1326523 एवं इंटर मीडिएट वर्ष 2006 अनुक्रमांक 2100860 , अंक पत्र एवं प्रमाण पत्र वास्तव में खो गया है।

नाम -दिलीप कुमार सिंह पुत्र दधिबल सिंह
पता- गांव देवरी सेहरा पोस्ट अकोढा, करछना प्रयागराज ।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा राज्य विधिज्ञ परिषद उ. प्र. द्वारा जारी बार काउंसिल प्रदत्त प्रमाण पत्र जिसका रजिस्ट्रेशन नंम्बर UP05513/05, रजिस्ट्रेशन दिनांक 25–09–2005 वास्तव में खो गया है।
ज्ञानेन्द्र कुमार पुत्र महानारायण पता–रामगढ़ पोस्ट–डीहा (खाई) करछना, प्रयागराज

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर बच्चों को फल एवं मिष्ठान बांटा गया

सहसों। बालिकाएं देश व समाज की नव निर्माण में अहम भूमिका निभा रही हैं। हम सभी को उनका आदर एवं सम्मान करना चाहिए उनकी सुरक्षा , संस्कार , लालन-पालन एवं उनके अधिकारों को सम्मान पूर्वक दिलाना हम सबका कर्तव्य है। उक्त बातें राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर सोमवार को ग्राम सभा आटा में कांग्रेस पार्टी के पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद ने अध्यक्षता करते हुए कहा। उन्होंने राष्ट्रीय बालिका दिवस को मनाते हुए इस उपलक्ष में बच्चों को फल और मिष्ठान भी वितरण किया। इस अवसर पर मौके पर उपस्थित वरिष्ठ अधिवक्ता देवराज उपाध्याय ने कहा कि बालिकाओं के अधिकार उनके लिए शिक्षा उनका उन्नयन विकास कैसे संभव हो, उनका स्वास्थ्य सुंदर हो, सुरक्षित वातावरण प्रदान किया जा सके। इसके महत्व को बताया। उन्होंने कहा इसी दिन महिला सशक्तिकरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण दिन रहा। आज के ही दिन पहली बार तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी जी ने शपथ ग्रहण किया था । बालिकाओं को उनके स्वास्थ्य को कुपोषण से बचाना, बाल विवाह जैसी कुरीतियों से उनकी रक्षा करने की जरूरत है। एक दौर ऐसा भी था जब बच्चियों को जिंदा मार दिया जाता था लेकिन आज बेटियां प्रत्येक क्षेत्र में अपने कीर्तिमान का परचम लहरा रही हैं और दुनिया भर में अपना लोहा मनवा रही हैं। इस अवसर पर गोविंद सिंह, सोम्मारी देवी,सलीम टाइगर,संगीता देवी,हाफिज, मो.शफीक,नाज बानो,शिफा फातिमा,अर्शिया,शालिनी सिंह,सिमरन सिंह,रचना पाण्डेय,मो.साबिर,नीलू उपाध्याय,तहजीबुल हसन,बब्लू प्रधान आदि लोग उपस्थित रहे।

सप्ताह भर से करछना का भरहा गांव अँधेरे में, ग्रामीणो में आक्रोश

हफ्ते भर पहले दो ट्रांसफार्मर जल गये थे जिसकी शिकायत उपभोक्ताओं ने विभाग में की थी

करछना। बिजली विभाग की लापरवाही की बदौलत भरहा गांव में लगभग दस दिन से लोग अंधेरे में रहने को मजबूर हैं हफ्ते भर पहले दो ट्रांसफार्मर जल गए थे जिसकी शिकायत उपभोक्ताओं ने बिजली विभाग में की गई थी उसके बावजूद करछना पावर हाउस के जेई लगातार हिलाहवाली कर रहे हैं जिससे गांव में अंधेरा छाया हुआ है लगातार शिकायत के बाद भी ट्रांसफार्मर नहीं बदला जा रहा है गांव के लोगों का कहना है की इसकी शिकायत अधिकारियों से लेकर क्षेत्रीय विधायक उज्जवल रमण सिंह से भी की गई लेकिन अभी तक कोई भी व्यवस्था नही की गई जिससे गांव के लोगों में नाराजगी जताई जा रही है जबकि सरकार की तरफ से सरकारी सुविधा मुहैया कराने की बात की जाती है आखिर कब तक में बदला जायेग जला हुआ ट्रांसफार्मर ,को लेकर ग्रामीणो ने बिजली विभाग के अधिकारियों की लापरवाही के कारण लोगों मे नाराजगी हैं।

कार्यालय ग्राम पंचायत हर्रई विकास खण्ड करछना प्रयागराज

टेण्डर/कोटेशन

मनरेगा/चतुर्थ राज्य वित्त/14वां/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत ग्राम पंचायत हर्रई विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यो के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 20–12–2021 से दिनांक 25–12–2021 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत हर्रई में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 30–12–2021 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेन्डर/कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 30–12–2021 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यालय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी. एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्तें लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	अजय दूबे के घर से सुरेश गुप्ता के घर तक 120 मीटर इंटरलाकिंग कार्य	4.58 लाख	1 माह
2.	सरजू चमार के घर से लालता के घर तक इंटरलाकिंग (120 मीटर) निर्माण कार्य	4.97 लाख	1 माह
3.	सुभाष विश्वकर्मा के घर के सामने से तालब तक इंटरलाकिंग कार्य(80 मीटर)	307400	1 माह

विजय शंकर तिवारी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत हर्रई
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

पत्रांकः मेमो/ग्राम पंचायत विकास अधिकारी/ टेण्डर/कोटेशन/2021–22/ दिनांक

कमला सिंह
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत हर्रई
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

सरायममरेज पुलिस एवं बीएसएफ के जवानों ने किया फ्लैग मार्च

जंघई। विधानसभा चुनाव को शांतिपूर्वक संपन्न कराने के उद्देश्य से सरायममरेज थाना प्रभारी ने बीएसएफ के जवानों एवं सरायममरेज पुलिस के साथ क्षेत्र के जंघई, भेलखा, वारी, सिरसा, बंदीपट्टी के गली मोहल्लों आदि में फ्लैग मार्च किया। उप निरीक्षक राजेश सिंह ने बताया की विधानसभा चुनाव पूर्ण रूप से शांतिपूर्वक कराए जाएंगे। मतदान के समय किसी को भी गड़बड़ी करने नहीं दी जाएगी सभी मतदाता निडर होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करें।

विधानसभा बारा के भाजपाईयो ने बनाई चुनावी रणनीति

घूरपुर। चुनाव का शंखनाद हो चुका है भारतीय जनता पार्टी के देवतुल्य कार्यकर्ताओ को अपनी हनुमान जैसी शक्ति को याद कर एक बार पुनः त्रिदेव के कार्यो को मूर्त रूप देकर बारा मे कमल खिलाकर प्रदेश मे भाजपा की सरकार योगी के नेतृत्व में बनानी है। जिससे विकास कि गति निरंतर आगे बढ़ जन उत्थान के साथ देश के समृद्धशाली राज्य के तौर पर उत्तर प्रदेश स्थापित हो सके उक्त बातें मंगलवार को जीजीएम कान्वेंट स्कूल गौहनिया मे मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी विधानसभा बारा के प्रभारी राजेंद्र पांडेय ने कही और विगत कार्यो की समीक्षा करते हुए पदाधिकारियों संग आगामी रणनीति तैयार की। बैठक में जिला उपाध्यक्ष संतोष त्रिपाठी, जिला मंत्री कमलेश त्रिपाठी, जिला मंत्री प्रकाश शुक्ल प्रचंड, जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी, विधानसभा विस्तारक तोयश पांडेय, मंडल प्रभारी वेदेश दत्त पाण्डेय, रंगवली पटेल, मंडल अध्यक्ष जगत नारायण शुक्ल,शिव प्रसाद केसरवानी,अंजनी लाल,बंदना सिंह, कुलदीप सिंह पटेल, मंडल महामंत्री दिनेश प्रजापति आदि के साथ बारा विधान सभा के प्रमुख पदाधिकारी उपस्थित रहे।

करछना तहसील में मनाया गया मतदाता दिवस

करछना। मगलवार को तहसील सभागार में मतदाता दिवस मनाया गया जिसमे तहसीलदार रमेश चन्द्र पाण्डेय ने मतदाता दिवस के अवसर पर कहा कि सभी को मतदान करने का अधिकार है मतदान से बडा पुण्य कोई नही है क्योकि इससे हम देश और प्रदेश मे एक अच्छी सरकार चुनने के साथ ही स्वच्छ छवि के जन प्रतिनिधियो को चुनकर भेजकर राष्ट्र के उन्नत मे भागीदार बन सकते है इसलिए हमारा मत अमूल्य है जिसका उपयोग हम पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ अवश्य करे।इस मौके पर रजिस्टार कानूनगो राम सागर,राजस्व निरीक्षक पृथ्वीराज सिह,लेखपाल राजेन्द्र शुक्ला लालजी पाठक,सूर्यकात शुक्ला,दिनेश पाण्डेय,राजेन्द्र टिकैत,सुशील कुमार,बबलू आदि मौजूद रहे।

घर घर जाकर मतदाताओं को किया जागरूक

सहसों। राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर अपने अपने मताधिकार का प्रयोग मतदाता करें इसी परिप्रेक्ष्य में युवा डेवलपमेंट वेलफेयर सोसाइटी सहसों के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश केसरवानी ने मंगलवार को सम्मानित मतदाताओं से घर घर जाकर मतदान करने वाले युवाओं एवं बुजुर्गों, महिलाओं को मतदान करने के लिए जागरूक किया। इस अवसर पर उन्होंने सहसों, मीरापुर, भोपतपुर, इनायतपुर गांव में जाकर जागरूक करते हुए कहा अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें चुनाव में एक-एक वोट कीमती होता है। इसलिए मतदान जरूर करें और दूसरों को भी जागरूक करें सही प्रत्याशी का चयन करें मतदान के दिन आलस्य बिल्कुल ना करें अपने मताधिकार का अवश्य इस्तेमाल करें। इससे एक मजबूत और अच्छी सरकार बनेगी आप भी हम भी करेंगे अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन सभी का दायित्व है। इस अवसर पर शिव बाबू केसरवानी, डॉ प्रमोद गुप्ता, शेरू केसरवानी, अनिल मिश्रा, राघवेंद्र सिंह, राजू , विवेक, निर्देश गुप्ता आदि मौजूद रहे।

कार्यालय ग्राम पंचायत माही विकास खण्ड कौंधियारा, प्रयागराज

अल्पकालीन कोटेशन/निविदा सूचना

ग्राम पंचायत माही विकास खण्ड कौंधियारा में मनरेगा योजना अन्तर्गत इंटरलाकिंग सड़क एवं पक्की नाली निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री जैसे–इंटरलाकिंग ईंट, लाल ईंट, पत्थर गिट्टी, जी. एस.बी. बालू, सीमेन्ट, साईनबोर्ड आदि पंजीकृत फर्म से 08–01–2022 से 10–01–2022 तक सील बन्द निविदा अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 11–01–2022 को प्रातः 10 बजे उपस्थित फर्मो के समक्ष खोली जाएगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में निहित होगा। सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्लन के अनुसार होगा।कार्य का विवरण निम्नवत है।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1.	प्रेम शंकर के घर से 522 नम्बर तालाब तक पक्की नाली निर्माण कार्य	2 लाख	1 माह
2.	पारसनाथ के घर से श्रीराम के घर तक इंटरलाकिंग का कार्य	7 लाख	1 माह

राहुल सिंह
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत माही
वि. ख. कौंधियारा, प्रयागराज।

मनोज कुमार
(ग्राम विकास अधिकारी)
ग्राम पंचायत माही
वि. ख. कौंधियारा, प्रयागराज।

पत्रांकः मेमो/ग्राम पंचायत / टेण्डर/कोटेशन/ दिनांक

कार्यालय ग्राम पंचायत कुआँ विकास खण्ड कौंधियारा, प्रयागराज

अल्पकालीन कोटेशन/निविदा सूचना

ग्राम पंचायत कुआँ विकास खण्ड कौंधियारा में मनरेगा योजना अन्तर्गत पक्की नाली निर्माण एवं इंटरलाकिंग सड़क निर्माण में प्रयुक्त होने वाली सामग्री जैसे– इंटरलाकिंग ईंट, लाल ईंट, पत्थर, गिट्टी, जी.एस.बी. बालू, सीमेन्ट, साईनबोर्ड आदि पंजीकृत फर्म से 16–12–2021 से 18–12–2021 तक सील बन्द निविदा अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 19–12–2021 को प्रातः 10 बजे उपस्थित फर्मो के समक्ष खोली जाएगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में निहित होगा। सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्लन के अनुसार होगा।कार्य का विवरण निम्नवत है।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1.	राकेश से नल से लेकर तालाब तक पक्की नाली निर्माण कार्य	325970 (लाख)	1 माह
2.	सूर्य प्रकाश के घर से लेकर मिश्री लाल के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य	8.00 (लाख)	1 माह

दशरथ भारतीय
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत कुआँ
वि. ख. कौंधियारा, प्रयागराज।

मनोज कुमार
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत कुआँ
वि. ख. कौंधियारा, प्रयागराज।

पत्रांकः मेमो/ग्राम पंचायत / टेण्डर/कोटेशन/ दिनांक

कार्यालय ग्राम पंचायत बरांव करछना प्रयागराज

टेण्डर/कोटेशन

मनरेगा/चतुर्थ राज्य वित्त/14वां/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत ग्राम पंचायत बरांव विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यो के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 25–12–2021 से दिनांक 30–12–2021 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत बरांव में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 04–01–2022 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेन्डर/कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 04–01–2022 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यालय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्तें लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	पक्की सड़क से दिनेश शुक्ला के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य (122 मीटर)15वां वित्त/ राज्य वित्त से	390600	1 माह
2.	नारायन प्रसाद के घर से राम सजीवन के घर तक इंटरलाकिंग कार्य	3.95 लाख	1 माह

बजरंगी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत बरांव
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

अमित यादव
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत बरांव
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

माघ माह, कृष्ण पक्ष 21 वर्ष, अंक 04 पृष्ठ 12 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 26 जनवरी 2022 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

उत्तर प्रदेश में सियासी उठापटक

पूर्व केन्द्रीय मंत्री और कांग्रेस नेता आरपीएन सिंह भारतीय जनता पार्टी में शामिल

लखनऊ

उत्तर प्रदेश के साथ ही देश में कांग्रेस के बड़े नेता कुंवर आरपीएन सिंह ने मंलगवार को अपनी पार्टी को छोड़कर भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ले ली है। आरपीएन सिंह ने भाजपा में शामिल होने के बाद ट्वीट पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जेपी नड्डा तथा गृह मंत्री अमित शाह का आभार जताया है। भारतीय जनता पार्टी के मुख्यालय नई दिल्ली में आरपीएन सिंह को भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता दिलाई गई। उत्तर प्रदेश विधानसभा सभा चुनाव के प्रभारी केन्द्रीय मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के साथ सह प्रभारी केन्द्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर, केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, भाजपा उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष स्वतंत्रदेव सिंह, उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य व डा. दिनेश शर्मा तथा भाजपा मीडिया प्रकोष्ठ के प्रमुख राज्यसभा सदस्य अनिल बलूनी ने आरपीएन सिंह को भाजपा की सदस्यता दिलाई। उनके साथ कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता के साथ सहारनपुर में 30 वर्ष से कांग्रेस के जिलाध्यक्ष शशि मदान तथा कांग्रेस के प्रदेश सचिव नोएडा से विधानसभा चुनाव लड़े राजेन्द्र अवाना भी भाजपा में शामिल हो गए। इस अवसर पर आरपीएन सिंह ने कहा कि मैंने काफी लम्बे समय तक कांग्रेस की हर स्तर पर सेवा की, अपना समय दिया। जनता की सेवा करने के लिए जिस पार्टी में करीब 30 वर्ष तक रहा अब वो पार्टी वैसी नहीं रही जैसी पहले थी, इसी कारण उसको छोड़ कर भाजपा में आया हूं। भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने के बाद पूर्व केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री आरपीएन सिंह ने कहा कि यह मेरे लिए एक नई शुरूआत है। इसके लिए मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और मार्गदर्शन में राष्ट्र निर्माण में अपने योगदान के लिए तत्पर हूं। उन्होंने पीएम मोदी के साथ भाजपा के अध्यक्ष जेपी नड्डा तथा गृह मंत्री अमित शाह का आभार जताया है। उत्तर प्रदेश के साथ ही देश में कांग्रेस के बड़े नेता कुंवर आरपीएन सिंह ने कांग्रेस को छोड़कर भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ले ली है। आरपीएन सिंह ने भाजपा में शामिल होने के बाद ट्वीट पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जेपी नड्डा तथा गृह मंत्री अमित शाह का आभार जताया है। भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने के बाद पूर्व केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री आरपीएन सिंह ने कहा कि यह मेरे लिए एक नई शुरूआत है। इसके लिए मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और मार्गदर्शन में राष्ट्र निर्माण में अपने योगदान के लिए तत्पर हूं। उन्होंने पीएम मोदी के साथ भाजपा के अध्यक्ष जेपी नड्डा तथा गृह मंत्री अमित शाह का आभार जताया है। कुशीनगर में पडरौना के सैंथवार राजघराने के आरपीएन सिंह ने इससे पहले मंगलवार को दिन में कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से तत्काल प्रभाव से अपना इस्तीफा दिया था। उन्होंने अपना इस्तीफा पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी को प्रेषित कर दिया था। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस का बड़ा चेहरा और सोमवार को ही कांग्रेस का स्टार प्रचारक की सूची में शामिल पूर्व केन्द्रीय मंत्री आरपीएन सिंह अब भाजपा में शामिल हो गए हैं। माना जा रहा है कि भारतीय जनता पार्टी उनको उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में टिकट भी दे सकती है। जितिन प्रसाद तथा आरपीएन सिंह उत्तर प्रदेश में कांग्रेस का बड़ा और चर्चित चेहरा माने जाते थे। जितिन प्रसाद के कांग्रेस छोड़ने के बाद अब आरपीएन सिंह भी जितिन की तरह ही भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए हैं। केन्द्र की मनमोहन सिंह सरकार में मंत्री रहे कुशीनगर के शाही सैंथवार परिवार के आरपीएन सिंह को कांग्रेस ने सोमवार को उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में पहले चरण के मतदान के लिए 30 सदस्यीय स्टार प्रचारकों की सूची में शामिल किया।

कायर नहीं लड़ सकते हैं कांग्रेस की लड़ाई : सुप्रिया

नई दिल्ली

पूर्व केंद्रीय मंत्री कुंवर रतनजीत प्रताप सिंह (आरपीएन सिंह) मंगलवार को कांग्रेस पार्टी को छोड़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गए। इससे नाराज कांग्रेस पार्टी ने आरपीएन सिंह को कायर करार दिया है। कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने आज मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि कांग्रेस की लड़ाई कायर नहीं लड़ सकते हैं। शायद आरपीएन सिंह में मजबूती से खड़े रहने का साहस नहीं था इस लिए वह भाजपा में शामिल हुए हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी का कहना है कि कायर इस लड़ाई को लड़ नहीं सकते।

इस साल 384 लोगों को वीरता पुरस्कार

ओलंपिक गोल्ड जीतने वाले नीरज चोपड़ा को परम विशिष्ट सेवा मेडल

नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने मंगलवार को सशस्त्र सेना बल को दिए जाने वाले वीरता पुरस्कारों का एलान कर दिया। जारी की गई सूची के मुताबिक, इस बार 384 सैनिकों-जवानों को वीरता पुरस्कार दिए जाएंगे। इनमें 12 लोगों को शौर्य चक्र, 29 को परम विशिष्ट सेवा मेडल देने का एलान किया गया है। पिछले साल ओलंपिक गेम्स में भारत के लिए गोल्ड मेडल जीतने वाले राजपूताना राइफल्स के नीरज चोपड़ा का नाम भी परम विशिष्ट सेवा मेडल पाने वालों में शामिल है। इसके अलावा इस साल सैनिकों को 4 उत्तम युद्ध सेवा मेडल, 53 अति विशिष्ट सेवा मेडल, 13 युद्ध सेवा मेडल और विशिष्ट सेवा मेडल्स के तीन 'बार' भी दिए जाने हैं। गौरतलब है कि पहले ही किसी वीरता पुरस्कार से सम्मानित हो चुके सैनिकों को दोबारा यह पुरस्कार मेडल के तौर पर न देकर एक 'बार' के रूप में दिया जाता है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद मंगलवार शाम को 122 विशिष्ट सेवा मेडल्स, 81 सेना मेडल्स (वीरता), दो वायुसेना मेडल्स (वीरता), 40 सेना मेडल्स (ड्यूटी के प्रति समर्पण), आठ नाव सेना मेडल्स (ड्यूटी के प्रति समर्पण) और 14 वायुसेना मेडल्स (ड्यूटी के प्रति समर्पण) वितरित करेंगे।

समय पर कोरोना परीक्षण और टीकाकरण का डेटा भेजें राज्यः डॉ. मंडाविया

नई दिल्ली

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ मनसुख मंडाविया ने मंगलवार को नौ राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के साथ बैठक के दौरान उन्हें कोरोना जांच और टीकाकरण डेटा समय पर भेजने की सलाह दी है। उन्होंने यह भी कहा कि जिन राज्यों में कोरोना की जांच की संख्या कम हुई है, वहां परीक्षण को तेज किया जाना चाहिए।

कोरोना की स्थिति का आकलन करने के लिए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने मंगलवार को नौ राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के स्वास्थ्य मंत्रियों के साथ वीडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिये बैठक की।

32 साल बाद देश में सुस्त पड़ी पोलियो टीकाकरण की रफ्तार

नई दिल्ली

नरेंद्र मोदी सरकार ने कोविड-19 से बचाव के लिए 15-18 साल के किशोरों को कोवॉक्सिन के टीके देने की पेशकश की है। लेकिन कोरोना महामारी के चलते देश में गैर-कोविड टीकाकरण अभियान की रफ्तार थम सी गई है। यूनिसेफ द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक 2020 में देश में टीकाकरण अभियान बुरी तरह प्रभावित हुआ क्योंकि सभी प्रमुख टीकाकरण अभियान का कवरेज काफी कम रहा। देश में टीकाकरण कार्यक्रम के प्रभावित होने की प्रमुख वजहों में ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्यकर्मियों की कमी है। वही भारत गैर कोविड टीके लगाने के मामले में पड़ोसी देश पाकिस्तान, बांग्लादेश और श्रीलंका से भी पिछड़ा हुआ नजर आ रहा है। भारत में सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम (यूआईपी) की शुरूआत 1980 के दशक में हुई थी। इस कार्यक्रम के तहत देश में नवजात शिशुओं और बच्चों को सात बीमारियों, डिप्थीरिया, काली खांसी, टिटनेस, पोलियो, खसरा, बच्चों को होने वाले तपेदिक का गंभीर रूप, हेपेटाइटिस बी, हेमोफिलस इन्फ्लूएंजा टाइप बी (एचआईबी) और डायरिया से बचाने के लिए टीके लगाए जाते हैं।

1991 के बाद पहली बार पोलियो के टीके में आई कमीः यूनिसेफ के आंकड़ों बताते हैं कि 2019 की तुलना में 2020 में 12 से 23 महीने के बच्चों को दी जाने वाली पोलियो टीके की तीसरी खुराक में पांच फीसदी की कमी आई है। यह 1991 के बाद से खुराक में सबसे अधिक कमी है। करीब 85 फीसदी के कुल कवरेज के लिहाज से देश का पोलियो टीकाकरण 2014 के स्तर पर चला गया। इसी तरह डीपीटी (डिप्थीरिया, काली खांसी, टिटनेस) के मामले में 12-23 महीने के बच्चों को दी जाने वाली पहली खुराक में सात फीसदी की कमी आई है। यह भी 1991 के बाद से सबसे अधिक गिरावट है। आखिरी बार डीपीटी टीके में कमी (एक फीसदी की) 2006 में दर्ज की गई थी। पिछले साल की तुलना में तपेदिक (टीबी) के टीके भी सात फीसदी कम ही लगे। आखिरी दफा 2007 में यह टीका कम लगा था।

स्टार प्रचारक की सूची में विधायक राजकुमार का नाम शामिल, हर्ष

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपना दल एस ने उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर जिले के प्रतापगढ़ सदर से जन-जन के प्रिय नेता मिलनसार विधायक राजकुमार पाल को स्टार चुनाव प्रचारक बनाये जाने से अपना दल एस पार्टी के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा मंगलवार को जारी स्टार प्रचारकों की सूची में राष्ट्रीय अध्यक्ष केंद्रीय राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल ने प्रथम एवं द्वितीय चरण के चुनाव विधानसभा के लिए जारी 15 लोगों की सूची में प्रतापगढ़ सदर विधायक गरीब, असहायों व कमेरा समाज की आवाज बुलंद करने वाले के नेता राजकुमार पाल का नाम शामिल होने पर यहां पर कार्यकर्ता खुशी से गदगद दिखे। यह जानकारी अपना दल एस विधि मंच के प्रदेश सदस्य परमानंद मिश्र ने देते हुए बताया कि विधायक राजकुमार पाल का नाम स्टार प्रचारक की सूची में शामिल किए जाने से प्रतापगढ़ व सदर के अपना दल एस के कार्यकताओं का मान बढ़ा है। इस मौके पर विधायक प्रतिनिधि अशोक पाल, कुंदन पाल, राम बहादुर पाल, आशीष, सोनू, विक्की पांडेय, ओम प्रकाश वर्मा,ओम प्रकाश वर्मा, राम बहादुर पाल, निसार अहमद, मोहम्मद मुकीम, अदनान, सफीक, मुन्ना पाल, चंदन, जगदीश वर्मा, आलोक सिंह,संदीप कुशवाहा, सुभाष पाल, राज बहादुर यादव, राकेश सिंह, आदि रहे।

मंगलवार को धूप निकलने से लोगों को मिली राहत

प्रतापगढ़। मंगलवार को सूर्य देवता की ऐसा कृपा हुई, मानो फरवरी का महीना आ गया है। मंगलवार की सुबह साढे.सात बजे के बाद धूप निकल आई थी। सुबह धूप निकलने पर भी वातावरण ठंडा महसूस हुआ लेकिन दिन में तेज धूप ने धीरे-धीरे तापमान बढ़ाया तो बाजारों में रौनक दिखने लगी। लोग खरीदारी करने के लिये आज बेधड़क निकले। बता दें कि विगत एक सप्ताह से अधिक समय से कड़ाके की ठंड, बादल, बूंदाबांदी से लोग परेशान हो गये थे। सोमवार को दिन भर बादल छाये रहे।

लोकतंत्र के महापर्व में मतदाता दें अपना योगदानः डीएम

जिलाधिकारी ने दिलाई मतदाता जागरुकता की शपथ, बच्चों द्वारा बनाई गई पेन्टिंग व रंगोली को डीएम को सौंपा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शहर के राजकीय इंटर कालेज में मतदाता दिवस के उपलक्ष्य में जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने मतदाता जागरुकता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि हमें अपने वोट का मूल्य समझना होगा। जिले में शत-प्रतिशत मतदान का लक्ष्य बनाकर हम लोकतंत्र के इस महापर्व में अपना योगदान दें। जिले में मतदान का प्रतिशत बढे, यही हम सबका प्रयास होना चाहिये। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं ने मतदाता जागरुकता की पेन्टिंग, रंगोली, मेंहदी बनाकर लोगों को उत्साहित किया। संत अंथोनी इंटर कालेज के कक्षा-6 के छात्र मोहम्मद फहद अनीस ने मतदाता जागरुकता के लिये अपने हाथों से बनाई पेन्टिंग जिलाधिकारी को सौंपा। मतदाता दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्कूल, कालेजों के प्रधानाचार्य के अलावा एडीएम सुनील शुक्ला, एसडीएम सदर, जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदानंद आदि ने मतदाता जागरुकता में योगदान दिया।

मतदाता जागरुकता कार्यक्रम में छात्राओं के बीच जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल।

महाविद्यालय में मनाया गया राष्ट्रीय मतदाता दिवस का कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। मदन मोहन मालवीय पी जी कालेज कालाकांकर में मंगलवार को आजादी के अमृत महोत्सव के अनुक्रम में राष्ट्रीय मतदाता दिवस का आयोजन एक बेविनार के माध्यम से संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि युवराज भुवन्यू सिंह अध्यक्ष प्रशासकीय समिति, कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ घनश्याम यादव प्रबंधक राजभवन, मुख्य वक्ता प्रो बृजेन्द्र सिंह प्राचार्य महात्मा गांधी पी जी कालेज फतेहपुर तथा संरक्षक प्रो शिवम श्रीवास्तव प्राचार्य एम एम पी जी कालेज कालाकांकर रहे। मुख्य वक्ता प्रो बृजेन्द्र ने लोकतंत्र में मतदान विषय पर अपना बहुआयामी उद्बोधन प्रस्तुत किया तथा मतदान की आवश्यकता को भी उद्घाटित किया। अंत में महाविद्यालय के प्राचार्य ने मतदान हेतु शपथ ग्रहण कराया। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी सम्मानित शिक्षक गण एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति सराहनीय रही। कार्यक्रम का संचालन संयोजिका डॉ ज्योति गुप्ता ने किया।

जगह जगह लिया गया मतदाता जागरूकता का संकल्प

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। मतदाता जागरूकता दिवस पर सरकारी संस्थानों मे मतदाता जागरूकता का संकल्प लिया गया। तहसील सभागार मे एसडीएम की अध्यक्षता मे राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर अधिकारियों तथा कर्मचारियों व अधिवक्ताओं ने सामूहिक रूप से मताधिकार के शत प्रतिशत प्रयोग का संकल्प लिया। अध्यक्षता करते हुए एसडीएम ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह ने कहा कि कोरोना को देखते हुए मतदाताओं को मतदान के दिन सतर्कता बरतनी होगी। उन्होने मतदान को लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा और अहम मुददा ठहराया। अध्यक्षता संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष राममोहन सिंह व संचालन लेखपाल संघ के अध्यक्ष रामचंद्र त्रिपाठी ने किया। समारोह का संयोजन तहसीलदार जावेद अंसारी व नायब तहसीलदार सुप्रिया चतुर्वेदी ने किया। कार्यक्रम मे पूर्व अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल, उपाध्यक्ष संतोष पाण्डेय, महामंत्री प्रवीण यादव, पूर्व अध्यक्ष अनिल महेश, पूर्व अध्यक्ष विकास मिश्र, शैलेन्द्र सिंह, विनोद मिश्र, शैलेन्द्र शुक्ल, सुजीत त्रिपाठी, मो. असलम, रामलखन शर्मा, रामबिहारी मिश्र आदि ने विचार व्यक्त किये। वहीं कोतवाली मुख्यालय पर कोतवाल कमलेश पाल के संयोजन मे पुलिसकर्मियों ने राष्ट्रीय मतदान दिवस पर सामूहिक संकल्प ग्रहण किया। शिक्षण संस्थानो मे भी शिक्षकों व कर्मचारियों को मतदान के प्रति संकल्प ग्रहण करते देखा गया।

सभासद के आकस्मिक निधन पर अधिकारियों ने जताया गहरा शोक

पूर्व विधायक ने फोन पर परिवार के प्रति जताई संवेदना

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका के दहिलामऊ वार्ड के सभासद श्रीनाथ यादव (55) के आकस्मिक निधन पर नगर पालिका की अध्यक्षा, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा सभासदों ने गहरा शोक जताया गया। बताया जाता है कि श्रीनाथ यादव पिछले 15 दिनों से बीमार चल रहे थे। उनका इलाज पहले जिला अस्पताल में हुआ, फिर प्रयागराज रेफर कर दिये गये। मंगलवार की भोर में उनका दुखद अंत हो गया।

अस्पताल से उनका शव दहिलामऊ स्थित उनके आवास पर लाया गया तो बड़ी संख्या में

नगर पालिका कार्यालय में आयोजित शोक सभा में ईओ मुदित सिंह व अन्य।

अधिकारी, सभासद, क्षेत्रीय लोग एकत्र हो गये। उनके आवास पर पहुंचने वालों में नगर पालिका के ईओ मुदित सिंह, सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, आरआई लाल बहादुर सिंह, प्रशांत सिंह के अलावा सभासदों में ज्ञानेश मिश्रा, अनिल सिंह, सिद्धार्थ, धीरज, कासिम बाबा ने उनके आवास पर जाकर अश्वपूरित नैनों से श्रद्धांजलि अर्पित की। नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह ने भी श्रीनाथ के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। पूर्व विधायक हरिप्रताप सिंह जो इन दिनों बाहर हैं, उन्होंने फोन पर श्रीनाथ यादव के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए का कि इस संकट की घड़ी में पूरी नगर पालिका उनके परिवार के साथ खड़ी रहेगी। नगर पालिका परिसर में भी एक शोक सभा का आयोजन अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह की अध्यक्षता में किया गया जिसमें अधिकारियों, कर्मचारियों तथा सभासदों ने शोक जताया।

घर से लापता युवक का दूसरे दिन दफनाया मिला शव

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। रविवार को घर से लापता विक्षिप्त युवक की रहस्मयी मौत के बाद शव को गाँव के ही जंगल में दफन करना सवालिया निशान खड़ा करता है।शिनाख्त लगने पर परिजनों ने ग्रामीणों की मदद से बाहर निकाला। सूचना पर पहुँची पुलिस ने शव का पंचनामा कर पीएम के लिए भेज दिया। मौत को लेकर लोगों के बीच रहस्य बना हुआ।

लालगंज कोतवाली क्षेत्र के कलापुर निवासी रामभजन का बेटा लाल बहादुर (22) मानसिक रूप से विक्षिप्त रहता था। रविवार की देर रात तक लाल बहादुर के घर वापस न लौटने पर परिजनों ने ढूँढने का प्रयास किया लेकिन उसका सुराग नहीं लगा। दूसरे दिन सोमवार को गांव स्थित जंगल में शौच के लिए गए ग्रामीणों ने युवक का स्वेटर देखा। उसी के पास ताजी मिट्टी दिखाई दी। ग्रामीणों ने परिजनों को जानकारी दी। परिजनों ने ग्रामीणों की मदद से मिट्टी को हटाया तो युवक का शव मिला। परिजनों की सूचना पर पहुँची पुलिस ने शव का पंचनामा कर पीएम के लिए भेज दिया। मामला जो भी हो लेकिन शव का दफन होना ही मौत को रहस्मयी बना दिया है। फिलहाल गाँव में मौत को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं। आखिर विक्षिप्त को कोई क्यो मारेगा। उधर पुलिस का कहना है कि पीएम रिपोर्ट के बाद ही कुछ कहा जा सकता है।

सत्संग से जीवन मे लाया जा सकता है सकारात्मक बदलाव

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। सरस संगीतमय सामूहिक श्रीमद् भागवत कथा के तीसरे दिन मौजूद श्रद्धालुओं को श्रीमद् भागवत कथा का पाठ करते हुए वृंदावन धाम से पधारी कथा व्यास पंडित गरिमा तिवारी ने मौजूद श्रद्धालुओं को बताया कि व्यक्ति को अपने जीवन में क्रोध लोभ मोह ईर्ष्या और संग्रह आदि का त्याग कर विवेक के साथ श्रेष्ठ कर्म करना चाहिए। वैराग्य मानव को ज्ञानी बनाता है , सत्संग में वह शक्ति है जो व्यक्ति के जीवन को बदल सकती है सती चरित्र के प्रसंग सुनाते हुए उन्होंने बताया कि भगवान शिव की बात को नहीं मानने पर सती के पिता के घर जाने से अपमानित होने के कारण स्वयं को अग्नि में स्वाहा होना पड़ा था उन्होंने कहा ध्रुव की सौतेली मां सुरुचि के द्वारा अपमानित होने पर भी उसकी मां सुरुचि ने धैर्य नही खोया, जिससे एक बहुत बड़ा संकट टल गया । परिवार को बचाए रखने के लिए धैर्य संयम की नितांत आवश्यकता रहती है श्री हरि कथा सुनाते हुए बताया कि भक्ति बचपन में ही करने की प्रेरणा देनी चाहिए क्योंकि बचपन मिट्टी की तरह होता है उसे जैसा चाहे उसे वैसा पात्र बनाया जा सकता है।

कथा वाचन के समय क्षेत्र के कई सम्मानित गणमान्य लोग उपस्थित रहे कार्यक्रम के आयोजक राकेश पांडे ने बताया कि क्षेत्र के लोगों में धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में ज्ञान धार्मिक चेतना के लिए कार्यक्रम कराया जा रहा है।

अन्तर्जनपदीय चोर गिरोह का पदार्फाश, चार शातिर चोर गिरफ्तार

मोबाइल फोन, मोटरसाइकिल, तमंचा व चार पहिया टवेरा बरामद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन में आगामी विधानसभा चुनाव 2022 को निष्पक्ष व शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराए जाने के दृष्टिगत जनपद पुलिस द्वारा निरंतर अभियान चलाकर अपराध/अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में थाना हथिगवां पुलिस द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के जहानाबाद पुल के पास से एक व्यक्ति हिमान्शु यादव पुत्र अशोक कुमार यादव नि0 दलापुर थाना हथिगवां जनपद प्रतापगढ़ को चोरी की एक अदद मोटर साइकिल के साथ गिरफ्तार किया गया।

गिरफ्तार अभियुक्त की निशानदेही पर थानाक्षेत्र हथिगवां के ही भैरोबाबा स्थान के पास से एक अदद चार पहिया टवेरा वाहन से इसके तीन अन्य साथियों को गिरफ्तार किया गया तथा अभियुक्तो के पास से व उक्त चार पहिया वाहन में से उपरोक्त बरामदगी की गई।

गिरफ्तार अभियुक्तों में हमान्शु यादव पुत्र अशोक कुमार यादव नि0 दलापुर थाना हथिगवां, रोहित पाल पुत्र राजेश कुमार पाल निवासी खिदिरपुर थाना हथिगवां, ननका यादव उर्फ रामसिंह पुत्र श्रीकृष्ण यादव निवासी बिहरिया थाना हथिगवां व अभिषेक यादव उर्फ रिंकू पुत्र नन्दलाल यादव निवासी बेलहा थाना नवाबगंज जनपद प्रयागराज शामिल रहे। इनके पास से 01 अदद तमंचा देशी 315 बोर व 01 अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर, 01 अदद चोरी की स्पलेण्डर मोटर साइकिल, 24 अदद मोबाइल, 34 नग नये कपडे, 02 अदद प्रिंटर, 01 अदद चार पहिया टवेरा वाहन नं0 यूपी 32 सीजेड 2208 बरामद हुआ। पुलिस द्वारा की गई पूछताछ में गिरफ्तार अभियुक्तों द्वारा उपरोक्त बरामदगी के सम्बन्ध में बताया गया कि हमारे पास से जो मोबाइल फोन बरामद हुए हैं उसे हम लोगों ने पिछले हफ्ते नवाबगंज चौराहे (थानाक्षेत्र नवाबगंज जनपद प्रयागराज) पर स्थित आर0के0 टेलीकाम दुकान से चोरी किये थे, जिसमें हम लोगों के साथ हमारे 02 अन्य साथी भी सम्मिलित थे। बरामद प्रिन्टर के सम्बन्ध में अभियुक्तों द्वारा बताया गया कि इसे भी हम लोगों ने दो हफ्ते पहले ही किलहनापुर में जनसेवा केन्द्र से चोरी किये थे। बरामद कपड़ों के सम्बन्ध में अभियुक्तों द्वारा बताया गया कि इसे हम लोगों ने 8-10 पहले रेरूवा चौराहे (थानाक्षेत्र नवाबगंज जनपद प्रयागराज) के पास स्थित कपड़े की दुकान से चोरी किये थे। उधर पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल द्वारा उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी में सम्मिलित पुलिस टीम को 15 हजार रुपए के पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है। पुलिस टीम में थानाध्यक्ष श्री संतोष कुमार सिंह, उ0नि0 श्री रोहित कुमार, उ0नि0 श्री रमिल कुमार, हे0का0 भानु प्रताप सिंह, हे0का0 यशवंत सिंह राठौर, हे0का0 शिवलखन यादव, का0 सौरभ बघेल, का0 जावेद अहमद, का0 आशीष गौड़ व का0 विजय कुमार थाना हथिगवां शामिल रहे।

अदूरदर्शी अर्थव्यवस्था के चलते मंहगाई में लगातार बढ़ोत्तरी चिन्ताजनकः प्रमोद तिवारी

सीडब्ल्यूसी मेंबर ने सेंसेक्स मे गिरावट को बताया चिन्ताजनक

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी ने ब्याज दरों मे बढोत्तरी के चलते मंहगाई के और अधिक खतरनाक संदेश को चिन्ताजनक करार दिया है। सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने सीधे कहा कि मोदी सरकार की अदूरदर्शी अर्थव्यवस्था के चलते लगातार सेंसेक्स मे गिरावट व बैंक ब्याज दरों मे बढ़ोत्तरी आम

प्रमोद तिवारी।

आदमी की साधारण आय के लिए और चिन्ताजनक दिखने लगी है।

मंगलवार को रामपुरखास के एक दिवसीय दौरे पर यहां पहुंचे श्री तिवारी ने मीडिया से रूबरू होते हुए कहा कि हालिया कई सर्वे रिर्पोटों मे इस बात का स्पष्ट संकेत है कि कोरोना के चलते आम आदमी की आय मे घटोत्तरी बढेगी। वहीं वरिष्ठ कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी ने आश्चर्य जताया कि सर्वे रिर्पोट तो आम आदमी की आय में तिरपन प्रतिशत घटोत्तरी दर्शा रही है जबकि इसके विपरीत यही सर्वे रिर्पोटें पूंजीपतियों की आमदनी मे बीस प्रतिशत बढोत्तरी का दावा ठोंक रही है। कांग्रेस वर्किग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा कि कोरोना से फिर लोग परेशान तथा निराश दिख रहे है। बकौल प्रमोद तिवारी इसके बावजूद मोदी सरकार कोरोना के ओमीक्रॉन संकट से निपटने के चिकित्सीय प्रबन्धन की जगह यूपी मे येन केन प्रकारेण सत्ता मे वापसी का ही तानाबाना बुननें मे परेशान है। इस दौरान प्रमोद तिवारी ने देर शाम अझारा स्थित भागवत दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय मे केडी मिश्र व समाजसेवी प्रकाशचंद्र मिश्र के संयोजन मे आयोजित कार्यक्रम मे भी शामिल हुये। इस मौके पर प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, प्रमुख अमित प्रताप सिंह, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, राममिलन तिवारी, रामचन्द्र तिवारी, पप्पू तिवारी, ददन सिंह, सत्येन्द्र सिंह आदि रहे।

वांछित अभियुक्त को पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रतापगढ़। थाना कन्धई से प्रभारी निरीक्षक श्री सत्येन्द्र सिंह मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थानाक्षेत्र के इटवा बाजार से थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0 122/21 धारा 147, 148, 149, 395, 397, 332, 353, 504, 506, 427, 336, 307, 412, 34 भादवि, 7 सीएलए एक्ट व धारा 131, 132(3), 135(क) लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम से सम्बन्धित एक वांछित अभियुक्त बसन्तलाल उर्फ बसन्त कुमार पुत्र मोतीलाल हरिजन नि0 कहेनिया उतरास थाना कन्धई जनपद प्रतापगढ़ को गिरफ्तार किया गया।

रामलीला अंडरपास का हुआ विस्तार, रखे गये गर्डर

शंटिंग नेक के लिए जरूरी था फैलाव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। ट्रैक दोहरीकरण के रास्ते में ट्रेनों की शंटिंग आसान करने के लिये रामलीला मैदान के अंडरपास का मंगलवार को विस्तार किया गया। इसके लिए दो भारी भरकम लोहे के गर्डर रखे गये है। इस स्थान को शंटिंग नेक कहा जायेगा। दोहरीकरण के साथ प्रतापगढ़ रेल यार्ड की रिमॉडलिंग भी प्रगति पर है। नई वाशिंग लाइन का विस्तार भी हो रहा है। जो जेल रोड फाटक तक कवर करेगी। इस कार्य में ट्रेनों की शंटिंग का कार्य महत्वपूर्ण होगा। जो ट्रेनों की टाइमिंग के लिए बहुत ही आवश्यक है। शंटिंग का कार्य न प्रभावित होने पाये इसके लिए रामलीला मैदान के पास एक अलग रेलवे लाइन बनाई गई है। लेकिन आगे अंडरपास पर जगह नहीं बची। जो इस लाइन को रास्ता देती। लिहाज अंडरपास का विस्तार करना पड़ा। गर्डर लांचिंग की प्रक्रिया को सम्पन्न करा रहे रेल निर्माण निगम लखनऊ के अधीक्षण अभियंता राकेश सैनी ने बताया कि शंटिंग नेक बनाया गया है। इससे ट्रेनों की शंटिंग का कार्य और आसान हो जायेगा। मंगलवार को गर्डर रखा गया।

रामलीला अंडरपास पर रखे जाते गर्डर।

व्यापारी पुत्री के आकस्मिक निधन पर शोक, विभिन्न संगठनों ने जताया दुख

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर के बाजार खास मे व्यापारी की पुत्री के आकस्मिक निधन पर मंगलवार को बाजार मे शोक छा गया। बाजार खास मे आकस्मिक मौत की इस घटना से व्यापारियों ने अपने प्रतिष्ठान बंद कर दिये। व्यापारी जगदीश कौशल की पुत्री निकिता 18 घर मे मौजूद थी। अचानक उसकी तबीयत खराब हो गयी। परिजन आननफानन मे उसे अस्पताल ले गये। वहां डाक्टरो ने निकिता को मृत घोषित कर दिया।

वेल्ड ट्रैक खतरनाक, नई लगाने का फरमान

प्रतापगढ़ से अंतू रेलखंड के बीच बदली जानी है दो दर्जन लाइन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जोड़कर (वेल्ड ट्रैक) बनी रेल लाइन से हादसे की संभावना को देखते हुये मंडलीय रेल प्रशासन ने प्रतापगढ़ रेल खंड की दो दर्जन से अधिक पुरानी रेल लाइन को बदलकर उनके स्थान पर नई लगाने का फरमान जारी किया है। जिस पर अमल की तैयारी चल रही है।

दरअसल, रेलवे ट्रैक के इन्फ्रास्ट्रक्चर में काफी अमूल चूल परिवर्तन हुये हैं। लेकिन अभी भी कुछ जगहों पर पुरानी और वेल्डिंग की गई पटरियों पर ट्रेनों को दौड़ाने का काम किया जा रहा है। लेकिन अब इनको भी बदलने का काम किया जा रहा है। रेल के अधिकारी बताते हैं कि ट्रेनों की संख्या बढ़ रही है। जिससे लोड भी बढ़ रहा है। ट्रेनें तेज गति से चलने वाली हैं। इन सब चीजों को ध्यान में रखते हुये। सुरक्षा के लिहाज से वेल्ड पटरियों को बदलना आवश्यक हो गया है। जिससे कि भविष्य में कोई रेल हादसा न होने पाये।

हालांकि वेल्ड ट्रेनों की लाइफ भी पंद्रह साल से कम नहीं होती है। अधिकारियों का मानना है कि प्रतापगढ़ से अंतू रेल खंड के बीच ऐसी दो दर्जन से अधिक पटरियां हैं। जिनका वेल्ड का कार्यकाल पूरा हो चुका है। इनको बदलने का आदेश आया है। पुराने ट्रैक से ट्रेनों स्पीड 80, 90 ही रहेगी। जबकि अब सौ के ऊपर की गति से चल रहीं है। नाम न छापने की शर्त पर एक अधिकारी ने बताया है कि आदेश के तीन महीने के भीतर नई रेलवे लाइन डालने का दबाव है। आदेश कुछ दिन पहले ही आया है। जिस पर अमल शुरू कर दिया गया है।

तमंचे समेत धराया आरोपी

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने वांछित आरोपी को तमंचे व कारतूस के साथ धर दबोचा। रानीगंज कैथौला चैकी इंचार्ज विनीत उपाध्याय मंगलवार को वाहन चेकिंग अभियान मे निकले थे। अगई मोड पर मुखबिरी सूचना पर पुलिस ने पडोसी जिले रायबरेली के थाना जगतपुर निवासी लकी उर्फ मनीष प्रताप सिंह पुत्र हरिमंगल को धर दबोचा। आरोपी की तलाशी लेने पर पुलिस ने उसके पास से एक तमंचा तथा दो कारतूस बरामद किया। पुलिस ने बताया कि आरोपी लकी रानीगंज कैथौला बाजार मे जेल गया आरोपी विपुल सिंह के साथ राज मोबाइल शॉप मे रंगदारी को लेकर तोडफोड की घटना मे सितंबर माह से वांछित चल रहा था।

खबर संक्षेप

12 वे राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर दिलाई गई शपथ

कौशाम्बी। जिला स्काउट कार्यालय उत्तर प्रदेश भारत स्काउट और गाइड श्री दुर्गा देवी इंटर कॉलेज ओसा मंझनपुर में 12 वे राष्ट्रीय मतदाता दिवस शपथ ग्रहण कार्यक्रम के रूप में कोविड नियमों का पालन करते हुए सभी स्काउट्स और गाइड्स को अपने अपने क्षेत्र में मतदाताओं को जागरूक करने हेतु जिला संगठन कमिश्नर श्याम बाबू यादव द्वारा शपथ दिलाया गया जिसमे स्काउट मास्टर रामदास, मनोज अग्रहरी, छोटेलाल ,मनीष कुमार ,देवराज व स्काउट्स और गाइड्स आदि उपस्थित रहे।

आज बन्द रहेंगी शराब की दुकान

कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश देशी शराब विदेशी मदिरा एवं बियर का व्यवस्थापन नियमावली संशोधित एवं उत्तर प्रदेश आबकारी लाइसेंस (टेण्डर एवं नीलाम) नियमावली-1991 के अनुपालन में जनपद की देशी शराब विदेशी मदिरा बियर एवं भांग तथा की समस्त दकाने 26 जनवरी 2022 (गणतन्त्र दिवस) के अवसर पर पूर्ण रूप से बन्द रहेंगी। उक्त बंदी के लिए अनुज्ञापियों को किसी भी प्रकार का प्रतिफल देय नहीं होगा। यह जानकारी जिला आबकारी अधिकारी राजेन्द्र प्रसाद वर्मा ने दी है।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने राष्ट्रीय मतदाता दिवस का द्वीप प्रज्ज्वलित कर किया शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

मतदान करने के साथ ही और भी लोगों को मतदान करने के लिए करें जागरूक, एप्प डाउनलोड कर जाने प्रत्याशी की जानकारी

राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर शपथ लेती छात्राएं

कौशाम्बी। 12वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर जनपद के तहसीलों सहित विद्यालयों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जनपद में सम्राट उदयन सभागार में आयोजित समारोह का जिला निर्वाचन अधिकारी सुजीत कुमार ने द्वीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने उपस्थित अधिकारियों कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं गणमान्य व्यक्तियों को मतदाता शपथ-ह्महम, भारत के नागरिक, लोकतन्त्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते हैं कि हम अपने देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मयार्दा को बनाये रखेंगे तथा स्वतन्त्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर, धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगेह्व दिलायी कार्यक्रम में ब्राण्ड एम्बेसडर स्वीप लालचन्द्र वर्मा एवं कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय भरवारी की छात्राओं ने अपने गीत एवं रंगोली के माध्यम से लोगों को स्वयं मतदान करने के साथ ही और भी लोगों को मतदान करने के लिए जागरूक करने हेतु प्रेरित किया इस अवसर पर जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा प्रथम बार 25 जनवरी 2011 को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाये जाने का निर्णय लिया गया था, तब से प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि जनपद में 05वें चरण-27 फरवरी को मतदान होना है, सभी लोग अपने परिवार व आस-पास के लोगों को अपने साथ लेकर मतदान करने अवश्य जायें। उन्होंने कहा कि जागरूक नागरिक की पहचान है कि वह अपने मत का प्रयोग अवश्य करें। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि सभी लोग जागरूक मतदाता होने के साथ ही साथ अपने प्रत्याशी के बारे में अधिक से अधिक जानकारी कर सही प्रत्याशी को चुनें, इसके लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा एप्प जारी किया गया है, आप लोग अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड कर अपने प्रत्याशी के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों से कहा कि मतदाता जागरूकता अभियान निरन्तर जारी रखा जाय तथा अधिक से अधिक लोगों को मतदान करने के लिए जागरूक किया जाय। जिला निर्वाचन अधिकारी ने छात्राओं द्वारा मतदाता जागरूकता के सम्बन्ध में बनायी गयी रंगोली का अवलोकन कर उनका उत्साहवर्धन किया इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी उप जिला निर्वाचन अधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय एवं अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) डा0 विश्राम सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित थे।

मनोज त्रिपाठी बने चायल विधानसभा से प्रत्याशी

कौशाम्बी। भारतीय लोकमत राष्ट्रवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज कुमार शर्मा ने विधानसभा चुनाव 2022 में उत्तरप्रदेश में 90 प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर दी है पार्टी ने कौशांबी जिले के चायल विधानसभा से मनोज कुमार त्रिपाठी को प्रत्याशी घोषित किया है मंझनपुर विधानसभा से जगजीवन राम को पार्टी ने विधानसभा प्रत्याशी घोषित किया है चायल विधानसभा प्रत्याशी मनोज कुमार त्रिपाठी का कहना है कि उन्हें ब्राह्मण मतदाताओं का पूरा समर्थन मिला हुआ है उन्होंने कहा कि समय-समय पर सपा बसपा भाजपा सरकारों ने ब्राह्मण मतदाताओं को छला है अब ब्राह्मण मतदाता इन राजनैतिक दल के छलावे में आने वाला नहीं है उन्होंने कहा कि विधानसभा क्षेत्र की आम जनता का उन्हें भरपूर समर्थन मिला हुआ है और वह बड़ी दमखम से चायल विधानसभा में चुनाव लड़ेंगे और अन्य राजनीतिक दल के प्रत्याशियों की नींद उड़ा देंगे मनोज त्रिपाठी ने कहा कि गरीब कमजोर मजलूम और किसानों के साथ भाजपा सरकार ने छलावा किया है भाजपा सरकार में बेरोजगारी बढ़ी है नौजवान बेरोजगारी के चौराहे पर खड़ा है रोजगार की कहीं उम्मीद नहीं है महंगाई चरम पर है जिससे किसान व्यापारी आमजन परेशान है।

दिनेश कुमार बने राष्ट्रीय मीडिया महासंघ के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष

कौशाम्बी जनपद के निवर्तमान जिलाध्यक्ष दिनेश कुमार को मिला मेहनत का फल, जमीनी कार्यकता से प्रदेश अध्यक्ष का हुआ सफर पत्रकार एवं पत्रकारिता जगत के हित में काम करने वाली संस्था राष्ट्रीय मीडिया महासंघ जिसे एनएमसी के नाम से जाना जाता है, उत्तर प्रदेश इकाई का कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया है। संगठन के राष्ट्रीय महासचिव शीबू खान द्वारा जारी किए गए नियुक्ति पत्र व संगठन के आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा गया कि पूर्व में संगठन के कुछ पदाधिकारियों द्वारा संगठन विरोधी गतिविधियों में लिप्त पाए जाने के बाद कमेटी को भंग की गई एवं कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष के रूप में कौशाम्बी जनपद के निवर्तमान जिलाध्यक्ष को नियुक्त किया गया। बताते चलें कि पत्रकार दिनेश कुमार संगठन में एक जमीनी स्तर के कार्यकर्ता के साथ ही ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, जुझारू एवं सरल स्वभाव के पदाधिकारी माने जाते हैं जिन्होंने निचले स्तर से इस मुकाम तक अपना लोहा मनवाया है।नियुक्ति के बाद दिनेश कुमार ने संगठन के प्रति और भी लग्न व मेहनत से कार्य करने की बात कही इससे पहले शीर्ष नेतृत्व का आभार भी प्रकट किया है।

गरीबों को अधिकार दिलाना प्राथमिकता में शामिल : सुशील जयहिंद

अखंड भारत संदेश

आम जनता के मौलिक अधिकारों का हनन पूर्ववर्ती सरकारों और उनके जनप्रतिनिधियों ने किया

ग्रामीणों के बीच चुनाव की चर्चा करते समर्थ किसान पार्टी प्रत्याशी

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के चायल विधानसभा उम्मीदवार सुशील जय हिंद एडवोकेट ने मंगलवार को काजू चरवा बयोर तथा चायल कस्बे की जनता से मुलाकात कर कोविड-19 को ध्यान में रखते हुए जनसंपर्क किया उन्होंने गरीबों के जर्जर लोगो के मकान देखें भूखे पेट इंसान देखें जनसंपर्क के दौरान उन्होंने देखा कि आजादी के 70 साल बाद भी शिक्षा से आज लोगों के मौलिक अधिकार नहीं मिले आज भी इंसान स्वास्थ शिक्षा के लिए परेशान है जनसंपर्क के दौरान समर्थ किसान पार्टी प्रत्याशी सुशील जय हिंद ने कहा कि गरीब कमजोर मजलूम लोगों को उनके अधिकार दिलाना प्राथमिकता में शामिल होगा उन्होंने कहा कि आम जनता के मौलिक अधिकारों का हनन पूर्ववर्ती सरकारों और उनके जनप्रतिनिधियों ने किया है लेकिन अब गरीब कमजोर मजलूम लोगों के मौलिक अधिकारों का हनन होने नहीं दिया जाएगा और सत्ता में बैठकर जनता के अधिकारों को छीनने वाले लोगों को मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा जनसंपर्क के दौरान सुशील जय हिंद एडवोकेट ने कहा कि मेरी लड़ाई गरीबों को हक दिलाने को लेकर है जनसंपर्क में सुशील जय हिंद की टीम वीरेंद्र चौरसिया बाबू भाई सतीश भारतीय विकास चौहान सुरेंदर पासी विपिन पटेल संजय यादव विवेक हर्ष त्रिपाठी शरद चंद्रा मुकेश सोनी व अंनय लोग रहे।

ई-रिक्शा पलटा चार लहूलुहान

कौशांबी। करारी थाना क्षेत्र के तियरा जमालपुर से मीरापुर जाने वाली सड़क पर बैटरी रिक्शा सवारी लेकर जा रहा था सड़क में गड्ढे अधिक होने से ई रिक्शा चालक संतुलन खो बैठा और सवारियों सहित ई रिक्शा सड़क पर पलट गया इस हादसे में ई-रिक्शा चालक सहित 4 सवारियों को चोटें आई हैं हादसे की जानकारी मिलते ही मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई और मामले की सूचना पुलिस को दी गई। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है घटना के मुताबिक ई-रिक्शा चालक अली अहमद पुत्र सोनू मंगलवार की दोपहर कुछ सवारी रेखा देवी सीमा देवी नीता देवी को लेकर मीरापुर की ओर जा रहा था लेकिन रास्ते में सड़क अधिक खराब होने से चालक का संतुलन खो गया और ई रिक्शा सड़क पर पलट गया है ई-रिक्शा पलटते ही सवारियां उसके नीचे दब गई हादसे की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंचे लोगों ने ई-रिक्शा को सीधा करके सवारियों को बाहर निकाला है इस हादसे में चालक अली अहमद रेखा देवी सीमा देवी नीता देवी को गंभीर चोटे आई है घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया और मामले की सूचना पुलिस को दी गई जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर पुलिस भी पहुंच गई है।

कोविड-19 का पालन करते हुए करें मतदान : एसडीएम

अखंड भारत संदेश

छात्राओं को जागरूक करते उप जिलाधिकारी मंझनपुर

राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर महामाया विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित

कौशाम्बी। मुख्य निर्वाचन अधिकारी उत्तर प्रदेश लखनऊ के दिनांक 18 जनवरी 2022 एवं जिला निर्वाचन अधिकारी कौशांबी के अनुपालन में महामाया राजकीय महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना एवं रोवर्स रेंजर्स के तत्वावधान के अंतर्गत आज दिनांक 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर महाविद्यालय परिसर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया इसके अंतर्गत महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं द्वारा पोस्टर , रंगोली एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से मतदान के प्रति जागरूकता का प्रसार प्रचार किया गया। इस 12वे मतदाता दिवस के अवसर पर मतदाताओं को शपथ ग्रहण कराई गई कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ0 विनय कुमार सिंह, प्राचार्य, महामाया राजकीय महाविद्यालय एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रखर उत्तम, उप जिलाधिकारी मंझनपुर द्वारा की गई कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि द्वारा सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण कर हुई ' अपने अभिभाषण में मुख्य अतिथि ने मतदाता जागरूकता के विषय पर प्रकाश डाला एवं छात्र छात्राओं को उचित कॉविड नियमों का पालन करते हुए अपने मत का प्रयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया' कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ विनय कुमार सिंह ने लोकतंत्र में मतदान की उपयोगिता का विस्तार से वर्णन किया' कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ अमित कुमार शुक्ल द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ नीलम वाजपेई द्वारा किया गया इस कार्यक्रम में महाविद्यालय से डॉ0 अनिल कुमार, डॉ रीता दयाल ,डॉ पवन कुमार, डॉ तरित अग्रवाल, डॉ रमेश चंद्र, डॉ संतोष कुमार एवं डॉ शैलेश मालवीय उपस्थित रहे (कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा पोस्टर, रंगोली एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से मतदान के प्रति जागरूक किया गया।

छेड़खानी का विरोध करने पर महिलाओं को पीटा

कौशाम्बी। सराय अकिल थाना के इछना गांव की एक बालिका से छेड़खानी करने का विरोध करने पर पहले उसके साथ मारपीट की गई और जब उसके घर की महिलाएं उलाहना देने आरोपियों के घर गयी तो उनके साथ भी मारपीट किया गया है मारपीट के दौरान आरोपियों ने जेवरात भी छीन लिया है पीड़ित परिवार ने मामले की शिकायत थाना पुलिस ने किया लेकिन पुलिस ने आरोपियों पर कार्रवाई नहीं की जिस पर पीड़ित परिवार ने क्षेत्राधिकारी चायल को तहरीर देकर कार्यवाही किए जाने की मांग की है। घटनाक्रम के मुताबिक सराय अकिल थाना क्षेत्र के इछना गांव निवासी रंजना देवी पुत्री रमेश कुमार पासवान 22 जनवरी को शाम समय लगभग 6:00 बजे नित्य किया के लिए खेत की तरफ जा रही थी रास्ते में छोटू पुत्र पन्ना लाल ने बालिका का हाथ पकड़ कर खीच कर दूसरे के घर के अन्दर ले जाने लगा तो बालिका ने जोर से हल्ला मचाया जिस पर बालिका को वह मारने लगा होहल्ला सुनकर गांव के कुछ लोग इकट्ठा होने लगे जिस पर बालिका को छोड़ा गया बालिका का कहना है को मेरी माता कौशिल्या देवी छोटू के घर इसकी शिकायत करने गई तो छोटू की माता और उसका बड़ा भाई सुमेरे मेरी माता से झगड़ा कर मेरी माता के गले से लाकेट (सोने) की व चैनपट्टी छीन कर भाग गये और घर आकर आप बीती अपने घर वालों को बताई।

संपादक की कलम से

क्या नेताजी सुभाष चंद्र बोस रुकवा देते देश का दुर्भाग्यपूर्ण बंटवारा

नेताजी सुभाष चंद्र बोस यदि जीवित होते तो पाकिस्तान का सपना कभी हकीकत में बदलता? क्या वे मोहम्मद अली जिन्ना को साम-दाम-दंड-भेद से समझा पाते कि भारत के बंटवारे से किसी को कुछ लाभ नहीं होगा? ये सवाल अपने आप में काल्पनिक होते हुए भी महत्वपूर्ण हैं। नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवनकाल में ही अखिल भारतीय मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान का प्रस्ताव पारित किया था। जिन्ना ने 23 मार्च, 1940 को लाहौर के बादशाही मस्जिद के ठीक आगे बने मिन्टो पार्क में एक सभा को संबोधित करते हुए अपनी घनघोर सांप्रदायिक सोच को खुलेआम प्रकट कर दिया था। जिन्ना ने सम्मेलन में अपने दो घंटे लंबे बेहद आक्रामक भाषण में हिन्दुओं को पानी पी-पीकर कोसा था। जिन्ना ने कहा था- "हिन्दू-मुसलमान दो अलग धर्म हैं। दोनों के अलग-अलग विचार हैं। दोनों की परम्पराएं और इतिहास भी अलग हैं। दोनों के नायक भी अलग हैं। इसलिए दोनों कतई साथ नहीं रह सकते।" जिन्ना ने अपनी तकरीर के दौरान लाला लाजपत राय से लेकर दीनबंधु चितरंजन दास को लेकर खुलकर अपशब्द कहे। जाहिर है, नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने जिन्ना के भाषण के अंश पढ़े ही होंगे। पाकिस्तानी लेखक फारुक अहमद दार ने अपनी किताब "जिन्नाज पाकिस्तानः फोरमेशन एंड चैलेंजेस" में लिखा है कि मुस्लिम लीग के पाकिस्तान के हक में प्रस्ताव पारित करने के बाद नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से जिन्ना से आग्रह किया था कि वे अलग देश की मांग को छोड़ दें। उन्होंने जिन्ना को भारत के आजाद होने के बाद पहला प्रधानमंत्री बनाने का प्रस्ताव भी दिया था। कुछ इसी तरह का प्रस्ताव कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सी. राजागोपालचारी ने भी जिन्ना को दिया था। जाहिर है कि जिद्दी जिन्ना ने नेताजी की पेशकश पर सकारात्मक उत्तर नहीं दिया। उसके बाद का इतिहास तो सबको पता ही है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस पेशावर के रास्ते देश से चले गए, भारत को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्ति दिलवाने के लिए। फिर वे दुनिया के अनेक देशों में रहे। उन्होंने सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज का गठन किया। जाहिर है कि देश से बाहर जाने के बाद वे जिन्ना या मुस्लिम लीग की गतिविधियों से लगभग दूर हो गए। अभी तक तो यह कहा जाता है कि उनकी एक विमान हादसे में 1945 में मृत्यु हो गई थी। लेकिन, अभी तक इसके कोई पुख्ता प्रमाण नहीं मिले हैं। सत्तर साल कांग्रेस सरकार ने जनता को विमान दुर्घटना की कहानी ही बताई। मोदी सरकार ने नेताजी से जुड़े गुप्त दस्तावेजों को सार्वजनिक कर दिया। अब रोज नये-नये तथ्य सामने आ रहे हैं। पर जरा सोचिए कि उनकी मृत्यु नहीं होती तब उनकी जिन्ना के 16 अगस्त 1946 के डायरेक्ट एक्शन के आह्वान को लेकर किस तरह की प्रतिक्रिया होती। जिन्ना ने 16 अगस्त, 1946 के लिए डायरेक्ट एक्शन का आह्वान किया था। एक तरह से वह हिन्दुओं के खिलाफ दंगों की शुरूआत थी। तब बंगाल में मुस्लिम लीग की सरकार थी। उसने दंगाइयों का खुलकर साथ दिया था। उन दंगों में कोलकाता में पांच हजार मासूम हिन्दू मारे गए थे। मरने वालों में उड़िया मजदूर सर्वाधिक थे। फिर तो दंगों की आग चौतरफा फैल गई। मई, 1947 को रावलपिंडी में मुस्लिम लीग के गुंडों ने जमकर हिन्दुओं और सिखों को मारा, उनकी संपत्ति और औरतों की इज्जत खुलेआम लूटी। रावलपिंडी में सिख और हिन्दू खासे धनी और संपन्न थे। इनकी संपत्ति को निशाना बनाया गया। पर जिन्ना ने कभी उन दंगों को रुकवाने की अपील तक नहीं की। वे एकबार भी किसी दंगा ग्रस्त क्षेत्र में नहीं गए। डायरेक्ट एक्शन की आग पूर्वी बंगाल तक पहुंच गई थी। वहां पर भी हजारों हिन्दुओं का कत्लेआम हुआ था। उस कत्लेआम को रुकवाने के लिए बाद में महात्मा गांधी भी गए थे। बेशक, नेताजी सुभाष चंद्र बोस तो जिन्ना के डायरेक्ट एक्शन के खिलाफ जनशक्ति के साथ सड़कों पर उतर जाते। वे 1930 में कोलकाता के मेयर थे। उन्हें कोलकाता के चप्पे-चप्पे की जानकारी थी। वे जिन्ना और मुस्लिम लीग के गुंडों का सड़कों पर मुकाबला करते। वे जुझारू नेता थे। नेताजी घर में बैठकर हालात को देखने वालों में से नहीं थे। पर अफसोस कि वे इससे पहले ही संसार से विदा हो चुके थे। मान लें कि अगर वे जिन्दा होते तो भारत का इतिहास ही आज के दिन अलग होता। तब संभवतः देश विभाजित ही न होता। उनका मुसलमानों के बीच में भी जबरदस्त असर था। आजाद हिन्द सेना में उनके एक अहम साथी शाहनवाज खान थे।

प्रेरक है नेताजी का इतिहास बोध

-हृदयनारायण दीक्षित-

भारतीय इतिहास दृष्टि में लोकमंगल का लक्ष्य है और समग्रता का दृष्टिकोण है। इतिहासबोध राष्ट्रभाव की आत्मा है। स्वाधीनता संग्राम के सभी शिखर पुरूष वास्तविक इतिहासबोध से लैस थे।

गांधी जी का इतिहास बोध अप्रतिम था। इस इतिहास बोध में सच्चा राष्ट्रबोध है। स्वसंस्कृति और स्वराष्ट्र के प्रति सत्याग्रही आदरभाव है। सो गांधी जी का इतिहास बोध पश्चिम की सभ्यता, सत्ता और संस्कृति पर आक्रामक था। लोकमान्य तिलक का इतिहासबोध ऋग्वेद से लेकर आधुनिक काल तक सतत प्रवाही सीधी रेखा है। विपिन चन्द्र पाल के इतिहास बोध ने राष्ट्रगौरव बढ़ाया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का इतिहास बोध भारत के साथ साथ विश्व इतिहास की गहन समझ से भी लैस था। सुभाष चन्द्र बोस के इतिहास बोध में भारत एक प्राणवान आर्थिक, राजनीतिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक सत्ता है। यहां मैं नेताजी के इतिहास बोध पर चर्चा करूंगा। 'द इण्डियन स्ट्रगल' (1920-42) नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की लिखी प्रीतिकर ऐतिहासिक किताब है। पुस्तक का 1920-35 तक का हिस्सा लारेन्स ऐण्ड विशर्ट लंदन ने जनवरी 1935 में छापा था। भारत में इस पर प्रतिबंध लगा। 'हाउस आफ कामंस' में भारत मंत्री सेमुअल होर ने सफाई दी "इसकी सामग्री आतंकवाद और सीधी कार्रवाई को प्रोत्साहन देने वाली है। पुस्तक का शेष भाग (1935 से 1942 तक) बाद में लिखा गया था। भारत सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रकाशित नेताजी सम्पूर्ण वाड्.मय के खण्ड 2 में यह पुस्तक संकलित है। नेताजी के मस्तिष्क में भारत क्या था? लिखते हैं, "भौगोलिक दृष्टि से देखें तो लगता है कि भारत शेष संसार से अलग एक स्वायत्त इकाई है। उत्तर में विशाल हिमालय और दोनों ओर महासागरों से घिरा भारत एक स्पष्ट भौगोलिक इकाई होने की बेजोड़ मिसाल है। रक्त या जातीय भिन्नता तो भारत में कभी कोई समस्या रही ही नहीं। इतिहास में वह न जाने कितनी जातियों को आत्मसात करने और उन सब पर अपनी समान संस्कृति और परम्परा की छाप डालने में समर्थ रहा है।

भारत एक सांस्कृतिक सूत्र में बंधा हुआ है। सो क्यों? नेता जी ने लिखा है, "सबको जोड़ने और मिलाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन रहा है हिन्दू धर्म। उत्तर, दक्षिण, पूरब और पश्चिम - आप कही भी जाएं, आपको सर्वत्र समान धार्मिक विचार, समान संस्कृति और समान परम्पराएं मिलेंगी। सभी हिन्दू भारत को अपनी पुण्य भूमि मानते हैं। हिन्दुओं की पवित्र नदियां और पवित्र नगरियां देश-भर में फैली हैं।" (वही) यहां हिन्दू धर्म अंध आस्था नहीं है। धर्म यहां वैचारिकी है। एक समान संस्कृति का प्रेरक है। उन्होंने लिखा, "श्रद्धालु हिन्दू के लिए चारों धामों की तीर्थ-यात्रा तभी पूरी होती है, जब वह दूर दक्षिण में सेतुबन्ध रामेश्वर से लेकर उत्तर में हिममंडित शिखरों वाले हिमराज की गोद में स्थित बद्रीनाथ के दर्शन कर लेता है। जो भी संत-महात्मा देश को अपने पंथ या धार्मिक विचारों की ओर आकृष्ट करना चाहता था, उसे सारे देश का देशाटन करना होता था। उनमें से एक महापुरूष थे शंकराचार्य जो आठवीं शताब्दी में हुए और जिन्होंने भारत के चारों कोनों में चार आश्रम (पीठ) स्थापित किए जो आज तक सुचारु रूप से चले आ रहे हैं।" नेताजी के लिए समूचा भारत एक रीति, एक प्रीति में बंधा हुआ है।

नेताजी आन्दोलनकारी योद्धा थे। वे तत्कालीन स्वातंत्र्य आन्दोलन को सम्यक इतिहासबोध से जोड़ते हैं "भारत के आधुनिक राजनीतिक आन्दोलन को उचित परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए यहां की पिछली राजनीतिक व्यवस्था पर सरसरी नजर डालना आवश्यक है। भारत की सभ्यता अधिक नहीं तो भी 3000 ई0पू0 से तो आरम्भ होती ही है, और तब से आज तक संस्कृति और सभ्यता की अजस्र धारा बहती रही है। यह अजस्र धारा भारत के इतिहास की एक बहुत बड़ी विशेषता है।" वे मोएन जोदड़ो और हड़प्पा की खोदाई को उद्धृत करते हैं और लिखते हैं "बहुत नहीं तो भी कम से कम 3000 ई0 पूर्व में ही भारत सभ्यता के ऊंचे शिखर पर था।" नेताजी के अनुसार यूरोपीय इतिहासकार प्राचीन भारतीय इतिहास की उपेक्षा कर रहे थे। नेताजी ने लिखा "भारत का इतिहास दो चार दशकों या सदियों नहीं, बल्कि हजारों वर्ष पुराना है।" नेता जी ने लिखा "आदि वैदिक साहित्य में राजतंत्र से भिन्न प्रकार की शासन प्रणाली का उल्लेख है ..... वैदिक समाज या समुदायों में ग्राम सबसे छोटे और जन सबसे ऊंचे सामाजिक संगठन थे।"

नेताजी ने वैदिक साहित्य के तथ्य देकर प्राचीन राजनैतिक प्रणाली के बारे में लिखा, "इस बात के भी प्रमाण हैं कि अत्यन्त प्राचीन काल में भी शासन निर्णयों के लिए लोकप्रिय संसद आयोजित होती थी। वैदिक साहित्य में सभा समितियों के उल्लेख हैं।" वैदिक काल में राजा थे, ऋग्वेद में राजा हैं। वैदिक काल जनतंत्री था। विविध प्रकार की विचारधाराएं थीं, देवोपासक थे, प्रकृति के साधक भी थे। सभा -समितियां ऋग्वेद से लेकर अथर्ववेद और ब्राह्मण ग्रन्थों में हैं। महाभारत में तो कई अध्यायों से मिलकर बने एक बड़े हिस्से का नाम 'सभा पर्व' है। नेताजी ने सभा और समिति का विस्तृत वर्णन किया है। लिखा है "इतिहास के वैदिक काल और महाकाव्यों के काल में सत्ता के केन्द्रीकरण की यह प्रवृत्ति प्रबल होती दिखाई पड़ती है। .....सिकंदर के भारत से लौट जाने पर चन्द्रगुप्त मौर्य ने 322 ई0पू0 में अपना साम्राज्य स्थापित किया।" नेताजी उपनिषद् काल और वेदान्त दर्शन की प्रशंसा करते हैं और हर्षवर्द्धन (640 ई0) तक राजनीतिक एकता की तारीफ करते हैं।

यूक्रेन संकटः भारत की दुविधा

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

इस समय यूक्रेन पर सारी दुनिया की नजर लगी हुई हैं, क्योंकि अमेरिका और रूस एक-दूसरे को युद्ध के धमकी दे रहे हैं। जैसे किसी जमाने में बर्लिन को लेकर शीतयुद्ध के उष्णयुद्ध में बदलने की आशंका पैदा होती रहती थी, वैसा ही आजकल यूक्रेन को लेकर हो रहा है।

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन और विदेश मंत्री खुलेआम रूस को धमकी दे रहे हैं कि यदि रूस ने यूक्रेन पर हमला किया तो उसके नतीजे बहुत बुरे होंगे।

सचमुच यदि यूरोप में युद्ध छिड़ गया तो इस बार वहां प्रथम और द्वितीय महायुद्ध से भी ज्यादा लोग मारे जा सकते हैं, क्योंकि इन युद्धरत राष्ट्रों के पास अब परमाणु शस्त्रास्त्रों और प्रक्षेपास्त्रों का अंबार लगा हुआ है। रूस ने यूक्रेन की सीमा पर लगभग एक लाख फौजियों को अड़ा रखा है। यूक्रेन के दोनबास क्षेत्र पर पहले से रूस-समर्थक बागियों का कब्जा है।

यूक्रेन पर लंबे समय तक रूस का राज रहा है। वह अभी लगभग दो-दशक पहले तक रूस का ही एक प्रांत भर था। सोवियत रूस के विश्व-प्रसिद्ध नेता निकिता ख्रुश्चौफ यूक्रेन में ही पैदा हुए थे। इस समय यूरोप में यूक्रेन ही रूस के बाद सबसे बड़ा देश है। लगभग सवा चार करोड़ की आबादी वाला यह पूर्वी यूरोपीय देश पश्चिमी यूरोप के अमेरिका-समर्थक देशों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने की कोशिश करता रहा है। वह रूस के शिकंजे से उसी तरह बाहर निकलना चाहता है, जिस तरह से सोवियत खेमे के अन्य 10 देश निकल चुके हैं। उसने यूरोपीय संघ के कई संगठनों के साथ सहयोग के कई समझौते भी कर लिये हैं।

रूस के नेता व्लादिमीर पुतिन को डर है कि कहीं यूक्रेन भी अमेरिका के सैन्य संगठन 'नाटो' का सदस्य न बन जाए। यदि ऐसा हो गया तो नाटो रूस की सीमाओं के बहुत नजदीक पहुंच जाएगा। यों भी एस्तोनिया, लेटविया और लिथुवानिया नाटो के सदस्य बन चुके हैं, जो रूस के सीमांत पर स्थित हैं। यूक्रेन और जार्जिया जैसे देशों को रूस अपने प्रभाव-क्षेत्र से बाहर नहीं खिसकने देना चाहता है। लेनिन के बाद सबसे अधिक विख्यात नेता जोजफ स्तालिन का जन्म जार्जिया में ही हुआ था। इन दोनों देशों के साथ-साथ अभी भी मध्य एशिया के पूर्व-सोवियत देशों में रूस का वर्चस्व बना हुआ है।

अफगानिस्तान से अमेरिकी पलायन के कारण रूस की हिम्मत बढ़ी है। यों भी यूक्रेन पर बाइडन और पुतिन के बीच सीधा संवाद भी हो चुका है और दोनों देशों के विदेश मंत्री भी आपस में बातचीत कर रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि यूक्रेन को लेकर दोनों महाशक्तियों के बीच युद्ध छिड़ेगा, क्योंकि वैसा होगा तो यूरोप के नाटो देशों को मिलने वाली रूसी गैस बंद हो जाएगी। उनका सारा कारोबार ठप्प हो जाएगा और उधर रूस की लड़खड़ाती हुई अर्थ-व्यवस्था पैंदे में बैठ जाएगी। खुद यूक्रेन भी युद्ध नहीं चाहेगा, क्योंकि लगभग एक करोड़ रूसी लोग वहां रहते हैं। इस संकट में भारत की दुविधा बढ़ गई है। इस समय भारत तो अमेरिका के चीन-विरोधी मोर्चे का सदस्य है और वह रूस का भी पुराना मित्र है। उसे बहुत फूंक-फूंककर कदम रखना होगा।

काम नहीं फिर 'राम' का भरोसा?

-तनवीर जाफरी-

चुनावी गहमागहमी के वातावरण के बीच पिछले दिनों उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में भ्रमण करने का अवसर मिला। सरकार द्वारा जिस विकास का ढिंढोरा पीटा जा रहा है उसका तो कहीं दूर तक नाम-ो-निशान नहीं दिखाई दिया। शहरों व कस्बों में वही टूटी-फूटी गड्ढेदार धूल भरी सड़कें,जगह जगह सड़कों व चौराहों पर लावारिस पशुओं के कब्जे,जाम पड़े सड़ांध मारते नाले व नालियां,आम लोगों के चेहरों पर छाई मायूसियाँ,युवाओं में अपने कैरियर के प्रति असुरक्षा का भय,मंहगाई से दुखी जनता की पीड़ा,गरीबी सब कुछ साफ नजर आता है। परन्तु इन धरातलीय स्थिति के बावजूद इन्हीं सड़कों पर सत्तारूढ़ दल भारतीय जनता पार्टी द्वारा प्रदेश में हजारों की संख्या में बड़े से बड़े इश्तेहारी फ़्लेक्स लगवाकर यह दावा किया गया है कि 'सोच ईमानदार-काम दमदार= फिर एक बार -भाजपा सरकार'। यह दावा इश्तेहार के नीचे के हिस्से में छपा है जबकि ऊपरी भाग में लिखा है -फर्क साफ है -तब-राम लला थे टेंट में= अब-भव्य राम मंदिर का निर्माण। 'तब' का अर्थ जब भाजपा सत्ता में नहीं थी और अब का अर्थ है कि भाजपा के शासन में मंदिर का निर्माण हो रहा है। गोया भाजपा अदालती फैसले के बजाये राम मंदिर निर्माण का श्रेय स्वयं लेने को तत्पर है।

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को चूँकि राजनैतिक विश्लेषक इस नजरिये से भी देख रहे हैं कि यदि बंगाल की तरह उत्तर प्रदेश में भी भाजपा का विजय रथ अवरोधित हो गया तो 2024 के लोकसभा चुनाव परिणाम भी प्रभावित हो सकते हैं। लिहाजा उत्तर प्रदेश जीतने के लिये ही मतदाताओं विशेषकर धर्म के आधार पर बहुसंख्य मतदाताओं को लुभाने के लिये ही इस तरह के इश्तेहार अभियान चलाये गये हैं। प्रदेश में वाहनों में लाउडस्पीकर पर नारे लगाये जा रहे हैं कि 'अयोध्या तो झांकी है,कशी-मथुरा बाकी है।' राजनैतिक विद्वेष भरे इस चुनाव में भाजपा केवल यही श्रेय मात्र नहीं ले रही कि राम मंदिर हमने बनवाया है और यह हमारा दमदार काम है।

अमर जवान ज्योति को बुझा, कर जज्बात और यादें को घुमिल करने की कोशिश

-विनोद तकिया वाला-

विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र भारत , भारत की राजधानी व ऐतिहासिक शहर दिल्ली,दिल्ली की धरोहर इंडिया गेट 'इण्डिया गेट पर अवस्थित अमर जवान ज्योति। केन्द्र सरकार द्वारा नेता जी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा लगाना अच्छी बात है, लेकिन सरकार के द्वारा अमर जवान ज्योति अखण्ड ज्योति स्वरूप मशाल को बुझा कर आजाद हिन्द फौज के संस्थापक नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा स्थापित करने की खबर से प्रत्येक देश प्रेमी के लिए आर्शचय की बात है । परिणाम स्वरूप सियासी राजनीति के गलियारे में सता पक्ष व विपक्ष के मध्य वाक्य युद्ध छिड़ गया है। सता पक्ष नेता जी के नाम पर अपनी राजनीति चमकाने का स्वर्णिम अवसर के रूप में अपने पक्ष व समर्थकों का दिल जीतने का भरसक प्रयास कर रहा है वही दुसरी ओर विपक्ष इसे भारतीय को इतिहास बदलने का प्रयास बता रही है। इस संदर्भ में विपक्ष ने सरकार से यह प्रशन कर रही है क्या -केन्द्र सरकार दो स्थानों पर हमारे अमर जवानों के नाम ज्योति जला सकती थी । इस संदर्भ में आम आदमी पार्टी राज्यसभा सांसद डा सुशील गुप्ता ने पंजाब के विधान सभा चुनावी जनसम्पर्क अभियान के दौरान कही।सुशील गुप्ता ने कहा कि हम सरकार के इंडिया गेट पर सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा लगाए जाने का स्वागत करते है, लेकिन भारत के गुमनाम सैनिक की श्रद्धांजलि का प्रतीक, अमर जवान ज्योति को बुझा कर वॉर मेमोरियल की ईटरनल फ्लेम मे मिलाने का विरोध भी करते है । वे मानते है कि ज्योति से ज्योति तो जलाई जाती है लेकिन एक 50 बर्षो से जलती अखण्ड ज्योति को बुझा कर दुसरी ज्योति जलाई जा रही गई। भारत का इतिहास इसे कभी माफ नही करेगा।

आप को बता दे दिल्ली के दिल मे 50 वर्षों से जलती आ रही अमर जवान ज्योति,जो भारत के गुमनाम सैनिक की श्रद्धांजली स्वरूप अखण्ड जलता मशाल सम्मान का प्रतीक भी है जिसे बुझा कर वॉर मेमोरियल की ईटरनल फ्लेम मे मिला दिया गया है, ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या हम दो जगह पर शहीदों को श्रद्वाजंलि देने के लिए अमर जवान ज्योति को जला कर नहीं रख सकते। सरकार के पास इसके लिए समय या इच्छा शक्ति की कमी है।

सऊदी में तनाव

-सिद्वार्थ शंकर-

सऊदी अरब के नेतृत्व वाले गठबंधन ने यमन के हूती विद्रोहियों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। गठबंधन के फाइटर जेट्स ने मंगलवार आधी रात को यमन की राजधानी सना में हूती केंद्रों पर बम बरसाए। इन विद्रोहियों ने सोमवार को संयुक्त अरब अमीरात की राजधानी अबुधाबी पर ड्रोन अटैक किया था। अबुधाबी के अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट और तेल डिपो के पास किए गए हमले में 2 भारतीयों समेत 3 लोगों की मौत हो गई। सऊदी की अगुआई वाली गठबंधन सेना और हूती विद्रोहियों के बीच लंबे वक्त से संघर्ष जारी है। इस संघर्ष की शुरूआत 2015 में हूती विद्रोहियों के यमन की राजधानी सना पर कब्जा के बाद हुई थी। सऊदी गठबंधन सेना ने इसी साल इनके खिलाफ सैन्य कार्रवाई की थी। इसके बाद विद्रोहियों और अरब देशों में वार-पलटवार शुरू हो गया। इस संगठन ने यूएई पर आगे भी हमले जारी रखने की चेतावनी जारी की है। ऐसे में दुनियाभर की नजरें इस कट्टरपंथी संगठन पर टिक गई हैं। हूती आंदोलन मुख्य रूप से जैदी शिया बल है, जिसका नेतृत्व बड़े पैमाने पर हूती जनजाति करती है। यह यमन के उत्तरी क्षेत्र में शिया मुस्लिमों का सबसे बड़ा आदिवासी संगठन है। हूती उत्तरी यमन में सुन्नी इस्लाम की सलाफी विचारधारा के विस्तार के विरोध में हैं। हूतियों का यमन के सुन्नी मुसलमानों के साथ खराब संबंध का इतिहास रहा है। इस आंदोलन ने सुन्नियों के साथ भेदभाव किया, लेकिन साथ ही उन्हें भर्ती भी किया है और उनके साथ गठबंधन भी किया है। हुसैन बद्रेद्दीन अल-हूती के नेतृत्व में, समूह यमनी के पूर्व राष्ट्रपति अली अब्दुल्ला सालेह के विरोध के रूप में उभरा था, जिस पर उन्होंने बड़े पैमाने पर वित्तीय भ्रष्टाचार का आरोप लगाया और सऊदी अरब और अमेरिका द्वारा समर्थित होने की आलोचना की। 2000 के दशक में विद्रोही सेना बनने के बाद हूतियों ने 2004 से 2010 तक यमन के राष्ट्रपति सालेह की सेना से छह बार युद्ध किया। साल 2011 में अरब देशों (सऊदी अरब, यूएई, बहरीन और अन्य) के हस्तक्षेप के बाद यह युद्ध शांत हुआ। हालांकि तानाशाह सालेह को देश की जनता के प्रदर्शनों के चलते पद छोड?ा पड़ा। इसके बाद अब्दरब्बू मंसूर हादी यमन के नए राष्ट्रपति बने। उम्मीदों के बावजूद हूती उनसे भी खुश नहीं हुए और फिर से विद्रोह छोड़ दिया और उन्हें राष्ट्रपति पद से हटाकर राजधानी सना को अपने कब्जे में ले लिया। हूतियों का उदय 1980 के दशक में यमन में हुआ। यह यमन के उत्तरी क्षेत्र में शिया मुस्लिमों का सबसे बड़ा आदिवासी संगठन है। हूती उत्तरी यमन में सुन्नी इस्लाम की सलाफी विचारधारा के विस्तार के विरोध में हैं। 2011 से पहले जब यमन में सुन्नी नेता अब्दुल्ला सालेह की सरकार थी, तब शियाओं के दमन की कई घटनाएं सामने आईं। ऐसे में शियाओं में सुन्नी समुदाय के तानाशाह नेता के खिलाफ गुस्सा भड़क उठा। उन्होंने देखा कि अब्दुल्ला सालेह की आर्थिक नीतियों की वजह से उत्तरी क्षेत्र में असमानता बढ़ी है। वे इस आर्थिक असमानता से नाराज थे। 2000 के दशक में विद्रोही सेना बनने के बाद हूतियों ने 2004 से 2010 तक सालेह की सेना से छह बार युद्ध किया। साल 2011 में अरब देशों (सऊदी अरब, यूएई, बहरीन और अन्य) के हस्तक्षेप के बाद यह युद्ध शांत हुआ। देश में शांति के लिए बातचीत जारी ही थी कि तानाशाह सालेह को देश की जनता के प्रदर्शनों के चलते पद छोड?ा पड़ा। इस दौरान अब्दरब्बू मंसूर हादी यमन के नए राष्ट्रपति बने। देश की जनता ने हादी से सुधारों को लेकर काफी उम्मीदें जताई थीं। लेकिन देश में जिहादियों के बढ़ते हमले, दक्षिणी यमन में अलगाववादी आंदोलन, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और सेना का पूर्व राष्ट्रपति सालेह को समर्थन हादी के लिए समस्या बना रहा। आखिरकार जब हूतियों को अपनी समस्याओं का हल होता नहीं दिखा, तो उन्होंने हादी को भी सत्ता से बेदखल कर दिया और राजधानी सना को अपने कब्जे में ले लिया। शिया समुदाय से आने वाले हूतियों की यमन में इसी बढ़ती ताकत से सुन्नी बहुल सऊदी अरब और यूएई में घबराहट बढ़ गई।

भुलाये नहीं भूलेगी नेताजी की स्मृति

-योगेश कुमार गोयल-

23 जनवरी 1897 की उस अनुपम बेला को भला कौन भुला सकता है, जब उड़ीसा के कटक शहर में एक बंगाली परिवार में नामी वकील जानकी दास बोस के घर भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में चमकने वाला एक ऐसा वीर योद्धा जन्मा था, जिसे पूरी दुनिया ने नेताजी के नाम से जाना और जिसने अंग्रेजी सत्ता की ईंट से ईंट बजाने में कोई-कसर नहीं छोड़ी।

जानकीनाथ और प्रभावती की कुल 14 संतानें थीं, जिनमें 6 बेटियां और 8 बेटे थे। सुभाष चंद्र उनकी नौवीं संतान और पांचवें बेटे थे। सुभाष को अपने सभी भाइयों में से सर्वाधिक लगाव शरदचंद्र से था। बचपन से ही कुशाग्र, निडर, किसी भी तरह का अन्याय व अत्याचार सहन न करने वाले तथा अपनी बात पूरी दबंगता के साथ कहने वाले सुभाष ने मैट्रिक की परीक्षा 1913 में कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की।

एक बार कॉलेज में एक प्रोफेसर द्वारा बार-बार भारतीयों की खिल्ली उड़ाए जाने और भारतीयों के बारे में अपमानजनक बातें कहने पर सुभाष को इतना गुस्सा आया कि उन्होंने कक्षा में ही उस प्रोफेसर के मुंह पर तमाचा जड़ दिया, जिसके चलते उन्हें कॉलेज से निकाल दिया गया था। कलकत्ता विश्वविद्यालय से 1919 में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद माता-पिता के दबाव के चलते सुभाष आई.सी.एस. (इंडियन सिविल सर्विस) की परीक्षा हेतु इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय चले गए। ब्रिटिश शासनकाल में भारतीयों का प्रशासनिक सेवा में जाना लगभग असंभव ही माना जाता था लेकिन सुभाष ने अगस्त 1920 में यह परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करते हुए चतुर्थ स्थान हासिल किया। उस समय देश का माहौल इस तरह के सम्मानों के सर्वथा विपरीत था, इसलिए सुभाष दुविधा में थे कि वे एक आईसीएस के रूप में नौकरी करके ऐश की जिंदगी बिताएं या अंग्रेज सरकार की इस शाही नौकरी को लात मार दें। उन्होंने तब अपने पिता को पत्र भी लिखा, "दुर्भाग्य से मैं आईसीएस की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया हूं मगर मैं अफसर बनूंगा या नहीं, यह नहीं कह सकता।" आखिर देशभक्त सुभाष ने निश्चय कर लिया कि वह ब्रिटिश सरकार में नौकरी करने के बजाय देश की सेवा ही करेंगे और उसी समय उन्होंने ब्रिटेन स्थित भारत सचिव (सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया) को त्यागपत्र भेजते हुए लिखा कि वह विदेशी सत्ता के अधीन कार्य नहीं कर सकते। नौकरी छोड़कर सुभाष भारत लौटे तो बंगाल में उस समय देशबंधु चितरंजन दास का बहुत प्रभाव था। सुभाष भी उनसे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने चितरंजन दास को अपना राजनीतिक गुरु बना लिया। सिविल सर्विस छोड़ने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़ गए। 1921 में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्यता ले ली। दिसम्बर 1921 में भारत में ब्रिटिश युवराज प्रिंस ऑफ वेल्स के स्वागत की तैयारियां चल रही थी, जिसका चितरंजन दास और सुभाष ने बढ़-चढ़कर विरोध किया और जुलूस निकाले, इसलिए दोनों को जेल में डाल दिया गया। इस तरह सुभाष 1921 में पहली बार जेल गए। उसके बाद तो विभिन्न अवसरों पर ब्रिटिश सरकार की बखिया उधेड़ने के कारण सुभाष कई बार जेल गए। सुभाष महात्मा गांधी के अहिंसा के विचारों से सहमत नहीं थे। दरअसल गांधी जी उदार दल का नेतृत्व करते थे जबकि सुभाष क्रांतिकारी दल के चहेते थे। दोनों के विचार भले ही पूरी तरह भिन्न थे किन्तु सुभाष यह भी जानते थे कि गांधी और उनका उद्देश्य एक ही है, अंग्रेजों की गुलामी से देश को आजाद कराना। विचारों में प्रबल विरोधाभास होने के बावजूद गांधीजी को राष्ट्रपिता कहकर सर्वप्रथम नेताजी ने ही संबोधित किया था। सुभाष पूर्ण स्वतंत्रता के हक में थे, इसलिए उन्होंने 1928 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में 'विषय समिति' में नेहरू रिपोर्ट द्वारा अनुमोदित प्रादेशिक शासन स्वायत्तता के प्रस्ताव का डटकर विरोध किया था। 1930 में सुभाष कलकत्ता नगर निगम के महापौर निर्वाचित हुए और फरवरी 1938 में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में पहली बार कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए, जिसके बाद उन्होंने राष्ट्रीय योजना आयोग का गठन किया, जो गांधीवादी आर्थिक विचारों के अनुकूल नहीं था। महात्मा गांधी के प्रबल विरोध के बावजूद जनवरी 1939 में सुभाष पुनः एक गांधीवादी प्रतिद्वंदी को हराकर कांग्रेस के अध्यक्ष बने किन्तु गांधी ने इसे सीधे तौर पर अपनी हार के रूप में प्रचारित करते हुए सुभाष के अध्यक्ष चुने जाने पर स्पष्ट रूप से कहा कि सुभाष की जीत मेरी हार है। उसके बाद महसूस किया जाने लगा था कि गांधी के प्रबल विरोध के चलते सुभाष पद छोड़ देंगे और अंततः गांधी के लगातार विरोध को देखते हुए उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी। गांधी और सुभाष के विचारों में मतभेद इतना बढ़ चुका था कि अप्रैल 1939 में सुभाष ने अध्यक्ष पद से इस्तीफा देकर 5 मई 1939 को 'फारवर्ड ब्लॉक' नामक नया दल बना लिया। उस समय तक सुभाष की गतिविधियां और अंग्रेज सरकार पर उनके प्रहार इतने बढ़ चुके थे कि अंग्रेज सरकार ने उन्हें भारत रक्षा कानून के तहत गिरफ्तार कर लिया। जेल में सुभाष ने आमरण अनशन शुरू कर दिया, जिससे उनकी सेहत बहुत बिगड़ गई तो अंग्रेज सरकार ने उन्हें जेल से रिहा कर उनके घर में ही नजरबंद कर दिया लेकिन जनवरी 1941 में सुभाष अंग्रेजों की आंखों में धूल झोंककर वहां से भाग निकलने में सफल हो गए।

विदित ने 34 चाल में निल्स को दी मात, प्रज्ञानानंदा फिर हारे

नई दिल्ली। भारतीय ग्रैंडमास्टर विदित संतोष गुजराती ने हार के बाद वापसी करते हुए टाटा स्टील मास्टर्स शतरंज के आठवें दौर में 34 चाल में स्वीडन के निल्स ग्रैंडेलियस को पराजित किया। प्रज्ञानानंदा को अजरबैजान के शखरियार मामेदियारोव के हाथों

शिकस्त मिली। मामेदियारोव अब दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन के साथ शीर्ष पर पहुंच गए हैं।

सोलह वर्षीय प्रज्ञानानंदा के आठ दौर के बाद ढाई अंक हैं। गुजराती और नीदरलैंड के अनीश गिरी पांच अंकों के साथ दूसरे स्थान पर हैं। दोनों कार्लसन और मामेदियारोव से आधा अंक पीछे हैं। कार्लसन ने सैम शैंकलैंड से ड्रॉ खेला। चैलेंजर्स वर्ग में भारत के ग्रैंडमास्टर अर्जुन एरिगेसी ने डेनमार्क के जोनास बुहाल ब्येरे को हराकर बढ़त बना ली है। सूर्यशेखर गांगुली आठवें दौर में हार के बाद नौवें स्थान पर खिसक गए।

क्षिण अफ्रीका ने आईपीएल 2022 की मेजबानी के लिए आधिकारिक आवेदन दिया, 20 फरवरी तक बीसीसीआई करेगा फैसला

नई दिल्ली। आईपीएल 2022 का आयोजन दक्षिण अफ्रीका में होने की अटकलों के बीच दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट बोर्ड ने आधिकारिक तौर पर आईपीएल की मेजबानी के लिए आवेदन कर दिया है। दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट बोर्ड ने कई दलीलें देते हुए कहा है कि आईपीएल 2022 का आयोजन दक्षिण अफ्रीका में कराया जाना चाहिए। हालांकि, भारतीय क्रिकेट बोर्ड किसी भी सूरत में इस साल आईपीएल का आयोजन देश में कराना चाहता है। अगर भारत में कोरोना के मामले बढ़ते हैं और आईपीएल को देश से बाहर ले जाने की नौबत आती है, तभी बीसीसीआई दक्षिण अफ्रीका में आईपीएल का आयोजन कराएगा।

साल 2021 में भी बीसीसीआई ने देश में ही आईपीएल का आयोजन कराने का फैसला किया था, लेकिन बाद में कोरोना के मामले तेजी से बढ़े और बायो बबले के अंदर कई खिलाड़ी कोरोना संक्रमित पाए गए। इसके बाद देश में आईपीएल का आयोजन रोकना पड़ा था। इस समय बीसीसीआई के पास कोई प्लान बी नहीं था और बाकी की मैच सितंबर और अक्तूबर में खेले गए थे। इस बार बीसीसीआई प्लान बी तैयार रखना चाहता है। इसके लिए अभी से तैयारी करनी पड़ेगी।

दक्षिण अफ्रीकी बोर्ड ने क्या कहा

क्रिकबज के अनुसार दक्षिण अफ्रीकी बोर्ड ने कहा है कि दक्षिण अफ्रीका में आईपीएल का आयोजन कराने पर बीसीसीआई का कम पैसा खर्च होगा और खिलाड़ियों को कम से कम हवाई यात्रा करनी पड़ेगी। यहां होटल और बाकी सुविधाएं भी काफी सस्ती हैं। दक्षिण अफ्रीका में जोहानिसबर्ग के आस-पास चार मैदान हैं, जहां आईपीएल के सभी मैच हो सकते हैं। अफ्रीकी बोर्ड के अनुसार जोहानिसबर्ग में वांडरर्स स्टेडियम, प्रिटोरिया में सेंचुरियन पार्क, बेनोनी में विलोमूर पार्क और पोटचेफस्ट्रूम में सेनवेस क्रिकेट स्टेडियम में आईपीएल का आयोजन हो सकता है।

पूर्व क्रिकेटर गौतम गंभीर कोरोना संक्रमित, हल्के लक्षण दिखने के बाद कराया था टेस्ट

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय क्रिकेटर और राज्यसभा सांसद गौतम गंभीर कोरोना संक्रमित हो चुके हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर यह जानकारी दी है। गंभीर कोरोना के हल्के लक्ष्ण थे इसके बाद उन्होंने अपनी जांच कराई थी और उनकी रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई है। कोरोना संक्रमित होने के बाद गंभीर ने अपने ट्विटर हैंडल पर यह जानकारी दी है और उन सभी लोगों से कोरोना की जांच कराने को कहा है, जो पिछले कुछ दिनों में उनके संपर्क में आए थे।

गौतम गंभीर ने अपने कोरोना संक्रमित होने की जानकारी देते हुए ट्वीट किया 'कोरोना के हल्के लक्षण महसूस करने के बाद जांच में मेरी रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई है। मेरे संपर्क में आने वाले सभी लोगों से कोरोना की जांच कराने की अपील करता हूं।' गौतम गंभीर को कुछ समय पहले ही आईपीएल की नई टीम लखनऊ का मेंटर बनाया गया है। लखनऊ की टीम का मालिकाना हक आरपीएसजी समूह के पास है।

पूर्व कोच रवि शास्त्री ने विराट कोहली का किया बचाव, गांगुली-द्रविड़ से भी की तुलना

नई दिल्ली। पिछले चार-पांच महीने में भारतीय क्रिकेट में बड़े बदलाव देखने को मिले हैं। विराट कोहली ने तीनों प्रारूप की कप्तानी छोड़ दी। साथ ही टी-20 विश्व कप के बाद हेड कोच रवि शास्त्री ने भी कोच पद से इस्तीफा दे दिया। रोहित शर्मा वनडे और टी-20 के नए कप्तान बने। वहीं राहुल द्रविड़ को हेड कोच बनाया गया। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) अब टेस्ट में भी नए कप्तान की तलाश कर रहा है।

तेंदुलकर को सातवें विश्व कप में मिली जीत

हालांकि, पूर्व कोच रवि शास्त्री नहीं चाहते थे कि विराट कोहली टेस्ट की कप्तानी छोड़ें। उन्होंने इस बात का जिक्र रविवार को अपने बयान में भी किया था। अब उन्होंने कोहली की कप्तानी में कोई भी आईसीसी ट्रॉफी नहीं जीत पाने पर भी

बचाव किया है। शास्त्री ने ओमान के मस्कट में खेले जा रहे लीजेंड्स क्रिकेट लीग के दौरान कहा कि सचिन तेंदुलकर जैसे महान खिलाड़ी ने भी छह विश्व कप खेले थे, तब जाकर एक में जीत मिली थी।

गांगुली-द्रविड़ कभी विश्व कप नहीं जीत पाए

शास्त्री ने कहा- कई पूर्व भारतीय दिग्गज खिलाड़ी जैसे सौरव गांगुली, अनिल कुंबले, राहुल द्रविड़ और वीवीएस लक्ष्मण कभी अपने करियर में विश्व कप नहीं जीत सके। इसका यह मतलब नहीं कि वह खराब खिलाड़ी थे। आप इस विषय पर किसी को टारगेट नहीं कर सकते।

हमारे पास विश्व कप जीतने वाले सिर्फ दो कप्तान हैं- कपिल देव और एमएस धोनी। इसके साथ ही शास्त्री ने किसी खिलाड़ी पर कोई टिप्पणी करने से भी इनकार कर दिया।

कोहली-बीसीसीआई मुद्दे पर कोई टिप्पणी नहीं

शास्त्री ने कोहली और बीसीसीआई के बीच हुए विवाद पर कुछ भी कहने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि संवाद बहुत जरूरी है। मुझे नहीं पता दोनों के बीच क्या मामला है। मैं इस संवाद का हिस्सा नहीं था। मैं इस मामले पर दोनों से बातचीत करने से पहले कुछ भी नहीं कह सकता। इसलिए अगर मेरे पास पूरी जानकारी नहीं है, तो बेहतर है कि मैं अपना मुंह बंद रखूं। जब पूरी जानकारी मिल जाएगी, तब इस पर कुछ बोल सकूंगा।

बतौर हेड कोच रवि शास्त्री की उपलब्धियां

ऑस्ट्रेलिया को उनकी जमीन पर टेस्ट में दो बार हराया।

40 महीने तक टेस्ट रैंकिंग में नंबर-1 रही भारतीय टीम।

टेस्ट में टीम इंडिया की रिकॉर्ड सात लगातार जीत।

दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया में व्हाइट बॉल सीरीज में जीत।

लगातार चार टेस्ट मैचों में पारी से जीत हासिल करने वाली पहली टीम बनी भारत।

गुरजीत कौर की हैट्रिक के दम पर भारत ने सिंगापुर को 9-1 से रौंदा

नई दिल्ली। भारतीय टीम ने महिला एशिया कप हॉकी टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली है। पूल ए के मैच में भारतीय टीम ने गुरजीत कौर की हैट्रिक की मदद से सिंगापुर को एकतरफा मुकाबले में 9-1 से पटखनी दी। भारतीय टीम की पूल ए में तीन मैचों में यह दूसरी जीत है। टीम ने अपने शुरुआती मुकाबले में मलयेशिया को 9-0 से हराया था जबकि पिछले मैच में उसे जापान के हाथों 0-2 से हार का सामना करना पड़ा था।

पिछले मैच की नाकामी को पीछे छोड़ते हुए भारत ने सिंगापुर

के खिलाफ शानदार खेल दिखाया। गुरजीत (आठवें, 37वें, 48वें मिनट) ने दो पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदले, जबकि मोनिका (छठें, 17वें मिनट) और ज्योति (43वें, 58वें मिनट) ने दो-दो मैदानी गोल दागे। वंदना कटारिया (आठवें मिनट) और मारियाना कुजूर (10वें मिनट) ने भी गोल किए। भारत पहले सेमीफाइनल में पूल बी की शीर्ष टीम कोरिया से भिड़ेगा।

पूल ए के एक अन्य मैच में मलयेशिया को 8-0 से हराने वाला जापान तालिका में शीर्ष पर रहा। अंतिम चार के एक अन्य मैच में उसका सामना चीन से होगा। टूर्नामेंट का फाइनल गुरुवार को खेला जाएगा। टूर्नामेंट की शीर्ष चार टीमें ने स्पेन और नीदरलैंड की सह-मेजबानी में इस साल के एफआईएच विश्व कप के लिए स्वतः ही क्वालीफाई कर लिया।

फुटबॉल मैच के दौरान बड़ा हादसा:कैमरून में फुटबॉल स्टेडियम के बाहर भगदड़; 8 की मौत, कई बच्चों समेत 50 घायल

कैमरून । कैमरून में अफ्रीका कप ऑफ नेशंस फुटबॉल टूर्नामेंट में स्टेडियम के बाहर भगदड़ मच जाने से 8 लोगों की मौत हो गई, जबकि 50 लोग घायल हो गए है। घायलों में बच्चे भी शामिल हैं। यह घटना कैमरून की राजधानी में बने ओलेंबो स्टेडियम में सोमवार को हुई। 24 जनवरी को अंतिम -16 राउंड के मुकाबला कैमरून और कोमोरोस के बीच था। इस मुकाबले को देखने के लिए लोगों की भीड़ लग गई। इसी दौरान एंट्री गेट पर भगदड़ मच गई। कॉन्फेडेरेशन ऑफ अफ्रीकन फुटबॉल ने इस घटना की जांच करने के आदेश दे दिए हैं।

ओलेंबे स्टेडियम की कुल क्षमता 60 हजार दर्शकों की है। कोरोना की वजह से सिर्फ 80 प्रतिशत लोगों की एंट्री की इजाजत थी। चश्मदीदों का दावा है कि 50 हजार से ज्यादा लोग मैच देखने के लिए पहुंच गए। इसी दौरान भगदड़ मच गई। ऐसे में कई लोगों ने अपनी जान बचाने के चक्कर में बच्चों को कुचल दिया। 40 घायलों में बच्चे भी शामिल है। बीसीसीआई मुंबई में ही इस साल आईपीएल का आयोजन कराना चाहता है। मुंबई में वानखेड़े और ब्रेबॉन स्टेडियम हैं। साथ ही पुणे का मैदान भी यहां से ज्यादा दूरी पर नहीं हैं। ऐसे में आईपीएल का आयोजन इन्हीं मैदानों पर हो सकता है।

श्रीलंका के खिलाफ टी-20 सीरीज में नहीं खेलेंगे डेविड वार्नर, हेजलवुड की टीम में वापसी

दुबई। श्रीलंका के खिलाफ फरवरी में होने वाली टी-20 सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया ने अपनी टीम का एलान कर दिया है। पांच मैचों की इस सीरीज में डेविड वार्नर को आराम दिया गया है। टी-20 सीरीज के मैच 11 से 20 फरवरी के बीच सिडनी, कैनबरा और मेलबर्न में खेले जाएंगे। वार्नर के अलावा मिशेल मार्श को भी इस सीरीज में आराम दिया गया है। वहीं बेन मेकडेरमॉट, जोश हेजलवुड, मॉइजेज हेनरिक्स, ट्रेविस हेड और झाय रिचर्डसन को टीम में शामिल किया गया है।

राष्ट्रीय चयन समिति के अध्यक्ष जॉर्ज बैली ने कहा कि ऑस्ट्रेलियाई टीम इस सीरीज के साथ टी-20 वर्ल्डकप के खिताब का बचाव करने के लिए तैयारी शुरू करेगी। कई खिलाड़ियों के पास इन पांच मैचों में एक अच्छी विरोधी टीम के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन कर खुद को साबित करने का मौका है।

इन खिलाड़ियों की हुई वापसी

पैर की चोट से उबरने के बाद तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड की टीम में वापसी हुई है। वहीं बिग बैश लीग के प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट बेन मैकडॉरट को भी टीम में शामिल किया गया है। सिडनी सिक्सर्स के कप्तान मॉइजेज हेनरिक्स को भी टीम में शामिल किया गया है। हेनरिक्स पिछले साल वेस्टइंडीज और बांग्लादेश के दौरे में भी टीम के साथ गए थे। इसके अलावा ट्रेविस हेड और झाट रिचर्डसन को भी टीम में शामिल किया गया है।

पाकिस्तान के खिलाफ सीरीज के लिए तैयारी करेंगे वार्नर और मार्श

श्रीलंका के खिलाफ टी-20 सीरीज के बाद ऑस्ट्रेलियाई टीम को पाकिस्तान का दौरा करना है।

इस वजह से डेविड वार्नर और मिशेल मार्श को टीम में शामिल नहीं किया गया है। ये दोनों खिलाड़ी पाकिस्तान के खिलाफ दौरे के लिए तैयारी करेंगे। जस्टिंग लैंगर और उनके साथी कोच भी श्रीलंका सीरीज के दौरान टीम के साथ नहीं होंगे। इस सीरीज में एंड्यू मैकडोनाल्ड टीम के कोच के रूप में काम करेंगे।

मेसी की वापसी, पीएसजी ने फ्रेंच लीग वन में रिम्स को 4-0 से हराया, 13 लगातार मैचों से अजेय है टीम

लंदन। दिग्गज लियोनल मेसी ने कोरोना से उबरने के बाद मैदान पर वापसी की। स्थानापन्न खिलाड़ी के रूप में उतरे मेसी ने पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) के लिए इस सत्र का अपना पहला मैच खेला। इसमें पीएसजी ने फ्रेंच लीग वन में रिम्स को एकतरफा मुकाबले में 4-0 से पराजित किया।

पीएसजी के लिए मार्को वेराट्टी (44वें, 67वें मिनट) ने जबकि रमोस (62वें मिनट) और डेनिलो (75वें मिनट) ने एक-एक गोल किया। रमोस का यह पीएसजी के लिए पहला लीग गोल है। पीएसजी लीग में 13 मैचों से अजेय है। उसके 22 मैचों में 16वीं जीत से 53 अंक हो गए हैं। शीर्ष पर चल रहे पीएसजी और नीस (42) के बीच 11 अंकों का फासला है।

जोंग के दम पर जीता बार्सिलोना

फ्रेंकी डि जोंग (87वें मिनट) के एकमात्र गोल से बार्सिलोना ने ला लिगा में

अलावेस को 1-0 से पराजित किया। बार्सिलोना की यह घर के बाहर सभी मुकाबलों में लगातार सातवीं जीत है। टीम 21 मैचों में नौवीं जीत से 35 अंकों के साथ तालिका में पांचवें स्थान पर पहुंच गई। वहीं तालिका में शीर्ष पर चल रहे रियल मैड्रिड ने पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए एल्चे को 2-2 की बराबरी पर रोक दिया। रियल मैड्रिड के 50 अंक है जो दूसरे स्थान पर चल रहे सेविला (46) से चार अधिक हैं।

विश्व कप जीतना अगला लक्ष्य :मंधाना

नई दिल्ली। भारत की ओपनर बल्लेबाज स्मृति मंधाना को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने साल 2021 के लिए सर्वश्रेष्ठ महिला क्रिकेटर चुना। यह अवॉर्ड जीतने के बाद मंधाना ने कहा है कि उनका अगला लक्ष्य भारत के लिए 2022 वनडे विश्व कप जीतना है। अभी फिलहाल वह इस बड़े टूर्नामेंट के लिए तैयारी में जुट गई हैं। विश्व कप इसी साल मार्च से शुरू होगा। भारतीय महिला टीम अपने पहले ग्रुप मैच में पाकिस्तान से भिड़ेगी। इससे पहले टीम को न्यूजीलैंड के खिलाफ उसके घर में वनडे सीरीज भी खेलनी है।

अवॉर्ड मिलने पर मंधाना ने कहा- मैं सम्मानित महसूस कर रही हूं। मैं अपने साथी खिलाड़ियों, अपने कोच, अपने परिवार, दोस्तों और प्रशंसकों की आभारी हूं, जिन्होंने मेरी क्षमता पर विश्वास किया और इस यात्रा में मेरा साथ दिया। एक असाधारण और कठिन साल में इतना बड़ा अवॉर्ड मिलना मुझे अपने खेल को बेहतर बनाने और टीम इंडिया की सफलता में योगदान करने के लिए प्रेरित करेगी।

अगले विश्व कप पर है पूरा फोकस

मंधाना ने कहा- मैं 2022 में अपना पूरा ध्यान न्यूजीलैंड में होने वाले 2022 विश्व कप को जीतने पर लगा रही हूं। हम इसके लिए एक टीम के तौर पर तैयारी में जुटे हुए हैं। भारतीय टीम फिलहाल

न्यूजीलैंड के दौरे पर रवाना होगी। वहां टीम एक टी-20 और पांच वनडे मैच की सीरीज खेलेगी। इसकी शुरुआत नौ फरवरी से नेपियर में होगी।

भारत का पहला मैच पाकिस्तान के खिलाफ

इसके बाद छह मार्च से टीम इंडिया पाकिस्तान के खिलाफ अपने विश्व कप अभियान की शुरुआत करेगी। इसके बाद टीम ग्रुप स्टेज में 10 मार्च को न्यूजीलैंड, 12 मार्च को वेस्टइंडीज, 16 मार्च को इंग्लैंड, 19 मार्च को ऑस्ट्रेलिया, 22 मार्च को बांग्लादेश और 27 मार्च को दक्षिण अफ्रीका से भिड़ेगी।

संन्यास पर मिताली राज का बड़ा बयान, न्यूजीलैंड दौरे पर रवाना होगी टीम

नई दिल्ली। भारतीय महिला क्रिकेट टीम इस साल वनडे विश्व कप में हिस्सा लेगी। इससे पहले टीम को न्यूजीलैंड के खिलाफ उसके घर में टी-20 और वनडे सीरीज खेलनी है। दौरे के लिए रवाना होने से पहले कप्तान मिताली राज और कोच रमेश पोवार ने वर्चुअल प्रेस कॉन्फ्रेंस में हिस्सा लिया। इन दोनों ने विश्व कप को लेकर तैयारियों पर बयान दिया।

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान मिताली से यह पूछे जाने पर कि क्या वह विश्व कप के बाद खेलना जारी रखेंगी? उन्होंने कहा- देखते हैं चीजें कैसी रहती हैं। अभी मेरा ध्यान सिर्फ अगले दो महीने पर है। मैं अभी न्यूजीलैंड दौरे पर और विश्व कप पर ध्यान केंद्रित करना चाहती हूं। मिताली ने 2019 में टी-20 प्रारूप से संन्यास लिया था। भारत-न्यूजीलैंड सीरीज की शुरुआत नौ फरवरी से नेपियर में होगी। टीम इंडिया इस सीरीज में

एक टी-20 और पांच वनडे मैच खेलेगी। इसके बाद छह मार्च से टीम इंडिया पाकिस्तान के खिलाफ अपने विश्व कप अभियान की शुरुआत करेगी। इसके बाद टीम ग्रुप स्टेज में 10 मार्च को न्यूजीलैंड, 12 मार्च को वेस्टइंडीज, 16 मार्च को इंग्लैंड, 19 मार्च को ऑस्ट्रेलिया, 22 मार्च को बांग्लादेश और 27 मार्च को दक्षिण अफ्रीका से भिड़ेगी।

वनडे विश्व कप के पिछले संस्करण (2017) में मिताली की कप्तानी में टीम इंडिया फाइनल में पहुंची थी। मिताली ने कहा- तब से लेकर अब तक काफी कुछ बदल चुका है। घरेलू क्रिकेट में हमारा ढांचा बदला है। खिलाड़ी अब इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया में लीग खेल रहे हैं। इससे हमारे खिलाड़ियों को अनुभव मिला है। इस बार हमारे पास काफी ऑलराउंडर भी हैं।

वनडे विश्व कप के लिए जेमीमा रोड्रिग्स, शिखा पांडे और पूनम राउत को टीम में शामिल नहीं करने पर कोच पवार ने कहा कि हम सबको नहीं शामिल कर सकते। पवार ने कहा- टीम में सभी खिलाड़ी अपना रोल जानते हैं। हमें जेमीमा, शिखा और पूनम से अलग से बात करने की जरूरत नहीं पड़ी। पवार ने कहा- पांच सिलेक्टर्स, कप्तान और कोच ने मिलकर 18 खिलाड़ी चुने हैं, जो कि न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज और विश्व कप में अच्छा कर सकते हैं। हम सबको टीम में शामिल नहीं कर सकते। हम टूर्नामेंट के लिए तेज गेंदबाज चाह रहे थे। इसलिए रेणुका, मेघना को टीम में शामिल किया। अगर वे अच्छा करते हैं, तो आगे मौका मिलेगा। बल्लेबाजी में यस्तिका, स्मृति मंधाना और मिताली हैं और वह संतुलित नजर आ रही है।

आईसीसी महिला विश्व कप, 2022 और न्यूजीलैंड के खिलाफ 5 वनडे के लिए टीम इंडिया: मिताली राज (कप्तान), हरमनप्रीत कौर (उप-कप्तान), स्मृति मंधाना, शैफाली वर्मा, यास्तिका भाटिया, दीप्ति शर्मा, ऋचा घोष (विकेटकीपर), स्नेह राणा, झूलन गोस्वामी, पूजा वस्त्रकर, मेघना सिंह, रेणुका सिंह ठाकुर, तानिया भाटिया (विकेटकीपर), राजेश्वरी गायकवाड़, पूनम यादव।

जिम्बाब्वे के पूर्व कप्तान का बड़ा दावा, कहा- भारतीय बिजनेसमैन ने स्पॉट फिक्सिंग के लिए ब्लैकमेल किया

नई दिल्ली। जिम्बाब्वे के पूर्व कप्तान ब्रेंडन टेलर ने बड़ा खुलासा किया है। टेलर ने कहा है कि उन्हें स्पॉट फिक्सिंग में शामिल होने के लिए एक भारतीय बिजनेसमन ने संपर्क किया था। ब्रेंडन टेलर ने इस वाकया का जिक्र करने के लिए ट्विटर पर लंबा चौड़ा पोस्ट भी शेयर किया है। टेलर ने अपने पोस्ट में लिखा कि इस बात को उन्हें आईसीसी को बताने में देरी कर दी और अब उन्हें कई साल का प्रतिबंध भी झेलना पड़ सकता है, लेकिन वो इसके लिए तैयार हैं। ब्रेंडन टेलर ने कहा कि भारतीय बिजनेसमैन से मिलने के दौरान वह बहक गए थे और नशीले पदार्थ का भी सेवन किया था। टेलर ने कहा कि इस पूरे घटनाक्रम ने उनके मानसिक स्वास्थ्य पर भारी असर डाला और अब वो रिहेब में भर्ती हैं।

टेलर ने उस घटना का जिक्र किया

टेलर ने लिखा- यह सब सोचकर मैं भारत गया। उस बिजनेसमैन से मिला और चर्चा हुई। हमने टी-20 लीग और कई मुद्दों पर बातचीत की। फिर होटल में मेरे आखिरी रात को उस

भारतीय बिजनेसमैन और उसके सहयोगी ने मुझे जश्न मनाने के लिए बुलाया। हमने शराब पी और इस दौरान खुले तौर पर मुझे कोकीन की पेशकश की गई। वे खुद कोकिन का सेवन करने में लगे हुए थे। मैंने भी मूर्खतापूर्ण हरकत करते हुए नशा कर लिया। उसके बारे में मैं कितनी बार सोच चुका हूं और यह सोचकर आज भी दुखी हो जाता हूं कि किस प्रकार उन्होंने मुझे बेवकूफ बनाया।

'छह लोगों ने रूम में घुसकर धमकी दी'-ब्रेंडन टेलर ने लिखा- अगली सुबह वो लोग मेरे होटल के कमरे में घुस आए और मुझे कोकीन करने से एक रात पहले का वीडियो दिखाया और मुझसे कहा कि अगर मैंने उनके लिए इंटरनेशनल मैचों में स्पॉट फिक्स नहीं किया, तो ये वीडियो वायरल कर देंगे।

मेरे रूम में छह लोग घुसे थे और मैं डर गया था। मुझे खुद के सुरक्षा की चिंता थी। मैं ऐसी स्थिति में पड़ गया था, जिसने मेरी जिंदगी बदल कर रख दी।

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
अतमम अली

जिला संयोजक
यूटेक
जनपद कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
नरोत्तमदास केसरवानी

प्रान्तीय मंत्री
उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल लखनऊ
जिला अध्यक्ष
कृषि बीज व्यापार मण्डल
जनपद कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
अमित कुमार सिंह

ग्राम विकास अधिकारी
सरसावां
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
सिद्दीक हसन
उर्फ अम्बर भाई

वरिष्ठ बसपा नेता
भावी प्रत्याशी
विधानसभा 251 सिराथू
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
एच एस पाण्डेय
ट्रेडर्स
अर्का महावीरपुर,मंझनपुर
जनपद कौशाम्बी
प्रो0 मौजी पाण्डेय
रामदत्त पाण्डेय (मुन्ना)

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मीरा देवी
पत्नी
दिलीप कुमार
ग्राम प्रधान धवाडा
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
सैयद इमरान हैदर

समाज सेवी
गदहिपर,करारी
जनपद कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
प्रदीप पाण्डेय
प्रधानाचार्य
प्राथमिक विद्यालय ककोदा
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
दिनेश सिंह

ग्राम विकास अधिकारी
सरसावां
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
निर्मला देवी मेमोरियल चेरिटेबुल सोसाइटी
हास्पिटल एवं जच्चा-बच्चा केन्द्र

डा. अनिल कुमार सिंह
टेवाँ रोड,पश्चिम शरीरा
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
रतन कुमार केसरवानी

वरिष्ठ उपाध्यक्ष
व्यापार मण्डल मनौरी
जनपद कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
विरेन्द्र कुमार
ग्राम विकास अधिकारी ककोदा
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
तीर्थराज गुप्ता

गोल बाबू
प्रदेश महामंत्री
उत्तर प्रदेश कैशरवानी वैश्य सभा
प्रबंधक : मीनू ईट उद्योग अमवां नेवादा
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सरला राय
ब्लॉक प्रमुख मंझनपुर
सौजन्य से

हुबलाल दिवाकर
ग्राम प्रधान
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
अशीष कुमार केसरवानी
उर्फ
बच्चा भाई

जिला उपाध्यक्ष भाजपा
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
सुधीर कुमार केसरवानी

अध्यक्ष
व्यापार मण्डल मनौरी बाजार
जनपद कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
उमर
ग्राम प्रधान सैलाबी
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
मोती लाल
ग्राम प्रधान विदनपुर
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
एडवोकेट
दिनेश कुमार पाण्डेय
48 खम्भा जिला शस्त्र न्यायलय
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
पारसनाथ पाण्डेय
(बैध जी)
सभी मर्जो का इलाज
दमा,स्नोपीलिया,पीलिया,आदि
का इलाज होता है।
अर्का फतेहपुर करारी जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
रेखा सिंह
प्रधानाचार्य
कस्तूरबा गांधी बलिका इंटर
कालेज भरवारी
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
एस वाई के कंसल्टेसी
पर्सलन लोन
बिजनेस लोन
होम लोन
लैब आदि
मैनेजर अजय पाण्डेय सचिन धूरीया
भड़ेसर नहर रोड स्टेट बैंक के पहले मंझनपुर–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
मीनू साहू पत्नी
योगेश साहू

जिला पंचायत सदस्य
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
प्रदीप पाण्डेय
प्रधानाचार्य
प्राथमिक विद्यालय ककोदा
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
राजू कुमार
कोटेदार

बड़ी धन्नी मूरतगंज
जनपद–कौशाम्बी

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
अभिमन्यु विश्वकर्मा
ग्राम प्रधान
अर्का फतेहपूर करारी
जनपद–कौशाम्बी

मंडलायुक्त ने प्रमुख संतो से की मुलाकातए समस्याओं का तत्काल निराकरण करने का दीया आश्वासन

अखंड भारत संदेश

जनसमस्याओं के निराकरण हेतु माघ मेले में दो टोल फ्री नंबर, 18001805350- 18001805340 भी चलाए जा रहे हैं।

प्रयागराज। माघ मेले में आए श्रद्धालुओं एवं साधु.संतों द्वारा मेला क्षेत्र में बसी संस्थाओं को दी गई सुविधाओं से संबंधित समस्याओं के निराकरण के दृष्टिगत अपने पूर्व में दिए गए आदेशों के क्रम में मंडलायुक्त श्री संजय गोयल ने मेला प्राधिकरण कार्यालय स्थित आई ट्रिपल सी सभागार में आज सभी अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए संस्थाओं को 2019.20 में दी गई सुविधाओं को मानक मानते हुए उनकी अनुमन्य सुविधाएं 24 घंटे के अंदर उन्हें देने के निर्देश दिए हैं।

पिछले कुछ दिनों में कई संस्थाओं द्वारा प्रवचन पंडाल एवं कुछ अन्य मूलभूत सुविधाओं से संबंधित शिकायतें मंडलायुक्त को भेजी गई थीं जिसका संज्ञान लेते हुए उन्होंने यह निर्देश दिए हैं। इस निर्देश के पश्चात लगभग 145 संस्थाओं की सुविधाएं बढ़ा दी गई हैं जिसे 24 घंटे के अंदर संस्थाओं तक पहुंचाने की जिम्मेदारी मेला प्रशासन द्वारा आबध्य छहरू वेंडरों को तत्काल प्रभाव से दे दी गई है।

इसके अतिरिक्त कुछ संस्थाओं द्वारा की गई शिकायतों के दृष्टिगत सुविधा आवंटन का कार्य प्रयागराज मेला प्राधिकरण के विशेष कार्याधिकारी पद पर नियुक्त श्री संत कुमार श्रीवास्तव से तत्काल प्रभाव से ले लिया गया है।

श्री संत कुमार श्रीवास्तव द्वारा किए जा रहे सभी कार्य अब मेला अधिकारी श्री अरविंद कुमार चौहान स्वयं देखेंगे। मेला अधिकारी की अनुपस्थिति में मेला संबंधित समस्याओं के निराकरण हेतु एसएलएओए श्री योगेंद्र सिंह को मेला कार्यालय में बैठने एवं जनसमस्याओं का निस्तारण करने के भी निर्देश दिए गए हैं। जनसमस्याओं के निराकरण हेतु माघ मेले में दो टोल फ्री नंबर ; 18001805350- 18001805340 भी चलाए जा रहे हैं जिन पर लोग अपनी समस्याएं दर्ज करा सकते हैं। इसी क्रम में मंडलायुक्त ने आज कई संस्थाओं के संतो से भी मुलाकात की तथा उनके द्वारा उठाई गई सुविधाओं संबंधित समस्याओं का तत्काल निराकरण करने का आश्वासन दिया है। इसमें खाक चौकए अखिल भारतीय दंडी स्वामी परिषदए रामानुज प्रबंध समितिए दंडी स्वामी नगर तथा आचार्य बाड़ा के संत भी शामिल रहे। इस अवसर पर उन्होंने सभी संतो से अपने.अपने प्रांगणों में कोविड प्रोटोकॉल का अनुपालन सुनिश्चित करने की भी अपील की है।

समस्त जनपद वासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
रमाकान्त सिंह पटेल

भावी सपा प्रत्याशी
विधानसभा शहर पश्चिमी
जनपद–प्रयागराज

समर्थ किसान पार्टी
उम्मीदवार
253 चायल विधानसभा
हमारी माँग
- बेरोजगार नवजवानों को रोजगार
- विधवा पेंशन व वृध्दावस्था पेंशन
- गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वालों का राशन कार्ड
- शराब मुक्त प्रदेश (शराब बन्द हो)
- शिक्षा का बाजारीकरण बन्द हो
- किसानों के फसल का उचित मूल्य एवं समय से मूल्य मिले
जय जवान जय किसान मंच

सुशील जयहिन्द
हाईकोर्ट इलाहाबाद
मो0 : 9839389073

जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतदाता दिवस के अवसर पर वर्चुअल माध्यम से मतदाताओं को दिलायी शपथ

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी जिला निर्वाचन संजय कुमार खत्री ने मंगलवार को मतदाता दिवस के अवसर पर संगम सभागार में आयोजित कार्यक्रम में वर्चुअल माध्यम से मतदाताओं को शपथ दिलायी। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी श्री शिपू गिरि भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर जिला निर्वाचन अधिकारीध्जिलाधिकारी ने कहा कि ष्स्वीप प्रयागराजष् अपने अत्यधिक मेहनत और परिश्रम से विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं जैसे ड्राइंगए स्लोगनए निबंधए ऑनलाइन प्रतियोगिताए नुक्कड़ नाटक इत्यादि के द्वारा लोगों को मतदान के लिए जागरूक किया है। उन्होंने कहा कि इस वर्ष निर्वाचन आयोग के निर्देश पर वह प्रत्येक बूथ पर विशेष सुविधाएं प्रदत्त कर रहे हैंए जिसमें कोविड.19 के दिशा निदेर्शों के अंतर्गत मतदाताओं की थर्मल स्क्रीनिंगए मास्क और सैनिटाइजर जैसी व्यवस्थाएं भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। उन्होंने जनपद के सभी मतदाताओं का आह्वान किया कि वह अनिवार्य रूप से 27 फरवरी को मतदान करें और लोकतंत्र में अपनी भूमिका को सुनिश्चित करें। कार्यक्रम में राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति ने भी अपने उद्बोधन से मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक किया। कार्यक्रम में जिलाधिकारी ने वर्चुअल माध्यम से पुस्तिका का विमोचन कियाए जिसमें उन्होंने बताया कि यह प्रत्येक बूथ पर बीएलओ के पास उपलब्ध रहेगी। मुख्य विकास अधिकारी श्री शिपू गिरि ने सभी उपस्थित और आभासी रूप से उपस्थित लोगों को मतदान हेतु शपथ दिलवाई और लोगों का आह्वान किया कि वह 27 फरवरी को अवश्य ही मतदान करें। मुख्य विकास अधिकारी ने 05 ऐसे छात्रों को उनका मतदाता पहचान पत्र प्रदान किया।

आदिकाल से ही बालिकाओं को बालकों के समान शिक्षा एवं समानता का अधिकार : डा. सरन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। राष्ट्रीय बालिका दिवस के उपलब्ध में जिला महिला चिकित्सालय में हमारी बेटियाँ हमारी पहचान थीम आधारित जिला स्तरीय लिंग संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला को मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. नानक सरन ने मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि भारत वर्ष में आदिकाल से ही बालिकाओं को बालकों के समान शिक्षा एवं समानता का अधिकार प्राप्त रहा है। लेकिन मध्यकालीन दौर में इस अधिकार में कटौती हुई। लेकिन वर्तमान में बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए सरकार के द्वारा अनेक योजनाएं संचालित की गई हैएजिसका अच्छा परिणाम सामने आया है। एनुअल हेल्थ सर्वे.5 में प्रदेश के सेक्स रेसियो में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। आज प्रदेश में 1000 बालकों की तुलना में 1024 बालिकाओं का अनुपात हो गया है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने उपस्थित बालिकाओं का आह्वान किया कि वे निडर होकर समाज के विकास में सहभागी बनें।

कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारीध्नोडल अधिकारी च्च्छक्ज् डॉण् एण् केण् तिवारी ने कन्या भ्रूण हत्या से संबंधित कानून पर विस्तार से चर्चा किया।

बुर्किना फासो में तख्ता पलट, सेना ने किया कब्जे का एलान

औगाडोउगोउ। पश्चिमी अफ्रीकी देश बुर्किना फासो में तख्ता पलट हो गया है। सेना ने देश के सरकारी टेलीविजन पर देश पर कब्जे का एलान किया है। इससे पूर्व बागी सैनिकों ने जोरदार गोलीबारी कर राष्ट्रपति रोच मार्क क्रिश्चियन काबोरे को बंधक बना लिया था। सेना की ओर से सरकारी टेलीविजन पर आए कैप्टेन सिदसोरे कबेरा औएद्राओगो ने गहराते इस्लामी विद्रोह से निपटने में राष्ट्रपति को अक्षम बताते हुए कहा कि सेना ने इस देशभक्ति आंदोलन में अपनी जिम्मेदारी निभाने का फैसला किया है। सेना ने यह नहीं बताया कि राष्ट्रपति कहां हैं, किन्तु यह

स्वीकार किया कि तख्ता पलट किया गया है। उन्होंने कहा कि संविधान को निलंबित कर दिया गया है। दावा किया गया कि गिरफ्तार किए गए लोगों को किसी प्रकार की चोट नहीं पहुंचाई गयी है। उन सभी को सम्मान के साथ सुरक्षित स्थान पर रखा गया है। इस घटनाक्रम की शुरूआत दो दिन पहले बुर्किना फासो की राजधानी औगाडोउगोउ के एक सैन्य अड्डे पर हुई भारी गोलीबारी से हुई थी। तब बुर्किना फासो के रक्षा मंत्री बर्थेलेमी सिम्पोर ने कहा कि न सिर्फ औगाडोउगोउ की सैन्य बैरक, बल्कि देश के कुछ अन्य शहरों में भी सेना की बैरकों पर हमले हुए थे।

दक्षिण चीन सागर में अमेरिकी लड़ाकू विमान दुर्घटनाग्रस्त, सात जवान जख्मी

वाशिंगटन। अमेरिकी युद्धक विमान एफ-35सी दक्षिण चीन सागर में नियमित उड़ान के दौरान लैंडिंग के समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान से पायलट को सुरक्षित निकाल लिया गया था। हालांकि इस दुर्घटना में सात जवान जख्मी हुए हैं।

अमेरिकी नौ सेना की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि अमेरिकी विमान वाहक पोत यूएसएस कार्ल विंसन (सीवीएन 70) दक्षिण चीन सागर में तैनात है। फाइटर जेट एफ-35सी दक्षिण चीन सागर की

रोजमर्रा की नियमित उड़ान पर था। उतरते समय यह लड़ाकू विमान दुर्घटना का शिकार हो गया। समय रहते पायलट को सैन्य हेलीकाप्टर की मदद से लड़ाकू विमान से अलग कर जान बचा ली गयी। इस दुर्घटना में सात सैनिक घायल भी हुए हैं।लड़ाकू विमान के पायलट को सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। पायलट की हालत स्थिर बताई गयी है। हादसे में घायल जवान घटना के समय यूएसएस कार्ल विंसन के डेक पर मौजूद थे। इनमें से तीन घायल जवानों को फिलीपींस की राजधानी मनीला के मेडिकल ट्रीटमेंट फेसिलिटी सेंटर में इलाज के लिए भेजा गया है। चार अन्य जवानों को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गयी है। नौ सेना ने बताया कि विमान दुर्घटना के कारणों का पता लगाया जा रहा है।उल्लेखनीय है कि चीन से तनाव के चलते अमेरिका ने दक्षिण चीन सागर में दो विमान वाहक पोत तैनात कर रखे हैं। इस क्षेत्र पर चीन अपना दावा करता रहा है। अमेरिकी विमान वाहक पोतों की तैनाती से दोनों देशों के बीच तनाव की स्थिति भी है।

पाकिस्तान सरकार ने शहबाज से दस दिनों में मांगी नवाज शरीफ की मेडिकल रिपोर्ट

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में सरकार बनाम विपक्ष की लड़ाई तेज होती जा रही है। प्रधानमंत्री इमरान खान मुख्य विपक्षी दल पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) के नेता और पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को लंदन से वापस लाने के प्रयासों में लगे हैं। अब पाकिस्तान सरकार ने नवाज शरीफ के भाई व नेशनल एसेंबली में विपक्ष के नेता शहबाज शरीफ से दस दिनों के भीतर अपने भाई नवाज शरीफ की मेडिकल रिपोर्ट देने को कहा है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्रियों में सर्वाधिक नौ साल से अधिक प्रधानमंत्री रहे नवाज शरीफ इस समय चिकित्सकीय कारणों से लंदन में हैं। अब पाकिस्तान सरकार उनका चिकित्सकीय परीक्षण कर वापस पाकिस्तान लाने की तैयारी में जुट गयी है। नवाज शरीफ की प्रत्यर्पण प्रक्रिया तेज करने की रणनीति बनाई गयी है।

पाकिस्तान के अटार्नी जनरल खालिद जावेद के कार्यालय से जारी एक पत्र में शहबाज शरीफ से 10 दिनों के अंदर नवाज शरीफ की मेडिकल रिपोर्ट पेश करने को कहा गया है। ऐसा न होने पर पाकिस्तान के संविधान के अनुच्छेद 204 के साथ अदालत की अवमानना अध्यादेश, 2003 की धारा 3 के तहत कार्रवाई की चेतावनी भी दी गयी है।इससे पहले लंदन में इलाज के दौरान पंजाब सरकार को नवाज शरीफ की मेडिकल रिपोर्ट प्राप्त हुई थी। इस रिपोर्ट की पड़ताल कराने का फैसला इमरान सरकार ने किया था। अटार्नी जनरल ने पंजाब सरकार के गृह सचिव जफर नसरुल्ला खान को पत्र लिखकर मेडिकल रिपोर्ट की जांच के लिए एक नए मेडिकल बोर्ड का गठन करने के लिए कहा था।

लीबिया ने महिलाओं, बच्चों के लिए खोला अवैध अप्रवासी केंद्र

त्रिपोली। लीबिया में विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों के लिए राजधानी त्रिपोली में एक अवैध अप्रवासियों का केंद्र खोलने की घोषणा की गई है। ये जानकारी विदेश मंत्रालय ने दी।

विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि नए केंद्र का अनावरण एक समारोह के दौरान किया गया जिसमें आंतरिक मंत्री खालिद माजेन और विदेश मंत्री नजला मंगौश शामिल थे।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने मंत्रालय के हवाले से कहा कि 1,500 लोगों की क्षमता वाला और पूरी तरह से महिला सुरक्षा अधिकारियों द्वारा संचालित, केंद्र अप्रवासियों के लिए भोजन और चिकित्सा सेवाएं प्रदान करेगा।

यह नोट किया गया कि नए स्वागत केंद्र में एक क्लिनिक, एक स्कूल, एक किंडरगार्टन, एक खेल मैदान, एक कंप्यूटर प्रयोगशाला और एक अनाथ छात्रावास है। मंगौश ने कहा, यह केंद्र अपनी सभी सुविधाओं और सेवाओं के साथ, अप्रवासियों के लिए राष्ट्रीय एकता की सरकार की देखभाल और उनके रहने की स्थिति में सुधार करने, उनकी गरिमा को बनाए रखने और अंतर्राष्ट्रीय मानवीय समझौतों के अनुसार उनके अधिकारों का सम्मान करने की उनकी उत्सुकता को दशार्ता है।

नार्वे में प्रदर्शनकारियों ने कहा- नहीं बदल सकते हैं तालिबानी

ओस्लो। वैश्विक मान्यता के लिए नार्वे पहुंचे तालिबानी प्रतिनिधिमंडल का अफगानिस्तान मूल के लोगों ने विरोध किया और नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि तालिबान 20 साल बाद भी नहीं बदले हैं, ये आज भी पहले जैसे हैं।विभिन्न देशों और प्रतिनिधियों के साथ वार्ता करने अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ओस्लो में रविवार को पश्चिमी अधिकारियों और अफगानी सिविल सोसायटी के प्रतिनिधियों के साथ वार्ता की शुरूआत के बाद मान्यता को लेकर नई बहस छिड़ गई है। अगस्त में अफगानिस्तान पर कब्जे के बाद तालिबानी प्रतिनिधिमंडल देश में खराब होते मानवीय हालात पर चर्चा के लिए पहली बार यूरोप पहुंचा है। उधर, अफगानिस्तान में अमेरिका के विशेष प्रतिनिधि टाम वेस्ट भी अपनी टीम के साथ तालिबानी प्रतिनिधिमंडल से वार्ता के लिए ओस्लो पहुंच चुके हैं।पहले दिन की वार्ता के बाद तालिबानी प्रतिनिधिमंडल के सदस्य शफीउल्ला आजम ने खास बातचीत में कहा, 'पश्चिमी अधिकारियों के साथ तीन दिवसीय वार्ता तालिबान सरकार को मान्यता की दिशा में पहला कदम है। ऐसी पहल और संवाद यूरोपीय समुदाय, अमेरिका और अन्य देशों को अफगानिस्तान सरकार की खराब छवि को सुधारने में मदद करेंगे।' हालांकि, तालिबान का यह बयान मेजबान नार्वे को परेशान कर सकता है।

तालिबानी प्रतिनिधिमंडल ने महिला अधिकार व मानवाधिकार संगठनों के प्रतिनिधियों से भी मुलाकात की। अफगानिस्तान के कार्यवाहक संस्कृति व सूचना उप मंत्री जबीउल्ला मुजाहिद ने एक संयुक्त बयान ट्वीट किया, 'वार्ता में शामिल प्रतिभागियों ने कहा कि साझा सहयोग ही अफगानिस्तान की सभी समस्याओं का निदान है। राजनीतिक, आर्थिक व सुरक्षा की बेहतर स्थितियों को हासिल करने के लिए सभी अफगानियों को मिलकर काम करना होगा।शफीउल्ला ने कहा, 'हम जब्त की गई अफगानिस्तान की राशि (10 अरब डालर) के इस्तेमाल की इजाजत मांग रहे हैं। मुझे लगता है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भूखी और ठंड से परेशान जनता की मदद करनी चाहिए, न कि राजनीतिक विवाद के कारण उन्हें सजा देनी चाहिए।

कोरोना महामारी का अंतिम दौर सोचना हो सकता है खतरनाक

जिनेवा। कोरोना वायरस के नए वैरिएंट ओमीक्रोन को लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के प्रमुख टेड्रोस एडहानोम गेब्रेयेसस ने चेतावनी देते हुए कहा कि इसे जरा भी हल्के में नहीं लें, यह कोरोना महामारी का अंत नहीं है। टेड्रोस ने कोरोना वायरस के और स्वरूपों के आने की आशंका जताते हुए कहा कि हम महामारी के अंतिम दौर में हैं, यह विचार खतरनाक है। डब्ल्यूएचओ प्रमुख ने यह भी कहा कि अगर अहम लक्ष्यों को हासिल कर लिया जाता है तो महामारी का घातक दौर इस साल खत्म हो सकता है। विश्व निकाय के महानिदेशक गेब्रेयेसस ने सोमवार को उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और तंबाकू के इस्तेमाल, जीवाणु रोधी इलाज के खिलाफ प्रतिरोध की लड़ाई, जलवायु परिवर्तन के मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले असर जैसी वैश्विक चिंताओं पर बात रखी। उन्होंने कहा कि महामारी के घातक चरण को खत्म करना हमारी सामूहिक प्राथमिकता होनी चाहिए। गेब्रेयेसस ने डब्ल्यूएचओ की कार्यकारी बोर्ड की बैठक की शुरूआत में कहा कि महामारी कैसा रूप धारण करेगी और कैसे विकट चरण को खत्म किया जाए इसको लेकर अलग-अलग परिदृश्य हैं। लेकिन यह मानना खतरनाक होगा कि ओमीक्रोन, वायरस का आखिरी स्वरूप होगा या महामारी खत्म होने को है। उन्होंने कहा कि इसके विपरीत, वैश्विक स्तर पर वायरस के और स्वरूप आने के लिए आदर्श अवस्था मौजूद है। गेब्रेयेसस ने जोर देकर कहा कि हम कोविड-19 महामारी को दिए गए वैश्विक स्वास्थ्य आपातकाल के दर्जे को खत्म कर सकते हैं और यह हम इसी साल कर सकते हैं कि यह डब्ल्यूएचओ के लक्ष्यों को, जैसे प्रत्येक देश में साल के मध्य तक 70 फीसदी आबादी का टीकाकरण, कोविड-19 से अधिक खतरे वाले लोगों पर ध्यान केंद्रित कर , जांच में सुधार कर और वायरस और उसके स्वरूप पर नजर रखने के लिए आनुवंशिकी अनुक्रमण की दर बढ़ाने को प्राप्त करके कर सकते हैं।

इंडोनेशिया में कोरोना के 2,925 नए मामले, 14 की मौत

जकार्ता। इंडोनेशिया में बीते 24 घंटे में कोरोना के 2,925 नए मामले सामने आए, जिससे देश में संक्रमितों की संख्या बढ़कर 4,286,378 हो गई है। ये जानकारी स्वास्थ्य मंत्रालय ने दी। मंत्रालय ने कहा कि रविवार तक बीते 24 घंटों में इंडोनेशिया में कोरोना से 14 लोगों की मौत हुई है, जिससे मरने वालों की संख्या बढ़कर 144,220 हो गई। इस दौरान 712 लोग इससे ठीक हो चुके हैं, जिससे कुल ठीक होने वालों की संख्या बढ़कर 4,123,267 हो गई।समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, 18.113 करोड़ से ज्यादा इंडोनेशिया के लोगों ने टीकों की पहली खुराक प्राप्त की है, जबकि 12.408 करोड़ से ज्यादा लोगों ने दूसरी खुराक ली है।अधिकारियों के चीन की सिनोवैक वैक्सीन के आपातकालीन उपयोग को मंजूरी देने के बाद इंडोनेशिया ने जनवरी 2021 में बड़े पैमाने पर कोरोना टीकाकरण शुरू किया। देश में अब तक 20.82 करोड़ लोगों को पूरी तरह से टीका लगाया गया है। सरकार ने 30.657 करोड़ से ज्यादा खुराकें दी हैं, जिसमें तीसरी बूस्टर खुराक भी शामिल है।

अखंड भारत संदेश

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक

211019 से प्रकाशित

स्वामी श्री योगी सत्यम एवम् योग सत्संग समिति द्वारा

विपिन इण्टरप्राइजेज

1/6C माधव कुंज

कटरा प्रयागराज

से मुद्रित एवम् क्रियायोग आश्रम अनुसंधान संस्थान

झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश

से प्रकाशित।

Title UPHIN 29506

लगता है इमरान खान ने हार मान ली है : मरियम नवाज

लाहौर। विपक्षी पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) की उपाध्यक्ष मरियम नवाज ने कहा है कि प्रधानमंत्री इमरान खान की सत्ता छोड़ने की बात सिर्फ झूठे दावे हैं और उन्हें घर चले जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि खान एक ऐसे व्यक्ति की तरह लग रहे हैं जो न केवल हार गया है बल्कि अपनी हार भी स्वीकार कर चुका है।

उन्होंने कहा, आप जिनकी शिकायत कर रहे हैं, वे आपके दाएं और बाएं रह रहे माफिया हैं, जिन्होंने 220 मिलियन लूटे हैं और वे आपकी रसोई चलाते हैं।

यह बात मरियम नवाज ने जनता के लाइव सवालों का जवाब देते हुए खान द्वारा दिए गए बयान की प्रतिक्रिया में ट्वीट्स की एक श्रृंखला में कही।

मरियम नवाज ने कहा: इमरान खान पाकिस्तान के लोगों लिए एक धराशायी उम्मीद है।

उसने कहा कि खान ने जो भी शब्द कहा है वह विफलता के शब्द हैं और उम्मीदों को धराशायी करते हैं। उन्हें अपने या पीटीआई के भविष्य में कोई विश्वास नहीं है।

बांग्लादेश ने मनाया सामूहिक विद्रोह दिवस

ढाका। बांग्लादेश ने सोमवार को सामूहिक विद्रोह दिवस मनाया, जो 1969 में तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान के लोगों के स्वायत्तता के आंदोलन के चरमोत्कर्ष का प्रतीक था, जिसके कारण अंततः स्वतंत्रता संग्राम हुआ और 1971 में देश का उदय हुआ।

रविवार को राष्ट्रपति एम अब्दुल हमीद और प्रधानमंत्री शेख हसीना ने 1969 के ऐतिहासिक आंदोलन में शहीद होने वालों के प्रति गहरा सम्मान व्यक्त करते हुए अलग-अलग संदेश जारी किए।

अपने संदेश में, अब्दुल हमीद ने कहा कि राष्ट्रपिता बंगबंधु शेख मुजीबुर रहमान ने 1966 में बांग्लादेशी राष्ट्र को पाकिस्तानी शासन, शोषण और अभाव से मुक्त करने के लिए ऐतिहासिक छह सूत्री मांग की घोषणा की।

उन्होंने उल्लेख किया कि छह सूत्री स्वतंत्रता का चार्टर था, जिसमें स्वायतता भी शामिल थी।

इस बीच, हसीना ने कहा कि 1969 का विद्रोह देश की आजादी के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 1952 के भाषा आंदोलन, छह सूत्री मांग, 11 सूत्रीय मांग, 1969 के विद्रोह और सशस्त्र मुक्ति संग्राम के बाद राष्ट्र ने स्वतंत्रता हासिल की। उन्होंने कहा, हमें एक स्वतंत्र-संप्रभु बांग्लादेश मिला। 24 जनवरी, 1969 को ढाका में प्रदर्शनकारियों पर पुलिस की गोलीबारी में दो लोग मारे गए थे, क्योंकि पाकिस्तानी शासकों ने लोकप्रिय विद्रोह को दबाने की सख्त कोशिश की थी। हत्याओं के कारण पूरे देश में तीव्र विरोध हुआ और अंततः निरंकुश अयूब शासन का पतन हुआ। हसीना ने कहा कि यह दिन बांग्लादेशियों को लोकतंत्र के मूल्यों और उत्पीड़न के खिलाफ विरोध की सीख देता है।

बुर्किना फासो सरकार ने सेना के कब्जे से किया इनकार

औगाडौगो। बुर्किना फासो की सरकार ने कुछ बैरकों में गोलीबारी होने की पुष्टि की है, लेकिन सोशल मीडिया पर सेना के कब्जे की जानकारी से इनकार किया है।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, राजधानी औगाडौगौ के बैरक में रविवार तड़के गोलियों की आवाज सुनी गई। इस गोलीबारी का मकसद अभी समझ नहीं आया है।

रूस-यूक्रेन संकट के बीच नाटो ने पूर्वी यूरोप में भेजे और युद्धक पोत, लड़ाकू विमान

लंदन। यूक्रेन-रूस सीमा विवाद के बीच रूस और पश्चिमी देशों में चल रहा तनाव सोमवार को उस वक़्त और बढ़ गया, जब नाटो ने पूर्वी यूरोप में अतिरिक्त लड़ाकू विमानों और युद्धक पोतों की तैनाती का एलान कर दिया। यूक्रेन पर रूस के हमले की आशंकाओं के बीच आयरलैंड ने भी चेतावनी देते हुए कहा है कि उसके तटीय इलाके में जंग जैसे हालात नहीं पैदा होने दिए जाएंगे। इससे पहले यूक्रेन पर रूसी हमले को लेकर अमेरिका और यूरोपीय संघ नाटो कड़ी जवाबी कार्रवाई की संभावना पर गौर कर रहे हैं। रूस द्वारा यूक्रेन की सीमा पर करीब एक लाख सैनिकों और भारी हथियारों की तैनात करने से तनाव की स्थिति है। हालांकि रूस हमेशा हमले की योजना से इनकार करता रहा है। रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया ने अपने राजनयिकों के परिजनों को यूक्रेन की राजधानी कीव छोड़ने का आदेश दिया है। फ्रांस ने अपने नागरिकों से कहा है कि अगर जरूरी न हो तो वो यूक्रेन न जाएं।

पाकिस्तान ने कोविड-19 के बढ़ते मामलों के बीच पोलियो रोधी अभियान शुरू किया

इस्लामाबाद। पाकिस्तानी अधिकारियों ने देश में कोविड-19 के बढ़ रहे मामलों के बावजूद सोमवार को इस साल पहला राष्ट्रव्यापी पोलियो रोधी अभियान शुरू किया। पोलियो कार्यक्रम के संयोजक शहजाद बेग द्वारा जारी बयान के मुताबिक, पांच दिनों तक चलने वाले पोलियो रोधी अभियान में करीब डेढ़ लाख स्वास्थ्य कर्मी हिस्सा ले रहे हैं और इस दौरान पांच साल से कम उम्र के 2.24 करोड़ बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य है। उन्होंने बताया कि पिछला पोलियो रोधी अभियान कई हफ्ते पहले कोविड-19 के मामलों में कमी आने के बाद शुरू किया गया था। अधिकारियों को उम्मीद है कि नवीनतम अभियान से देश को पोलियो मुक्त बनाने में मदद मिलेगी। पाकिस्तान में पिछले साल पोलियो का एकमात्र मामला दक्षिण पश्चिम बलूचिस्तान प्रांत में आया था। उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान दुनिया के मात्र दो देश हैं, जहां पर पोलियो बीमारी है और बच्चे अपंग हो रहे हैं।

ड्रेसिंग रूम के माहौल को सही बनाये रखना सबसे बड़ी चुनौती थी: बावुमा

केपटाउन। तेम्बा बावुमा के लिए अपनी कप्तानी के शुरूआती दिनों में ड्रेसिंग रूम के माहौल को सही बनाये रखना सबसे बड़ी चुनौती रही है क्योंकि दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट एक के बाद एक मैदान के बाहर के कई विवादों से गुजर रहा है। प्रशासनिक संकट से गुजर रहे दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट के लिए भारत पर श्रृंखला में जीत बेहद जरूरी थी। भारतीय टीम का दौरा शुरू होने से पहले मुख्य कोच मार्क बाउचर समेत कुछ बड़े नामों पर नस्लवाद के आरोप लगाए गए हैं। एकदिवसीय मैचों में भारत का सफाया करने के बाद मीडिया से बात करते हुए बावुमा ने कहा कि कप्तान के रूप में उनके लिए अभी भी शुरूआती दिन हैं। उन्होंने पिछले साल मार्च में कार्यभार संभाला था।बावुमा ने शनिवार को कहा, मुझे नहीं लगता कि यह आसान है (टीम की कप्तानी करना)। इसमें आपको कई चीजें प्रबंधित करने की जरूरत होती है। मेरे लिए क्रिकेट पर पूरा ध्यान रखना सबसे बड़ी बात रही।उन्होंने कहा, टीम और संगठन (बोर्ड) को लेकर बहुत सारी बातचीत हो रही थी। इसलिए ड्रेसिंग रूम के आसपास हो रही बातचीत का प्रबंधन करना और यह सुनिश्चित करना कि हम शत प्रतिशत ऊर्जा के साथ मैदान पर उतरे जरूरी था। मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती यही थी।सामाजिक न्याय और राष्ट्र निर्माण की रिपोर्ट में टीम के कोच और पूर्व क्रिकेटर बाउचर पर नस्लवाद का आरोप लगाए जाने से दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट विवादों में घिर गया है। श्रृंखला के शुरूआती मैच में शतक बनाने और शानदार तरीके से टीम का नेतृत्व करने वाले बावुमा ने कहा, यह (शतक) खिलाड़ी के रूप में बहुत मायने रखता है। यह जान कर और अच्छा लगता है कि मैंने टीम की जीत में योगदान दिया है।

उन्होंने कहा, आपको हमेशा आपके रिकॉर्ड के आधार पर आंका जाएगा और इस भारतीय टीम को बड़े अंतर से हराना मेरी कप्तानी के लिए बहुत कुछ साबित करता है।

लीबियाई संसद ने चुनावों के लिए नया रास्ता तय करने का किया आग्रह

त्रिपोली। संयुक्त राष्ट्र के एक वरिष्ठ अधिकारी ने लीबियाई प्रतिनिधि सभा या संसद के सदस्यों से देश में आम चुनावों के लिए एक नया रास्ता तय करने का आग्रह किया है।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, लीबिया पर संयुक्त राष्ट्र महासचिव की विशेष सलाहकार स्टेफनी विलियम्स ने रविवार को पूर्वी शहर अल-गुब्बा में संसद अध्यक्ष अगुइला सालेह के साथ बैठक के दौरान यह टिप्पणी की।

विलियम्स ने बैठक के बाद ट्वीट किया, मैंने सभी संसद सदस्यों को सत्र में भाग लेने के लिए, लीबिया के लोगों के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए, और एक नई तारीख और चुनावों के लिए एक स्पष्ट रास्ता निर्धारित करने के लिए आमंत्रित किया है।

संयुक्त राष्ट्र के राजदूत ने कहा कि वैधता संकट का समाधान केवल बैलेट बॉक्स के माध्यम से मिलेगा।

उन्होंने कहा, हमने चुनावी प्रक्रिया में साथ देने के लिए राष्ट्रीय सुलह और न्याय प्रक्रिया की आवश्यकता पर भी चर्चा की।

लीबिया में 24 दिसंबर 2021 को राष्ट्रपति चुनाव होने की उम्मीद थी। हालांकि, उच्च राष्ट्रीय चुनाव आयोग के अनुसार, तकनीकी और कानूनी मुद्दों के कारण चुनाव अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था। समय पर चुनाव कराने में विफलता को दूर करने के लिए प्रतिनिधि सभा द्वारा निर्धारित रोडमैप समिति, सोमवार को एक सत्र के दौरान चुनावी प्रक्रिया के भविष्य पर अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट देने की उम्मीद है। चुनाव एलपीडीएफ द्वारा अपनाए गए रोडमैप का हिस्सा हैं, जिसका उद्देश्य राजनीतिक विभाजन और असुरक्षा के सालों के बाद लीबिया में स्थिरता लाना है।

सिंगापुर में कोरोना के मामले बढ़कर 313,772 से ज्यादा हुए

सिंगापुर,। सिंगापुर में बीते 24 घंटे में कोरोना के 3,496 नए मामले सामने आए, जिससे कुल संक्रमितों की संख्या बढ़कर 313,772 हो गई है। स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, रविवार को नए मामलों में से 2,007 मामलों का पता पीसीआर (पोलीमरेज चेन रिएक्शन) टेस्ट और 1,489 एआरटी (एंटीजन रैपिड टेस्ट) टेस्ट से पता चला है। पीसीआर मामलों में 1,577 स्थानीय और 430 बाहरी मामले थे। हल्के लक्षणों वाले और कम जोखिम वाले एआरटी मामलों में क्रमशः 1,480 स्थानीय और 9 बाहरी मामले शामिल हैं। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान में अस्पतालों में कुल 433 मामले हैं, जिनमें 9 मामले गहन देखभाल इकाइयों (आईसीयू) में भर्ती हैं।

समस्त क्षेत्रवासियों व नगर वासियों को गणतन्त्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
आफताब आलम
समाज सेवी
नैनी, प्रयागराज

गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
सुरेन्द्र कुमार सिंह
ग्राम प्रधान
26 JANUARY
ग्राम पंचायत-लिगदहिया
विकास खण्ड - करछना, प्रयागराज

जनाधार शक्ति पार्टी
26th January
Republic Day
गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।
प्रभाकर तिवारी
भावी विधायक प्रत्याशी
शहर दक्षिणी

समस्त क्षेत्रवासियों व नगर वासियों को
गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
अजीत शर्मा
प्रधान प्रतिनिधि
ग्राम पंचायत खाई
विकास खण्ड - करछना, प्रयागराज

समस्त क्षेत्रवासियों व नगर वासियों को गणतन्त्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
जितेन्द्र सिंह
समाज सेवी
नैनी, प्रयागराज

समस्त क्षेत्रवासियों व नगर वासियों को
गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
राजकमल नर्सिंग होम
डा. एस. के. पटेल
निदेशक
जनरल फिजीशियन
-: उपलब्ध सुविधाएं :-
24 घण्टे नार्मल डिलेवरी एवं सीजेरियन की सुविधा।
सभी प्रकार के ऑपरेशन की सुविधा।
गम्भीर मरीजों की भर्ती एवं इलाज।
13 ए/9ए, दाऊद नगर (यूको बैंक के बगल में) नैनी प्रयागराज-211008

समस्त क्षेत्रवासियों व नगर वासियों को
गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
शिवम् अक्षयवट् हॉस्पिटल
मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल एवं ट्रामा सेन्टर
पीपुल्स बेलफेयर सोसायटी द्वारा संचालित
CGHS APPROVED HOSPITAL
डा. ए. के. राय
M.S. (Ortho), F.R.S.P. (London)
हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ
I.T.I. ALSTOM, B.S.N.L., N.S.I.C., FHPL, STAR INSURANCE RSBY
D.H.S., E-Meditek Kotak Mahindra General Insurance Comp, Ltd.
Medi-assist, Vipul Medoorp, Paramount, Health India, Medsave
ए.डी.ए रोड (निकट आर.आर.बी. कान्वेन्ट स्कूल)
ए.डी.ए. कालोनी, नैनी, प्रयागराज
Mob.: 9839909264, 6390696999, 6391696999

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
ईश्वर जन प्रसाद शर्मा महाविद्यालय
डी.एल.एड./ बी.टी.सी. प्रशिक्षण केन्द्र
झीरी लच्छीपुर, भगनपुन, विकास खण्ड -करछना, प्रयागराज
शैलेन्द्र कुमार
प्रबन्धक
चेयरमैन -अमित कन्ट्रक्शन
मो.: 9794340618
सभाजीत शर्मा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
झीरी लच्छीपुर, भगनपुन, तहसील-करछना, प्रयागराज

समस्त देश वासियों को
स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती चैरिटेबल ट्रस्ट
अरैल, नैनी, प्रयागराज की ओर से
गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
आश्रम प्रभारी
सुनील कुमार श्रीवास्तव
बसन्त दास जी

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
IFFCO
इफको नैनो यूरिया तरल अपनाएं
प्रकृति को प्रदूषित होने से बचाएं
विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस
मिट्टी, वायु एवं जल प्रदूषण को कम करे
वातावरण को शुद्ध बनाए रखे
प्रदूषण संबंधी समस्याओं को रोके
ग्लोबल वार्मिंग को दूर करने में सहायक
राजेन्द्र यादव
को-आपरेटिव रूरल
डेवलपमेन्ट ट्रस्ट
मोती लाल नेहरू
फारमर्स ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट

राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
प्रयाग इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेन्ट
बेन्दौ, करछना, प्रयागराज
सावित्री देवी महाविद्यालय
सोनाई, करछना, प्रयागराज
विकास सिंह
सचिव
मो- 9838908757
ज्ञान सिंह पटेल
चेयरमैन
मो- 9839153880
प्रकाश सिंह
संरक्षक
मो- 9628560666
निवास - सोनाई, करछना, प्रयागराज

राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
सेठ राम अभिलाष इंटर कालेज
ए. पी. सिंह
प्रबन्धक
एस. आर. सिंह
प्रधानाचार्य
सहलोलवा (सिटकहिया) अकोढ़ा, करछना, प्रयागराज

गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
परियोजनाओं के क्रियान्वयन हेतु
हर समय सेवाएं जारी
विनोद कुमार पाण्डेय
संस्कार कंस्ट्रक्शन रजिस्टर्ड
मडफा कला, कोरांव,प्रयागराज
मो.: 772605700
के. पी. यादव
प्रोपराइटर मेसर्स
कृष्णा कंस्ट्रक्शन
कोरांव,प्रयागराज मो.: 772605700
निलेश तिवारी
प्रो./ प्रधान प्रतिनिधि
आदिति इण्टर प्राइजेज
अरू आरी कोरांव, प्रयागराज
जय नारायण सिंह
ग्रामीण अभियंत्रण सेवाएं
इंजीनियर ब्लाक कोरांव,प्रयागराज
नागेन्द्र सिंह
बी टी
ब्लाक कोरांव, प्रयागराज
ज्ञानेंद्र कुमार सिंह
मनरेगा टेकनिशियन
ब्लाक कोरांव, प्रयागराज
गोपाल कृष्ण सिंह पटेल
उर्फ इलाहाबादी
प्रो. आदर्श कंस्ट्रक्शन बदौर
कोरांव, प्रयागराज
मो.: 9794284079
26 JANUARY

गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
शिक्षा दीक्षा हित में तत्पर, सब पढ़ें, सब बढ़ें
कार्यालय खण्ड शिक्षा अधिकारी कोरांव, प्रयागराज
राजीव प्रताप सिंह
खण्ड शिक्षा अधिकारी
कोरांव, प्रयागराज
विपिन कुमार सोनी
कार्यालय सहायक
बी आर सी कोरांव, प्रयागराज
प्रवीण कुमार सिंह पटेल
अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय महुली
कोरांव, प्रयागराज
अच्युता नन्द शुक्ल
अध्यापक
खजुरी कला
कोरांव, प्रयागराज
संतोष कुमार मिश्र
प्रधानाध्यापक
छापर हरदौन
कोरांव, प्रयागराज
अशोक कुमार जायसवाल
इंचार्ज प्रधानाध्यापक
खजुरी कला
कोरांव, प्रयागराज

हेल्थ प्लस

खास तरीके बच्चों को हेल्दी रखने के

- बच्चों की दिनचर्या को एनर्जी से भरपूर रखने के लिए हेल्दी ब्रेकफास्ट की व्यवस्था बनाएं। यह ध्यान रखें कि बच्चो दोपहर के खाने से पहले भूखा न रहे। इसके लिए आप उसे उबले अंडे, ताजे फल या म्यूसली व दलिया दे सकती हैं।
- अपने बच्चों को बाहर खेलने के लिए प्रेरित करें विशेषकर सर्दियों में। कुछ ऐसे खेल खेलें जिसमें आप और आपका बच्चा दोनों एक्टिव रह सकें।
- आसानी से उपलब्ध होने वाले डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों या रेडी टू ईट जैसी चीजों पर भरोसा न करें। खाना पकाने के सही तरीकों पर अमल करते हुए बच्चों का खाना बनाएं, पर बहुत तला या भुना खाना न दें। किसी वजह से खाना न बन सका हो तो बाजार के खाने के बजाय ताजे फल व वेजटेबल को प्राथमिकता दें।
- सोचें कि आपके बच्चों की वास्तविक आवश्यकताएं क्या हैं, उसे पौष्टिक खाना चाहिए, प्यार व दुलार चाहिए, देखरेख चाहिए या मीठी नींद। कुछ समय उसे आजाद छोडें, जिससे वह मनचाहा कर सके और अपनी गलतियों से स्वयं सीख ले सके।
- छोटी-मोटी कोई शारीरिक तकलीफ होने पर अपने बच्चों को आप होम्योपैथिक दवाएं दे सकती हैं। इन दवाओं के साइड इफेक्ट नहीं होते व बच्चा इन्हें मन से लेता भी है।

जब नींद न आए

दौड़भाग भरी जिंदगी में लोगों को नींद नहीं आने की समस्या आम है। गलत दिनचर्या और खानपान के कारण नींद नहीं आती है। दिमाग की एक्टिविटीज से भी काफी हद तक नींद प्रभावित होती है। तनावग्रस्त व्यक्ति ही ज्यादातर नींद नहीं आने की समस्या से ग्रसित रहते हैं। इसके अलावा फोबिया, डिप्रेशन जैसी मानसिक बीमारियां अथवा मेडिकल समस्याओं के कारण भी व्यक्ति की नींद गायब हो जाती है। अत्यधिक थकान या जरूरत से ज्यादा आराम भी नींद नहीं आने का एक कारण है।

शरीर के आराम के लिए सोना उतना ही जरूरी है जितना कि खाना। इससे दिनभर की थकान उतर जाती है। इसके साथ ही भरपूर नींद न केवल अच्छी त्वचा के लिए जरूरी है, बल्कि इसका असर पूरे शरीर पर भी पड़ता है। दिनभर में त्वचा को जो भी नुकसान पहुंचता है, उसकी भरपाई रात की नींद से होती है। नींद नहीं होने से त्वचा सुबह फ्रेश नहीं लगती, आंखों के नीचे भी काले घेरे बन जाते हैं। इतना ही नहीं, व्यक्ति की कार्यक्षमता और दिमाग पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसलिए कुछ खास बातों का ध्यान रखें तो आप भी मीठी नींद पा सकते हैं।

- प्राणायाम करें, इससे आपको काफी फायदा मिलेगा।
- तनाव से बचें।
- डिनर के बाद वॉक पर जरूर जाएं।
- सोते समय अपनी मनपसंद किताब जरूर पढ़ें।
- मनपसंद संगीत सुनें।
- दोपहर में 1 से 4 बजे तक दिमाग को हलका रखें।

गुणकारी सोयाबीन

सोयाबीन में प्रोटीन, स्टार्च, फाइबर, ऑलिगोसैकेराइड्स, आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम, जिंक, कॉपर व पोटैशियम जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं और यह जल में घुलनशील विटमिनों का भी अच्छा स्त्रोत है। सोयाबीन अपने आपमें पूर्ण प्रोटीन है, इसलिए शरीर के विकास में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। एंटीऑक्सीडेंट तत्वों के साथ आइसोफ्बेलोवॉनस भी होते हैं इसमें, जो विभिन्न बीमारियों से बचाते हैं। फाइबर व जटिल कार्बोहाइड्रेट प्रचुर मात्रा में होने के कारण व ग्लाइसीमिक इंडेक्स कम होने के कारण यह डायबिटीज नियंत्रण में भीफायदेमंद होता है। सोयाबीन में मौजूद स्टीरॉल छोटी आंतों से कोलेस्ट्रॉल के अवशोषण को कम करते हैं जिससे कोलेस्ट्रॉल सीरम कम होता है। इसका आइसोफ्लेवॉन कैंसर कोशिकाओं को बढने से रोकता है।

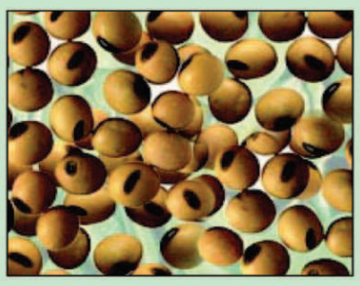

खुद का भी ख्याल रखें

महिलाएं अपने बच्चों का तो बहुत ख्याल रखती हैं। लेकिन, अपनी देखभाल नहीं कर पातीं। उनके बिजी रूटीन के कारण उन्हें कई तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। व्यस्त जीवन में महिलाओं ने परिवार को तो संभाल लिया है। लेकिन, अपने आप को नहीं संभाल पा रहीं। इसलिए वे एनीमिया की शिकार हो रही हैं। इसमें खून में आयरन और विटामिन की कमी हो जाती है। डॉक्टरों का कहना है यदि समय पर इसका इलाज न किया गया तो बाद में लाइलाज बीमारी बन जाती है। न्यूट्रीशियंस के मुताबिक स्वस्थ रहने के लिए छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना जरूरी है। इसलिए महिलाओं को कुछ छोटी-छोटी बातों का ख्याल रखना चाहिए।

- रोजाना दूध पीना चाहिए। ताकि, हड्डियां मजबूत रहें।
- प्रतिदिन योगा और मॉर्निंग वॉक के साथ इवनिंग वॉक पर जाना चाहिए।
- महिलाओं को कैल्शियम की जरूरत होती है। इसलिए उन्हें खाने में दही का इस्तेमाल करना चाहिए।
- वेजिटेरियन्स लोगों को खाने में पौष्टिक आहारयुक्तदालें लेना चाहिए।
- मॉर्निंग वॉक के साथ सोयाबीन को आटे के साथ मिक्स कर खाना चाहिए।
- फास्ट फूड को इग्नोर कर रोजाना एक गिलास जूस लें।
- हरी सब्जियों में पालक और लौकी का उपयोग ज्यादा करना फायदेमंद है।
- रोजाना सुबह तांबे के लोटे का पानी पीना चाहिए। इससे बीमारियां नहीं होतीं।
- शरीर की सभी रिक्वायरमेंट्स पर ध्यान देकर उन्हें पूरा करना चाहिए।
- कमजोरी को दूर करने के लिए और प्रॉपर एनर्जी के लिए ग्लूकोज के साथ इलेक्ट्रॉल पावडर यूज करना चाहिए।
- समय पर ब्रेकफास्ट, लंच और डिनर लेना जरूरी है। इससे डाइजेशन की समस्या नहीं होती।

नजरअंदाज न करें उच्च रक्तचाप को

आंकडे बताते हैं कि पूरी दुनिया में एक अरब लोग इस रोग की गिरफ्त में हैं। बडे ही नहीं, बच्चे भी इस रोग से बचे नहीं हैं। यदि समय रहते इसका इलाज नहीं किया जाए तो इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड सकते हैं। यह हृदय, मस्तिष्क, गुर्दे व आंखों को प्रभावित कर सकता है।

उच्च रक्तचाप क्या है

हमारे दिल का आकार एक बंद मुट्ठी की तरह है, जहां से धमनियों द्वारा सारे शरीर में रक्त को प्रवाहित किया जाता है। यह कार्य हृदय की संकुचन और प्रसारण क्रिया द्वारा संपन्न होता है। सामान्य अवस्था में रक्त-धमनियों में प्रवाहित रक्त में निश्चित दबाव बना रहना जीवन के लिए आवश्यक होता है। अधिक तला-भुना चिकनाईयुक्त भोजन खाने और शारीरिक श्रम कम करने से रक्त धमनियों की आंतरिक दीवारों पर कोलेस्ट्रॉल का जमाव होने लगता है, जिससे धमनियों का लचीलापन नष्ट होकर कठोर व संकीर्ण हो जाता है। अत: रक्त-प्रवाह में रुकावट होने से हृदय व धमनियों की आंतरिक दीवारों पर अधिक दबाव पडता है व रक्तचाप बढ जाता है। इसे ही उच्च रक्तचाप कहते हैं। सामान्य अवस्था में रक्तचाप 120/80 होता है। बढी हुई अवस्था में 140/90 या इससे अधिक।

उच्च रक्तचाप के कारण

उच्च रक्तचाप को एक तरह से साइलेंट किलर भी कहते हैं क्योंकि इसका कोई प्रमुख लक्षण न होने के कारण इसका पता तब तक नहीं चलता, जब तक कि रोगी अपना ब्लडप्रेशर चेक न करवाए। साधारणतया चार में से एक व्यक्ति अपने रक्तचाप से अनजान रहता है। आइए जानें इसके होने के प्रमुख कारण :

- चिंता, मानसिक तनाव का अधिक समय तक बने रहना।
- बार-बार और जरूरत से अधिक खाना और शारीरिक श्रम न करना।
- मैदे से बने खाद्य पदार्थ, चीनी, मसाले, तेल, घी का अधिक सेवन या अचार, चिप्स, जिनमें नमक की मात्रा अधिक हो, का सेवन। अत्यधिक सिगरेट व शराब पीना और श्रमहीन जीवन शैली व व्यायाम न करना भी इसका कारण बनता है।
- कभी-कभी वंशानुगत कारणों से भी ब्लडप्रेशर की शिकायत हो जाती है।

लक्षण : आम तौर पर तो उच्च रक्तचाप का कोई लक्षण नहीं होता, अत: व्यक्ति को लंबे समय तक इसका पता नहीं चलता। कुछ बीमार होने पर या वार्षिक स्वास्थ्य परीक्षण के समय जांच होने पर इस रोग का पता चलता है। कुछ लोगों में इसके लक्षण प्रकट होने लगते हैं। रोग ग्रसित व्यक्ति को नींद कम आना, चक्कर आना, सांस फूलना, हृदय की धडकन बढ जाना, हाथ-पैरों में कंपन महसूस होना, नाक से खून गिरना, स्वभाव में चिडचिडापन होना आदि सामान्य लक्षण दिखने लगते हैं।

डाइट : जैसे ही आपको उच्च रक्तचाप के बारे में पता लगे उसके निदान की ओर पूर्ण ध्यान देना बहुत जरूरी है। डाइटीशियन ईशी खोसला इस संबंध में कुछ बातों पर ध्यान देने की सलाह देती हैं।

- अपने वजन को नियंत्रित रखें, नियमित व्यायाम, सैर आदि करें।
- नमक का सेवन नियंत्रित करें। सैलेड व फलों पर ऊपर से नमक छिडककर न खाएं।
- पूरे दिन में फैट का सेवन 3-4 टी स्पून से अधिक न हो।
- कोल्ड प्रेस्ड ऑयल का प्रयोग करें, जैसे सरसों का, तिल का, ऑलिव या मिक्स्ड ऑयल।
- लो फैट डेरी उत्पादों का प्रयोग करें इनमें दही, सोया मिल्क, स्किम्ड मिल्क आदि शामिल है।
- शराब या एल्कोहॉल पर नियंत्रण रखें। प्रतिदिन 60 एमएल से अधिक एल्कोहॉल न लें। ह्वकैफीन यानी चाय-कॉफी को भी नियमित मात्रा में लें।
- मौसमी फल व सब्जियों, जडी-बूटियों, हर्बल चाय, हरी शाक सब्जियों को अपने भोजन में शामिल करें।
- सोया, नट्स, फैटी फिश, मस्टर्ड सीड, फ्लैक्स सीड, मेथी आदि का प्रयोग किसी न किसी रूप में अवश्य करें। उच्च रक्तचाप से बचने के लिए निम्नलिखित पौष्टिक तत्वों का सेवन अवश्य करें। इसके लिए अधिक परेशान होने की जरूरत नहीं है। ये तत्व रोज के भोजन में से ही प्राप्त हो सकते हैं बस इन के प्रति जागरूकता होनी चाहिए।

पोटैशियम : फल-सब्जियों जैसे- आलू, पालक, टमाटर, केले, संतरे और मेवे का सेवन करें।

कैल्शियम : लो फैट दूध, दही, हरी सब्जियां जैसे पालक, बथुआ, पुदीना, चौलाई, अखरोट, सेम की फली इत्यादि खाएं।

फाइबर : साबुत अनाज, अंकुरित दालें, मटर सोयाबीन, गेहूं चोकर इत्यादि का सेवन करें।

डब्ल्यू 3 फैट : प्यूफायुक्त तेलों का सेवन लाभकारी होता है इसमें मछली, सरसों का तेल, गेहूं, राजमा, लोबिया, मेथी दाना व सोयाबीन से मिलता है।

मैग्नीशियम : यह हमारे रक्त संचार को दुरुस्त रखता है इसमें साबुत अनाज दालों, पालक, गेहूं की ब्रैड आदि शामिल हैं। अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिए स्वयं का सक्रिय सहयोग आवश्यक है। दवा के स्थान पर उचित खानपान नियमित जीवन शैली उच्च रक्तचाप के उपचार में लाभप्रद है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): संतान की ओर से हर्ष के प्रसंग बनेंगे। समय को देखकर कार्य करना ज्यादा हितकर रहेगा। परिश्रम अधिक करना पड़ेगा तभी आप लाभ की आशा कर सकते ह। कार्य क्षेत्र में पदोन्नति के योग बनेंगे। आलस्य को त्याग। पुरुषार्थ का सहारा लें। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। शुभांक-3-6-9

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): कर्म बल पर आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक क्षेत्र में वर्तमान क्षमता को बढ़ायेगें। उपक्रम का विस्तार करने का प्रयास सफल होगा। अच्छी सफलताएं प्राप्त करेग। बुद्धि कौशल से चुनौतीपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से समय उपलब्धिकारक रहेगा। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-1-5-7

मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा): मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य कमजोर बना रहेगा। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते ह। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। श्रम अधिक करना पड सकता है। वरिष्ठजनों से मतभेद उभर सकते है। शुभांक-2-5-7

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): शनै:-शनै: स्थिति पक्ष की बनने लगेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होगी। अभिभावकों के प्रति उत्तरदायित्व निभाने होंग। शुभांक-4-6-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): विकास के लिए बनाई योजना सफल होगी। अच्छा हो कि आप अपने उद्देश्य को लेकर सचेत रहें। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य सौंपे जा सकते है जो कि अतिविश्वसनीय व्यक्तियों को ही दिये जाते हैं। कार्य सार्थक दिन है व्यर्थ न गंवाऐ। शुभांक-5-7-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): क्षमता से अधिक कार्य करने की नौबत आ सकती हैं। उत्तरदायित्व की अधिकता निजी जीवन में अपने ही ढंग की परेशानियां पैदा करेंगी। कारोबार की उन्नति के लिये एक से अधिक सीढ़ी चढ़कर लोंगो को आश्चर्य में डाल देंगे। बौद्धिक क्षेत्र में प्रतियोगिता जीतने का मौका मिलेगा। शुभांक-1-5-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): सुबह-सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह रहेगा। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्ययकारक स्थितियां पैदा होंगी। अल्प-परिश्रम से ही लाभ होगा। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। घरेलू बहुमूल्य वस्तुओं के क्रय का योग है। शुभांक-4-5-7

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): परामर्श व परिस्थिति सभी का सहयोग मिलेगा। अधिकारी वर्ग से आपकी निकटता बढ़ेगी। व्यावसायिक उपक्रम में उलटफेर की शुरूआत हो सकती हैं। स्थाई सम्पति के निर्माण, मरम्मत व पुर्नस्थापना पर व्यय भार बढ़ेगा। महत्वपूर्ण यात्राओं के संकेत हैं। चल-अचल सम्पति में वृद्धि होगी। शुभांक-3-5-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): कार्य सार्थक दिन है व्यर्थ न गंवाऐ। विश्वस्त लोगों के कहे अनुसार चलें। राजकीय कार्यों में सतर्कता बरतें। मान-सम्मान को ठेस लग सकती है। जोश से कम व होश में रहकर कार्य करें। नये आगंतुकों से लाभ होगा। चल-अचल सम्पति में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। शुभांक-5-7-9

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): पुरानी पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शुभांक-2-5-7

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): दाम्पत्य जीवन में तनाव का वातावरण बन सकता है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। आत्मचिंतन करें। पुराने मित्र से मिलन होगा। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। अपने अधीनस्थ लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शुभांक-6-8-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सबेरे निपटा लें। नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। शुभांक-3-5-7

काकुरो पहेली - 1967

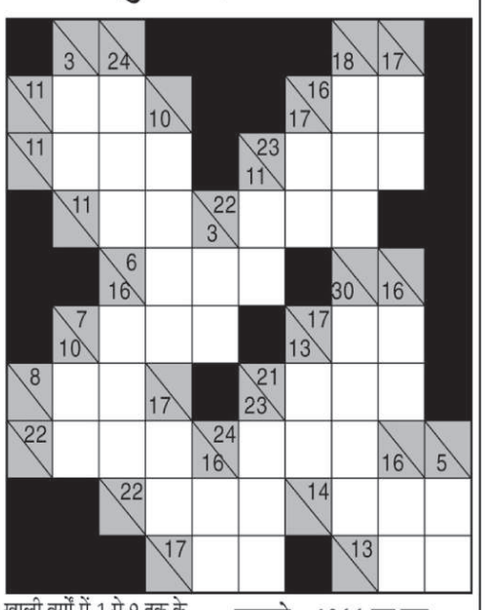

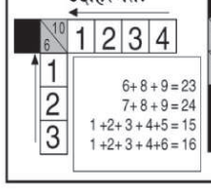

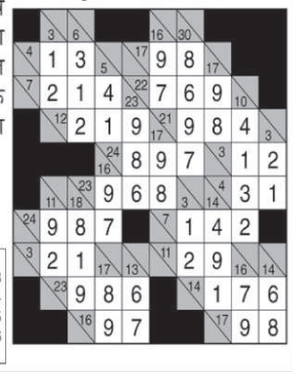

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

6+8+9=23
7+8+9=24
1+2+3+4+5=15
1+2+3+4+6=16

काकुरो - 1966 का हल

हंसी के फूव्वारें

एक बार एक सेठ बीमार पड़ गया. उसकी हालत मरने की-सी हो गई. पूरा परिवार उसके चारों ओर एकत्र था. सेठ ने अपनी पत्नी को बुलाकर पूछा-'बड़ा लड़का कहां है ?'

'यहीं है !'

'मंझला ?'

'यहीं है.'

'और छोटा ?'

'यहीं है.'

'तो फिर क्या दुकान बन्द पड़ी है ?' सेठ ने चारपाई से उठते हुए पूछा.

□ □ □

एक जहाज का कप्तान डेक से फिसल कर समुद्र में गिर गया. एक नाविक ने अपनी जान हथेली पर रखकर उसे बचा लिया.

'मैं तुम्हें क्या इनाम दूं !'कप्तान ने पूछा.

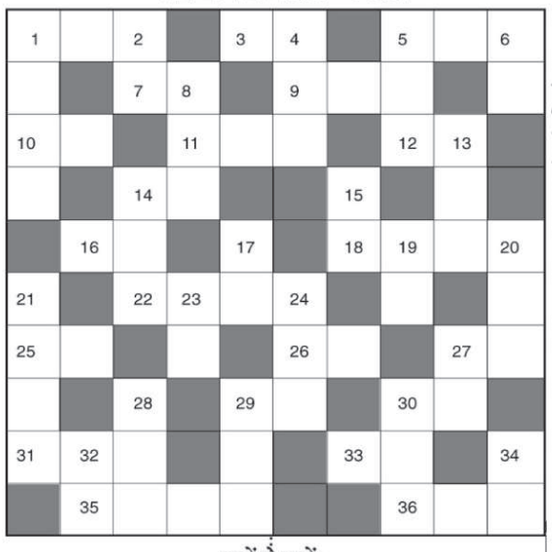

'श्रीमान !' नाविक हाथ जोड़ते हुए बोला-'सबसे अच्छा इनाम तो यह होगा कि आप इस घटना का जिक्र किसी से न करें. वरना बाकी नाविक मुझे उठाकर समुद्र में फेंक देंगे.'

□ □ □

जज, कैदी से- 'तुम्हें कल फांसी दी जाएगी, तुम्हारी कोई आखिरी इच्छा है?'

कैदी-'जी हाँ.'

जज-'क्या?'

कैदी-'जी मेरी जगह आप फांसी पर लटक जाइये!'

फिल्म वर्ग पहेली- 1967

बायें से दायें:-

१. अमिताभ, अमृता की 'मैं माटी का गुड्डा' गीत वाली फिल्म-३
३. 'मैं कुड़ी अनजानी' गीत वाली सनी, सुष्मिता की फिल्म-२
५. 'गवाह हैं चाँद तारे' गीतवाली फिल्म-३
७. 'धीरे धीरे आप मेरे दिल में' गीत वाली आमिर, जूही की फिल्म-२
९. धर्मेन्द्र, सुनीलदत्त, संजय, सनी, रवीना, दिव्या की बहु सितारा फिल्म-३
१०. 'कोयल सी तेरी बोली' गीत वाली फिल्म-२
११. 'ओ गुड़िया ओ बहना' गीत वाली संजयदत्त, फरहा की फिल्म-३
१२. 'फूल माँगूं ना' गीत वाली फिल्म-२
१४. 'आजा जाने जाँ' गीतवाली सुनील शेट्टी, सोमी अली की फिल्म-२
१६. 'दिल के टुकड़े टुकड़े' गीत वाली फिल्म-२
१८. 'इलाहाबाद में पैदा हुई' गीत वाली देव आनंद, हेमा की फिल्म-४
२२. जीतेंद्र, संजयदत्त, जूही की 'ढूंढ रही थी' गीत वाली फिल्म-४
२५. सनी वाली फिल्म 'जाल' में तब्बू के साथ दूसरी नायिका-२
२६. दिलीप, रेखा, ममता की फिल्म-२
२७. 'चाँदनी रूप की' गीत वाली संजय, सलमान, रवीना की फिल्म-२
२९. 'नशा ये प्यार का नशा है' गीत वाली फिल्म-२
३०. अल्ताफ रजा के गीत 'पीलो प्यार दी विस्की' वाली फिल्म-२
३१. सनी देओल, अमीषा की फिल्म-३
३३. 'राजा की आएगी बारात' गीत वाली राजकपूर, नर्गिस की फिल्म-२
३५. अमिताभ, परवीन की 'आदमी जो कहता है' गीत वाली फिल्म-४
३६. 'मधुबन में जो कन्हैया' गीत वाली फिल्म-३

ऊपर से नीचे:-

१. 'हय्या हू' गीत वाली गोविंदा, ऐश्वर्या की फिल्म-४
२. एलबम 'मैं भी मैडोना' का गायक ?-२
४. 'शहर की लड़की' गीत वाली फिल्म-३
५. नासिर खान, मीनाकुमारी की फिल्म-३
६. अमिताभ वाली 'याराना' की नायिका ?-२
८. 'कुर्बानी' में फिरोज की नायिका ?-३
१३. 'बंबई से रेल चली' गीत वाली फिल्म-३
१४. अनिल, जूही, करिश्मा की फिल्म-३
१५. अरविंद स्वामी, मधु की 'दिल है छोटा सा' गीत वाली फिल्म-२
१७. 'चोरी चोरी कोई आए' गीत वाली फारूख, पूनम की फिल्म-२
१९. 'एहसास' में सुनील शेट्टी की नायिका-२
२०. फिल्म 'मदर इंडिया' में शीर्षक भूमिका किसने की थी ?-३
२१. अनिल, मीनाक्षी की 'जिंदगी हर कदम' गीत वाली फिल्म-२,२
२३. गोविंदा, नीलम की 'मैं प्यार का पुजारी' गीत वाली फिल्म-२
२४. 'झूठे नैना बोले' गीत वाली फिल्म-३
२७. उमादेवी के गाये 'अफसाना लिख रही हूँ' गीत वाली फिल्म-२
२८. 'तितली उड़ी' गीत राजेंद्रकुमार की किस फिल्म का है-३
२९. जीतेंद्र, रणधीर, राकेश, रेखा की फिल्म-३
३०. 'ये दुनिया वाले पूछेंगे' गीतवाली फिल्म-३
३२. विवेक, दीया मिर्जा की फिल्म-२
३४. अमिताभ की 'खाइके पान' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 1866

सूडोकु -1967

		5			8			3
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6			7			1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
6			2			7		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -1966 का हल

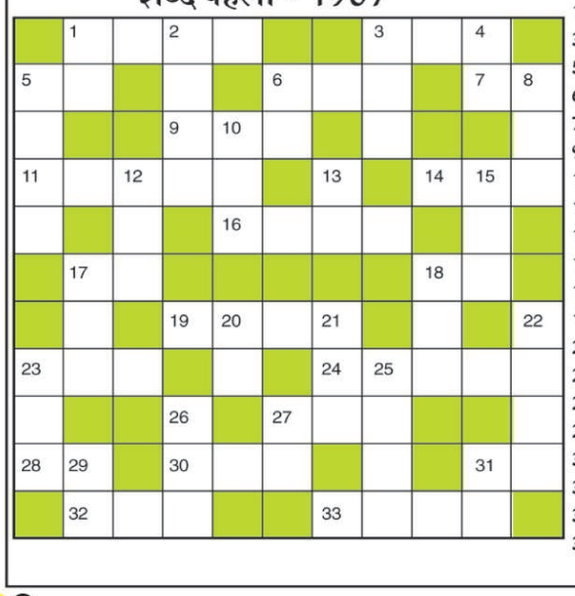

9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8

शब्द पहेली - 1967

बाएँ से दाएँ

1.मूर्ख,बुद्धिहीन-4
3.रुई की फसल-3
5.वंश,खानदान-2
6.आह,पीड़ा भरी ध्वनि-3
7.जी,इच्छा,चित्त-2
9.पहनना-3
11.दास,नौकर,सेवक-5
14.अग्नि,आग-3
16.चयनित,स्वीकृत-4
17.जाति,संप्रदाय-2
18.उस समय-2
19.आदत,व्यवहार-4
23.माला का मोती-3
24.लालन-पालन-5
27.पूर्णिमा-3
28.वश,अधीन-2
30.खबर देने वाला-3
31.खदान,माइन-2
32.आश्रय,पनाह-3
33.संपत्ति-4

ऊपर से नीचे

1.घोड़े के पांव में लगने वाला लोहे का टुकड़ा-2
2.धारा के बीच में,अधर में-2,2
3.आफत,आपदा-3
4.एक समान-2
5.गृहपति,चांसलर-4
6.दाना-2
8.प्रतिकृति,प्रतिरूप-3
10.रोकर धनराशि-3
12.प्रेम ,आसक्ति-3
13.नीर,जल-2
15.भाग्य,तकदीर-3
17.जंबुल,जांब-3
18.टेंशन,परेशानी-3
20.काया,बदन-2
21.उष्णता-3
22.नाश होने योग्य-4
23.साम्राज्ञी,रानी-3
25.रमण करने योग्य-4
26.अदा,चोंचला-3
27.पूड़ी,गोलगप्पा-2
29.पिता की बहन-2
31.उर्वरक,गाय के गोबर से बना पदार्थ जो खेत में डाला जाता है-2

शब्द पहेली - 1966 का हल

अखिल भारतीय प्रधान संगठन उ. प्र. प्रयागराज

समस्त क्षेत्र वासियों को गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

ग्राम पंचायतों के समग्र विकास एवं जनकल्याण में तत्पर

विकास खण्ड –कोरांव, प्रयागराज

सत्येन्द्र त्रिपाठी
प्रदेश उपाध्यक्ष
अखिल भारतीय प्रधान संगठन

दिलीप कुमार सोनी
प्रदेश संगठन मंत्री
प्रधान ग्राम पंचायत उल्दा कोरांव

सुरेश कुमार त्रिपाठी
जिलाध्यक्ष प्रयागराज
प्रधान ग्राम पंचायत चपरो, मेजा

अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे
मंत्री, प्रयागराज मण्डल
प्रधान ग्राम पंचायत अल्हवा, कोरांव

रामानुज यादव
प्रधान अध्यक्ष
प्रधान संगठन
कोरांव, प्रयागराज

लवकुश कुमार
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत जमुआ धूंस
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

डा. मुख्तार अहमद उर्फ लाला सिद्दीकी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत संसार पुर
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

कमला शंकर पाण्डेय
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत बरहुला कला
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

मो. यूसुफ खान
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत खीरी
प्रधान संगठन, कोरांव, प्रयागराज

मुरारी लाल मौर्य
प्रधान प्रतिनिधि
ग्राम पंचायत महुली
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

मो. हारून उर्फ आजाद खां
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत सेमरिहा
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

नन्हें सिंह
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत बड़ोखर
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

सुशीला देवी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत घूघा
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

बम भोले सिंह
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत भगेसर
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

श्रीमती सोना सिद्दीकी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत अमिलिया पाल
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

श्रीमती अशोक कुमारी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत बंसीपुर
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

प्रभाकर वर्मा
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत गड़िया मुरलीपुर
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

सद्दाम
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत पैंतिहा
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

राजेश कुमार त्रिपाठी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत छापर हरदरौन
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

शंकर दयाल त्रिपाठी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत बहरईचा
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

संगम लाल
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत सिरोखर
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

अंजू कुशवाहा
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत कपूरी बढैहिया
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

सीताराम यादव
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत अकबर शाहपुर
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

विवेक सिंह
प्रधान प्रतिनिधि
ग्राम पंचायत रामगढ़ डइया
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

श्याम सुन्दर मौर्य
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत राजापुर
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

अनंत प्रसाद गुप्ता
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत खजुरी कला
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

अर्जुन सिंह पटेल
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत हरदिहा
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

श्रीमती मालती देवी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत सिपउआ
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

विमल चन्द्र मौर्य
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत पियरी
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

शिव लाल कनौजिया
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत देवघाट
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

रमा शंकर केसरी
प्रधान प्रतिनिधि
ग्राम पंचायत खजुरी खुर्द
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

अभिषेक कुमार सिंह
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
वि.ख. कोरांव, प्रयागराज

आनंद मोहन सिंह
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

इंद्र बहादुर सिंह
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

सत्येन्द्र कुमार पाण्डेय
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

समरजीत कैथल
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

नजमुल हम्माद
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

अनीता सिंह पटेल
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज

विनीत पाठक
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
वि. ख. कोरांव, प्रयागराज